पालि-ग्रन्थमाला-15

अभिधम्मपिटके

धातुकथापालि

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)





पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)

Accredited by 'NAAC' with 'A' Grade

(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ-परिसरः

ग्रंथ के सन्दर्भ में

धातुकथापालि त्रिपिटक के अभिधम्मपिटक का ग्रन्थ है। अभिधम्मपिटक जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि इसमें धम्मों का विशेष विवेचन किया जाता है। भगवान् बुद्ध ने अनित्य दुःख अनात्म का उपदेश देते हुए इस शरीर की स्थिति पञ्चस्कन्धात्मक मानी थी। साथ ही स्कन्ध, धातु, आयतनों का विवेचन भी मिलता है। धातुकथा में इन तीनों का विशेष अध्ययन किया गया है। यहाँ स्कन्ध, आयतन और धातुओं का धर्मो के साथ सम्बन्ध दिखलाया गया है। इन धर्मों की संख्या उसकी मातिका के अनुसार 114 है। किस-किस स्कन्ध, आयतन या विभंग में कौन-कौन धर्म सम्मिलित हैं, (संग्रहीत है) असंग्रहीत हैं या संयुक्त- प्रयुक्त हैं इसी का विवेचन 14 अध्यायों में प्रश्नोत्तर ढंग से किया गया है।

यह हिन्दी अनुवाद सहित संस्कृतच्छाया प्रथम बार प्रकाशित हो रही है। इससे अध्येताओं को समझने में सुविधा होगी तथा छात्रों को भी लाभ होगा, निश्चय ही यह उपयोगी ग्रन्थ है।

ISBN : 978-81-949896-1-5
Price : 200.00

पालि-ग्रन्थमाला-15

अभिधम्मपिटके

धातुकथापालि

संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता

संरक्षकः

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री, कुलपतिः

संस्कृतच्छायाकारो हिन्दी-अनुवादकः सम्पादकश्च

डॉ. जयवन्त खण्डारे

पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)

NAAC द्वारा 'ए' श्रेण्यां प्रत्यायितः

(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ-परिसरः, विशालखण्डः-4, गोमतीनगरम्, लखनऊ (उ.प्र.)

पालि-ग्रन्थमाला-15

अभिधम्मपिटके धातुकथापालि

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

संस्कृतच्छायाकारो हिन्दी-अनुवादकः सम्पादकश्च- डॉ. जयवन्त खण्डारे

प्रकाशक : © प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ. प्र.)
दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rskslucknow@yahoo.com

ग्रन्थमाला सम्पादक : प्रो. विजयकुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

प्राप्ति स्थान :
1. प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमतीनगर, लखनऊ-226010
दूरभाष : 0522-2393748E-mail : rskslucknow@yahoo.com
2. दिल्ली मुख्यालय, बिक्री विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
56-57 इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
फोन- 28523949

ISBN :

मूल्य : रु. 200/-

प्रथम संस्करण : 2019

मुद्रक : गणपति प्रिंटर्स, कानपुर रोड, लखनऊ

Pāli-Granthamālā-15

Abhidhammapitake

DHĀTUKATHĀ-PĀLI

(With Sanskritacchāyā & Hindi Translation)

Patron

Prof. Parmeshwar Narayana Shastry
Vice-Chancellor

Sanskritacchāyākāra Hindi Translator & Editor

Dr. Jaywant Khandare

Pali Study Centre

Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
Accredited by NAAC with 'A' Grade
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus, Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)

Pali-Granthamālā-15

Abhidhammapitake **DHĀTUKATHĀ-PĀLI**

(With Sanskritacchāyā & Hindi Translation)

Sanskritacchāyākāra Hindi Translator & Editor - Dr. Jaywant Khandare

Publisher : © Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan,
Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rksklucknow@yahoo.com

General Editor : Prof. Vijay Kumar Jain
Dr. Gurucharan Singh Negi

Sales Counters : 1. Principal, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rksklucknow@yahoo.com
2. Delhi (H.Q.), The Sales Incharge
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058

ISBN :

Price : Rs. 200/-

First Edition : 2019

Printer : Ganpati Printers, Kanpur Road, Lucknow

सम्पादकीय

भगवान् बुद्ध के वचनों के रूप में त्रिपिटक जाना जाता है। साथ ही जब इसकी प्रामाणिकता पर विचार किया जाता है तो माना जाता है कि प्रथम-सङ्गीति में सर्वप्रथम धम्म एवं विनय का सङ्गायन किया गया था, जो सुत्तपिटक एवं विनयपिटक है। भगवान् बुद्ध के समय ही धम्म एवं विनय का सङ्कलन हो रहा था। इसका आधार है कि भिक्षुओं को धम्मधर एवं विनयधर कहा जाता था। आनन्द को सुत्तधर एवं उपालि को विनयधर कहा जाता था। साथ ही मातिकाधरों का भी उल्लेख मिलता है। इन मातिकाओं के आधार पर अभिधर्मपिटक का विकास हुआ, जो वर्तमान स्वरूप में तृतीय सङ्गीति के समय तक प्राप्त हुई थी। कथावत्थु तो स्पष्ट रूप से तृतीय सङ्गीति की कार्यवाही (प्रोसीडिंग) के रूप में जानी जाती है लेकिन बौद्धजगत् में थेरवादी परम्परा में उसे बुद्धवचन ही माना जाता है। अभिधम्म का भी मूलाधार बुद्धवचन ही है, क्योंकि इनका विवेचन बुद्ध के द्वारा सुत्तपिटक में भी देखा जा सकता है, थेरवाद में अभिधम्मपिटक के साथ अभिधम्म साहित्य की विशाल टीका परम्परा है जो अभिधम्म के विषयों का सूक्ष्म विश्लेषण करती है, अभिधम्म में दो शब्द है अभि+धम्म, अभि उपसर्ग विश्लेषण का सूचक है अर्थात् विशेष रूप से धम्म का विवेचन। इसमें बौद्ध मनोविज्ञान का भी अच्छा चित्रण मिलता है। अभिधम्म के सारांश रूप लोकप्रिय ग्रन्थ अभिधम्मत्थसंगहो में कहा गया है कि परमार्थ दृष्टि से चित्त, चैतसिक रूप एवं निब्बान का वर्णन किया जा रहा है। यहाँ पर चित्त को चार भूमियों- कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर एवं लोकोत्तर में बाँटते हुए पुनः कुशल, अकुशल अव्याकृत रूप में विभाजित किया गया है। अभिधम्मपिटक को समझने के लिए अभिधम्मत्थसंगहो को कुंजी के रूप में समझा जा सकता है। थेरवादियों का सम्पूर्ण साहित्य पालि में है। अभिधम्म की यह परम्परा सर्वास्तिवादी परम्परा में भी देखी जाती है।

- सर्वास्तिवादी परम्परा आचार्यों द्वारा रचित है जो उसके भी उपसम्प्रदायों को प्रतिनिधित्व करते थे। स्थविरवादी अभिधम्मपिटक के समान सर्वास्तिवादियों के अभिधम्म में भी सात ग्रन्थ हैं-

1. ज्ञानब्रह्मयानशास्त्र - आर्य कात्यायनी पुत्र
2. प्रकरण पाद - स्थविर वसुमित्र
3. विज्ञानकाय-पाद - स्थविर देव शर्मा
4. धर्मस्कन्ध-पाद - आर्य शारिपुत्र

5. प्रज्ञप्तिशास्त्र-पाद – आर्य मौद्गल्यायन
6. धातुकाय-पाद – पूर्ण (या वसुमित्र)
7. संगीति-पर्याय-पाद – महाकौष्ठिहल (या शारिपुत्र)

भरत सिंह उपाध्याय ने नाम साम्य के नजदीक मानते हुए दोनों परम्पराओं के ग्रन्थों को समतुल्य माना है। (देखिए पृ. 389 पालि साहित्य का इतिहास)

संस्कृत भाषा में निबद्ध आचार्य वसुबन्धु का अभिधर्मकोश विशाल एवं व्यवस्थित ग्रन्थ है। जिसमें यशोमित्र की टीका महत्त्वपूर्ण है जो सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक परम्परा का विभेद भी प्रकट करती है।

थेरीगाथा में भिक्षुणियाँ उद्गार व्यक्त करती हैं कि मुझे स्कन्ध, आयतन, धातुओं को उपदेश दिया। **सा मे धम्मदेसेसि खन्धायतन धातुयो।** यहाँ अनात्मवाद को समझाने के लिए इनका विवेचन प्राप्त होता है। अभिधम्म का आधार सुत्तन्त होने पर भी इसकी शैली की विभिन्नता है। यहाँ निप्परियाय देशना दी गई है। अर्थात् बिना उपमा, उदाहरण के समझाया गया है, जो विशेषकर देव-मनुष्यों के लिए दिया गया उपदेश है, सामान्य जनता के लिए नहीं, परम्परा मानती है कि त्रायंत्रिंशलोक में इसका उपदेश दिया गया था। (भरतसिंह उपाध्याय 384)

अभिधर्म की एक विशेषता परिप्रश्नात्मक (पञ्हपरिपुच्छक) प्रणाली है। प्रश्नोत्तर के रूप में विषय को समझाया गया है। **'तद्धिहि प्रणिपातेव परिप्रश्नेन सेवया'**। अट्ठकथा में अभिधम्म के उदय के स्रोत के सन्दर्भ में कहा गया है कि बोधि को प्राप्त कराने वाली श्रद्धा है। **अयं अभिधम्मो नाम केन पभाविहो**? उत्तर है **'अभिनीहारसद्धाय'**।

'अभिधम्मपिटक' की विशेषता यह भी है कि यहाँ बुद्ध के मौलिक सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। बल्कि बुद्ध मन्तव्यों को खोलने के लिए अभिधम्मपिटक अध्ययन आवश्यक माना गया है। भरतसिंह उपाध्याय ने माना है कि 'बौद्ध धर्म के महान मनोवैज्ञानिक अध्ययन सम्बन्धी ज्ञान को उसकी पूरी विभूति के साथ देखना है तो अभिधम्म की वीथियों में भ्रमण करना ही होगा।'

भगवान् बुद्ध की शिक्षाओं का सार (विशेषकर पालि साहित्य) अनित्य दु:ख अनात्म में प्राप्त होता है। जब भगवान् अनित्यता का विशेषण करते थे तो पञ्चस्कन्ध, धातु एवं आयतनों का वर्णन करते थे। संयुत्तनिकाय में इनका विस्तृत विवरण मिलता है। जैसा कि सुत्तपिटक में भगवान् बुद्ध के मौलिक उपदेश हैं वह तथारूप में प्राप्त होते हैं। वहीं अभिधम्म में दार्शनिक शैली में विश्लेषणात्मक पद्धति में मिलते हैं।

बौद्धदर्शन में आत्मा स्वीकृत नहीं है, वहाँ शरीर की स्थिति पञ्चस्कन्ध, आयतन एवं धातु रूप में उनका वर्णन प्राप्त होता है। पञ्चस्कन्ध पाँच हैं- रूपक्कन्धों, वेदनाक्खन्धो,

सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो एवं विञ्ञाणक्खन्धो; आयतन छः हैं- चक्खायतनं, सोतायतनं, घानायतनं, जिह्वायतनं, कायायतनं एवं मनायतनं; धातुएं 18 हैं- चक्खुधातु, सोतधातु, घानधातु, जिह्वाधातु, कायधातु, मनोधातु; रूपधातु, सद्धधातु, गन्धधातु, रसधातु, फोट्ठब्बधातु, धम्मधातु, चक्खुविञ्ञाणधातु, सोतविञ्ञाणधातु, घानविञ्ञाणधातु, जिह्वाविञ्ञाणधातु, कायविञ्ञाणधातु, मनोविञ्ञाणधातु। प्रस्तुत धातुकथा में धातु स्कन्ध एवं आयतन तीनों का विश्लेषण किया गया है, अभिधर्म पद्धति से इनका विश्लेषण किया गया है।

पालि अध्ययन केन्द्र में अध्येता पालि ग्रन्थों का संस्कृतच्छाया के साथ हिन्दी अनुवाद करते हैं। पहले संयुत्तनिकाय, सुत्तनिपात, थेरगाथा, थेरीगाथा, अपदान, थूपवंस, बुद्धवंस चारिया पिटक, खुद्दकपाठ आदि 15 ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ, जो विद्वत्जगत् द्वारा अत्यन्त सराहा गया। देखा गया कि सुत्तपिटक एवं विनयपिटक पर अनुवाद उपलब्ध होने के कारण इन पर खूब शोध कार्य हो रहा है तथा पठन-पाठन में प्रचलित हैं। लेकिन अभिधम्मपिटक के ग्रन्थों का न ही अनुवाद हुआ है न ही इन पर ज्यादा शोधकार्य। अतः अभिधम्मपिटक के ग्रन्थों का अनुवाद एवं संस्कृतच्छाया का कार्य प्रारम्भ किया गया है। इसी क्रम में धातुकथा का हिन्दी अनुवाद एवं संस्कृतच्छाया डॉ. जयवन्त खण्डारे द्वारा सम्पन्न की गई जिसमें कार्यशाला के माध्यम से संशोधन का कार्य करने में प्रो. उमाशंकर व्यास, प्रो. प्रद्युम्न दुबे, प्रो. संघसेन सिंह, प्रो. धरमचन्द्र जैन, प्रो. रामनक्षत्र प्रसाद, प्रो. विमलेन्द्र कुमार प्रभृत विद्वानों का महनीय योगदान रहा है।

पालि अध्ययन केन्द्र को आगे बढ़ाने में संस्थान के कुलपति प्रो. पी. एन. शस्त्री, कुलसचिव प्रो. एस. सुब्रह्मण्य शर्मा तथा सभी अधिकारियों का सहयोग बना रहता है जिसके फलस्वरूप केन्द्र फल-फूल रहा है। केन्द्र के प्रभारी डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी जी भी पूरे मनोयोग से लगे रहते हैं। टाइपिंग कार्य में श्री विकास जैन सिद्धहस्त हैं तथा सभी केन्द्र के अध्येता भी परस्पर में एक दूसरे का सहयोग करते हैं। तथा पूरा संस्थान परिवार केन्द्र को अपना स्नेह पूर्ण सहयोग देता है। अतः सभी के प्रति आभार एवं आशा है कि भविष्य में भी इसी प्रकार बुद्धवचनों का प्रचार व प्रसार होता रहेगा।

परिशिष्ट एक में धम्मसंगणि में प्राप्त 122 धम्मों का वर्गीकरण दिया जा रहा है, जो धातुकथा को समझनें में सहायक है। इसी तरह ग्रन्थ के सन्दर्भ में श्री भरत सिंह उपाध्याय का मन्तव्य साभार उद्धृत करते हुए दिया जा रहा है। धातुकथा का अंग्रेजी अनुवाद पी.टी.एस. से प्रकाशित है, अध्येताओं को शंका के स्थान पर देखना चाहिए।

।।भवतु सब्ब मंगलं।।

- प्रो. विजय कुमार जैन

कृतज्ञता-ज्ञापन

धातुकथापालि ग्रन्थ की संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद अन्य भाषाओं के विद्वानों के लिये भी उपयोगी हो इस दृष्टि से प्रकाशित किया जा रहा है। यह कार्य अपने आप में बड़ा कठिन एवं विशाल है। यह ग्रन्थ "राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली" के लखनऊ परिसर स्थित 'पालि अध्ययन केन्द्र' द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इस केन्द्र द्वारा प्रकाशित पालि ग्रन्थ माला का १५वां भाग यह खण्ड है। इसके संस्कृतच्छाया एवं सम्पादन करने का सौभाग्य मुझे मिला। इस अवसर पर अपने गुरुजनों, मित्रों एवं स्नेहीजनों के प्रति आभार के शब्द बरबस उमड़ पड़ते हैं। इस दिशा में मैं सर्वप्रथम 'नालन्दा महाविहार, नालन्दा' एवं भिक्षु धर्मरक्षित जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ क्योंकि इस संस्था एवं विद्वानों द्वारा प्रकाशित पालि संस्करण का मैंने भरपूर उपयोग प्रस्तुत ग्रन्थ में किया है। 'विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी' के Online Tipitak CD के बिना यह कार्य असम्भव सा था। सर रिज़ डेविड्स के अंग्रेजी अनुवादों के बिना यह कार्य सार्थक नहीं होता।

मैं अपने गुरुवर श्रद्धेय प्रो. बालचन्द्र खांडेकर तथा प्रो. मालती बोदेले-साखरे मैडम को नमन करता हूँ, जो सतत मेरा मनोबल बढ़ाते रहते हैं। इस पालि त्रिपिटक प्रकाशन परियोजना के प्रेरणास्रोत पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। संस्थान के वर्तमान कुलपति प्रो. पी.एन. शास्त्री की कृपा का परिणाम है कि इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। संस्थान के लखनऊ परिसर के प्राचार्य-सर्वदर्शन, जैन एवं बौद्धदर्शन संकायाध्यक्ष प्रो. विजयकुमार जैन जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके निर्देशन में यह कार्य सम्पन्न हो रहा है। बौद्धदर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. अवधेश कुमार चौबे, सहायकाचार्य डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी ने अभूतपूर्व सहयोग देकर समस्याओं का निराकरण किया एतदर्थ उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इस ग्रंथ को संशोधन कर त्रुटि रहित करने में जिन गुरुजनों ने सहयोग किया उन आदरणीय प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, प्रो. उमाशंकर व्यास, प्रो. धर्मचन्द्र जैन, प्रो. संघसेन सिंह, प्रो. रामसागर मिश्र एवं डॉ. श्रीमती राका जैन का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

टंकण एवं प्रूफ संशोधन में सहायक के लिए मैं श्री विकास जैन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। पालि अध्ययन केन्द्र के हमारे साथी अध्येता डॉ. मोहन मिश्र, डॉ. राहुल अमृतराज, डॉ. वेदव्यास पाण्डेय, डॉ. प्रिंस कुमार जैन, डॉ. प्रदीप शर्मा लुईटेल, डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, डॉ. प्रियंका दुबे, डॉ. पत्रिका जैन, डॉ. अतुल श्रीवास्तव एवं डॉ. घनश्याम पाल आदि मित्रों का सहयोग रहा। इन सभी के प्रति स्नेहभाव व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने पिताजी श्री. वासुदेव खंडारे, माताजी श्रीमती शकुंतला, भाई श्रीराम, विजय, देवेन्द्र, सिद्धार्थ एवं बहन विजयाश्री एवं श्री. सुनील ढोके, श्री. जगदीश अवसरमोल तथा उनके परिवार का स्नेह भरा आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी पत्नी श्रीमती सुशीला एवं बेटी सलोनी के प्रति हार्दिक स्नेह व्यक्त करता हूँ। इनके सहयोग के बिना तो कार्य शुरु भी नहीं होता। इस ग्रन्थ को पढ़ने वाले भावी पाठकगणों के प्रति मंगलकामना करता हूँ कि उन्होंने सर्वोत्तम कृति पाई है। ग्रन्थ पढ़ने पर ऐसा विश्वास होगा।

- डॉ. जयवंत खण्डारे

।। भवतु सब्ब मंगलं।।

ग्रन्थ के सन्दर्भ में

विभंग के १८ विभंगों में से स्कन्ध, आयतन और धातु, इन प्रथम तीन विभंगों को चुन कर उनका विशेष अध्ययन धातुकथा में किया गया है। स्कन्ध, आयतन और धातु, यही धातुकथा के विषय हैं। अतः उसका पूरा नाम ही, जैसा महास्थविर ज्ञानातिलोक ने कहा है, 'खन्ध-आयतन-धातु-कथा' होना चाहिये। धातुकथा के विषय-प्रतिपादन की एक विशेष शैली यह है कि यहाँ स्कन्ध, आयतन और धातुओं का सम्बन्ध धर्मों के साथ दिखलाया गया है। इन धर्मों की संख्या उसकी मातिका के अनुसार ११४ है, जो इस प्रकार है, ५ स्कन्ध, १२ आयतन, १८ धातुएँ, ४ सत्य, २२ इन्द्रिय, प्रतीत्यसमुत्पाद, ४ स्मृति-प्रस्थान, ४ सम्यक् प्रधान, ४ ऋद्धिपाद, ४ ध्यान, ४ अपरिमाण, ५ इन्द्रिय, ५ बल, ७ बोध्यंग, ८ आर्य-मार्ग के अंग (आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग), स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, अधिमोक्ष और मनसिकार । किस-किस स्कन्ध, आयतन या विभंग में कौन-कौन धर्म सम्मिलित (संगहित), अ-सम्मिलित (असंगहित), संयुक्त (सम्प्रयुक्त) या वियुक्त (विप्पयुत्त) आदि हैं, इसी का विवेचन १४ अध्यायों में प्रश्नोत्तर ढंग से किया गया है, जिसकी रूप-रेखा इस प्रकार है-

१. सम्मिलन और अ-सम्मिलन (संगहो-असंगहो) : इस अध्याय में यह दिखलाया गया है कि कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में कौन-कौन से धर्म सम्मिलित हैं या अ-सम्मिलित हैं।

२. सम्मिलित और अ-सम्मिलित (संगहितेन असंगहितं): यहाँ यह दिखलाया गया है कि कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में वे धर्म असम्मिलित हैं, जो कुछ अन्य धर्म या धर्मों के साथ समान स्कन्ध में सम्मिलित हैं, किन्तु समान धातु और आयतन में सम्मिलित नहीं हैं।

३. अ-सम्मिलित और सम्मिलित (असंगहितेन संगहित) : कितने स्कन्ध,आयतन और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित हैं, जो कुछ अन्य धर्म या धर्मों के साथ समान स्कन्ध में सम्मिलित नहीं हैं, किन्तु समान आयतन और समान धातु में सम्मिलित हैं।

४. सम्मिलित और सम्मिलित (संगहितेन संगहितं): कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित हैं, जो कुछ अन्य धर्म या धर्मों के साथ उन समान स्कन्ध, आयतन और धातुओं में सम्मिलित हैं जो पुनः अन्य धर्म या धर्मों के साथ उनमें (स्कन्ध, आयतन और धातुओं में) सम्मिलित हैं।

---

*ई० आर० गुणरत्न द्वारा अट्ठकथा-सहित पालि टेक्स्ट सोसायटी के लिए सम्पादित । उक्त सोसायटी द्वारा सन् १८९२ में रोमन लिपि में प्रकाशित । इस ग्रन्थ के सिंहली, बर्मी एवं स्यामी संस्करण उपलब्ध हैं। देवनागरी लिपि में भिक्षु जगदीश काश्यप द्वारा पुग्गलपञ्ञत्ति के सहित एक जिल्द में सम्पादित एवं बिहार राज्य के पालि प्रकाशन मण्डल द्वारा सन् १९६० में प्रकाशित।

५. अ-सम्मिलित और अ-सम्मिलित (असंगहितेन असंगहितं):कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में वे धर्म अ-सम्मिलित हैं जो कुछ अन्य धर्म या धर्मों के साथ उन्हीं स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असम्मिलित हैं जो पुनः अन्य धर्म या धर्मों के साथ उनमें (स्कन्ध, आयतन और धातुओं में) असम्मिलित हैं। यह अध्याय चौथे अध्याय का ठीक विपरीत है।

६. संयोग और वियोग (सम्पयोगो विपयोगो): कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं के साथ धर्म संयुक्त हैं, या कितने के साथ वे वियुक्त हैं।

७. संयुक्त से वियुक्त (सम्पयुत्तेन विप्पयुत्तं): कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं, जो उन धर्मों से, जो अन्य धर्मों के साथ संयुक्त हैं, वियुक्त हैं।

८. वियुक्त से संयुक्त (विप्पयुत्तेन सम्पयुत्तं): कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं, जो उन धर्मों से, जो कुछ अन्य धर्मों से वियुक्त हैं, संयुक्त है।

९. संयुक्त से संयुक्त (सम्पयुत्तेन सम्पयुत्तं): कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे ध र्म संयुक्त है, जो उन धर्मों से, जो अन्य धर्मों से संयुक्त हैं, संयुक्त है।

१०. वियुक्त से वियुक्त (विप्पयुत्तेन विप्पयुत्तं): कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं, जो उन धर्मों से, जो अन्य धर्मों से वियुक्त हैं, वियुक्त हैं।

११. सम्मिलित से संयुक्त और वियुक्त (संगहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं) : (अ) कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं जो समान स्कन्ध में सम्मिलित नहीं, किन्तु समान आयतन और धातु में कुछ अन्य धर्मों के साथ सम्मिलित हैं, (आ) कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं जो समान स्कन्ध में सम्मिलित नहीं, किन्तु समान आयतन और धातु में कुछ अन्य धर्मों के साथ सम्मिलित हैं।

१२. संयुक्त से सम्मिलित और असम्मिलित (सम्पयुत्तेन संगहितं असंगहितं) : (अ) कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित हैं जो कुछ अन्य धर्मों से संयुक्त हैं, (आ) कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में वे धर्म असम्मिलित हैं जो कुछ अन्य धर्मों से संयुक्त हैं।

१३. असम्मिलित से संयुक्त और वियुक्त (असंगहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्त): (अ) कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं, जो किन्हीं अन्य धर्मों के साथ समान स्कन्ध, आयतन और धातुओं में सम्मिलित नहीं हैं, (आ) कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं , जो किन्हीं अन्य धर्मों के साथ समान स्कन्ध, आयतन और धातुओं में सम्मिलित नहीं हैं। वियुक्त से सम्मिलित और असम्मिलित (विप्पयुत्तेन संगहितं असंगहित) : कितने स्कन्ध, आयतन और धर्मों में वे धर्म सम्मिलित हैं, जो कुछ अन्य धर्मों से वियुक्त हैं, (आ) कितने स्कन्ध,, आयतन और धर्मों में वे धर्म - सम्मिलित नहीं हैं, जो कुछ अन्य धर्मों से वियुक्त हैं।

उपर्युक्त अध्यायों के विषय और शैली को अच्छी तरह हृदयंगम करने के लिए प्रत्येक में से एक-एक दो-दो प्रश्नोत्तरों को भी दे देना उपयुक्त होगा। अतः क्रमशः-

(१) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में रूप-स्कन्ध संम्मिलित हैं ? १ स्कन्ध- ११ आयतन और ११ धातुओं में रूप-स्कन्ध सम्मिलित है।

(आ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में रूप-स्कन्ध सम्मिलित नहीं है ? चार स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में रूप-स्कन्ध सम्मिलित नहीं है।

(इ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वेदना-स्कन्ध सम्मिलित है? एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में वेदना स्कन्ध सम्मिलित है।

(ई) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वेदना-स्कन्ध सम्मिलित नहीं है? चार स्कन्ध, ग्यारह आयतन और १७ धातुओं में वेदना-स्कन्ध सम्मिलित नहीं है।

(२) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित नहीं हैं, जो चक्षु-आयतन.....स्पृष्टव्यायतन और चक्षु-धातु.... स्पृष्टव्य-धातु धर्मों के साथ समान स्कन्ध में सम्मिलित हैं, किन्तु समान धातु और आयतन में सम्मिलित नहीं है।

चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में वे सम्मिलित नहीं हैं।

3. (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित नहीं है, जो वेदनास्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध, संस्कार-स्कन्ध, समुदय-सत्य, मार्ग-सत्य धर्मों के साथ समान स्कन्ध में सम्मिलित नहीं है, किन्तु समान आयतन और समान धातु में सम्मिलित हैं?

तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में वे सम्मिलित हैं, निर्वाण को छोड़कर !

(४) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित हैं, जो समुदय-सत्य, मार्ग-सत्य धर्मों के साथ उन समान स्कन्ध, आयतन और धातुओं में सम्मिलित हैं जो पुनः समुदय-सत्य, मार्ग-सत्य के साथ उनमें (स्कन्ध, आयतन और धातुओं में) सम्मिलित हैं?

एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में वे सम्मिलित हैं ।

(५) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित नहीं हैं जो अन्य धर्मों के साथ उन्हीं स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असम्मिलित हैं जो पुनः उन्हीं धर्मों के साथ उनमें (स्कन्ध, आयतन और धातुओं में) असम्मिलित हैं ?

एक स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में वे अ-सम्मिलित है।

(६) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं के साथ रूप-स्कन्ध संयुक्त है?

किसी के साथ नहीं (क्योंकि स्वयं अपने साथ वह संयुक्त हो नहीं सकता और अन्य धर्म मानसिक हैं)।

(आ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं के साथ रूप-स्कन्ध संयुक्त नहीं है ?

चार स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं के साथ वह संयुक्त नहीं है।

(७) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं, जो उन धर्मों से, जो अन्य धर्मों के साथ संयुक्त हैं ? वियुक्त हैं ?

चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से वे वियुक्त हैं, अंशत: एक आयतन और एक धातु से भी।

(८) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं, जो उन धर्मों से जो रूप-स्कन्ध से वियुक्त हैं, संयुक्त हैं ? '

'किसी से नहीं।'

(६) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं, जो उन धर्मों से जो वेदना-स्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध, संस्कार-स्कन्ध से संयुक्त हैं, संयुक्त हैं ?

तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से वे संयुक्त हैं, अंशत: एक - आयतन और एक धातु से भी।

(१०) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं, जो उन धर्मों से जो रूप-स्कन्ध से वियुक्त हैं, वियुक्त हैं ?

चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से वे वियुक्त हैं, अंशत: एक आयतन और एक धातु से भी।

११) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं - जो समान स्कन्ध में सम्मिलित नहीं हैं, किन्तु समुदय-सत्य और मार्ग-सत्य के साथ समान आयतन और धातुओं में सम्मिलित हैं ?

तीन स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं से वे संयुक्त हैं, अंशत: एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु से भी।

(आ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं जो समान स्कन्ध में सम्मिलित नहीं, किन्तु समुदय-सत्य और मार्ग-सत्य के साथ समान आयतन और समान धातुओं में सम्मिलित हैं ? एक स्कन्ध, दस आयतन और दस धातुओं से वे वियुक्त हैं, अंशत: एक आयतन और एक धातु से भी।

(१२) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित है जो वेदना-स्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध और संस्कार-स्कन्ध से संयुक्त हैं ?

तीन स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में वे सम्मिलित हैं।

(आ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित नही हैं, जो वेदना-स्कन्ध से संयुक्त है?

दो स्कन्धों, दस आयतनों और दस धातुओं में वे सम्मिलित नहीं हैं।

(१३) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म संयुक्त हैं, जो रूप-स्कन्ध के साथ समान स्कन्ध, आयतन और धातुओं में सम्मिलित नहीं हैं।

तीन स्कन्धों और अंशतः एक आयतन और एक धातु से वे संयुक्त है।

(आ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म वियुक्त हैं, जो रूपस्कन्ध के साथ समान स्कन्ध, आयतन और धातुओं में सम्मिलित नहीं हैं ?

एक स्कन्ध, दस आयतन और दस धातुओं से वे वियुक्त हैं, अंशतः एक आयतन और एक धातु से भी।

(१४) (अ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित हैं, जो रूप-स्कन्ध से वियुक्त हैं ?

चार स्कन्धों, दो आयतनों और धातुओं में वे सम्मिलित हैं।

(आ) कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म सम्मिलित नहीं हैं, जो रूप स्कन्ध से वियुक्त हैं ?

एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में वे सम्मिलित नहीं हैं।

- भरतसिंह उपाध्याय

पालि साहित्य का इतिहास से साभार

विसयक्कमो

धातुकथापालि

सूची

उद्देसो	पिट्ठिङ्का
१. नयमातिका	१
२. अब्भन्तरमातिका	१
३. नयमुखमातिका	२
४. लक्खणमातिका	२
५. बाहिरमातिका	२
निद्देसो	
१. पठमनयो, १. सङ्गहो असङ्गहो	
(१) पञ्चक्खन्धा	(२-७)
एकमूलकं	३
दुकमूलकं	४
तिकमूलकं	५
चतुक्कमूलकं	७
पञ्चकमूलकं	७
(२) द्वादसायतनानि	(७ -९)
एकमूलकं	८
दुकमूलकं	९
द्वादसकं	९
(३) अट्ठारस धातुयो	(९ -१२)
एकमूलकं	१०
दुकमूलकं	१२
अट्ठारसकं	१२
(४) चत्तारि सच्चानि	(१२-१४)
एकमूलकं	१३
दुकमूलकं	१३
तिकमूलकं	१४
चतुक्कं	१४
(५) बावीसतिन्द्रियानि	(१५-१८)
एकमूलकं	१६
दुकमूलकं	१७

	पिट्ठिङ्का
(६) पटिच्चसमुप्पादादि	१८
(७) धम्मसङ्गणि-मातिका	(२१-४६)
(२) दुतियनयो, २. सङ्गहितेन असङ्गहितं	४७
(३) ततियनयो, ३. असङ्गहितेन सङ्गहितं	५०
(४) चतुत्थनयो, ४. सङ्गहितेन सङ्गहितं	५५
(५) पञ्चमनयो,	
५. असङ्गहितेन असङ्गहितं	५८
(६) छट्ठनयो, ६. सम्पयोगो विप्पयोगो	७३
(१) पञ्चक्खन्धा	७३
(२) द्वादसायतनानि	७४
(३) अट्ठारस धातुयो	७४
(४) चत्तारि सच्चानि इच्चादि	७५
(५) धम्मसङ्गणि - मातिका	(८१-९४)
(७) सत्तमनयो, ७. सम्पयुत्तेन विप्पयुत्तं	९५
(८) अट्ठमनयो, ८. विप्पयुत्तेन सम्पयुत्तं	९९
(९) नवमनयो, ९. सम्पयुत्तेन सम्पयुत्तं	१००
(१०) दसमनयो,	
१०. विप्पयुत्तेन विप्पयुत्तं	११०
(११) एकादसमनयो,	
११. सङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं	१२७
(१२) द्वादसमनयो,	
१२. सम्पयुत्तेन सङ्गहित्तं असङ्गहितं	१३२
(१३) तेरसमनयो,	
१३. असङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं	१४२
(१४) चुद्दसमनयो,	
१४. विप्पयुत्तेन सङ्गहित्तं असङ्गहितं	१४९
परिशिष्ट	१७१

॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

अभिधम्मपिटके

धातुकथापाळि

उद्देसो

१. नयमातिका

१. (१) सङ्गहो असङ्गहो (२) सङ्गहितेन असङ्गहितं (३) असङ्गहितेन सङ्गहितं (४) सङ्गहितेन सङ्गहितं (५) असङ्गहितेन असङ्गहितं (६) सम्पयोगो विप्पयोगो (७) सम्पयुत्तेन विप्पयुत्तं (८) विप्पयुत्तेन सम्पयुत्तं (९) सम्पयुत्तेन सम्पयुत्तं (१०) विप्पयुत्तेन विप्पयुत्तं (११) सङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं (१२) सम्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं (१३) असङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं (१४) विप्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं।

२. अब्भन्तरमातिका

२. (१) पञ्चक्खन्धा (२) द्वादसायतनानि (३) अट्ठारस धातुयो (४) चत्तारि सच्चानि (५) बावीसतिन्द्रियानि (६) पटिच्चसमुप्पादो (७) चत्तारो सतिपट्ठाना (८) चत्तारो सम्मप्पधाना (९) चत्तारो इद्धिपादा (१०) चत्तारि झानानि (११) चतस्सो अप्पमञ्ञायो (१२) पञ्चिन्द्रियानि (१३) पञ्च बलानि (१४) सत्त बोज्झङ्गा (१५) अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो (१६) फस्सो वेदना सञ्ञा चेतना चित्तं अधिमोक्खो मनसिकारो।

(संस्कृतच्छाया)- ॥ नमस्तस्मै भगवतो अर्हतो सम्यक् सम्बुद्धाय॥

अभिधर्मपिटके धातुकथापालि – उद्देशः

१. नयमातृका १. (१) सङ्ग्रहोऽसङ्ग्रहः (२) सङ्ग्रहीतेन असङ्ग्रहीतम् (३) असङ्ग्रहीतेन सङ्ग्रहीतम् (४) सङ्ग्रहीतेन सङ्ग्रहीतम् (५) असङ्ग्रहीतेन असङ्ग्रहीतम् (६) सम्प्रयोगो विप्रयोगः (७) सम्प्रयुक्तेन विप्रयुक्तम् (८) विप्रयुक्तेन सम्प्रयुक्तम् (९) सम्प्रयुक्तेन सम्प्रयुक्तम् (१०) विप्रयुक्तेन विप्रयुक्तम् (११) सङ्ग्रहीतेन सम्प्रयुक्तं विप्रयुक्तम् (१२) सम्प्रयुक्तेन सङ्ग्रहीतम् असङ्ग्रहीतम् (१३) असङ्ग्रहीतेन सम्प्रयुक्तं विप्रयुक्तम् (१४) विप्रयुक्तेन सङ्ग्रहीतम् असङ्ग्रहीतम्।

२. अब्भ्यन्तरमातृका - २. (१) पञ्चस्कन्धाः (२) द्वादशायतनानि (३) अष्टादश धातवः (४) चत्वारि सत्यानि (५) द्वाविंशतीन्द्रियानि (६) प्रतीत्यसमुत्पादः (७) चत्वारः स्मृतिप्रस्थानाः (८) चत्वारः सम्यक्प्रधानाः (९) चत्वारः ऋद्धिपादाः (१०) चत्वारि ध्यानानि (११) चतस्रः अप्रमाण्याः (१२) पञ्चेन्द्रियानि (१३) पञ्च बलानि (१४) सप्त बोध्यङ्गानि (१५) आर्य अष्टाङ्गिकः मार्गः (१६) स्पर्शो वेदना संज्ञा चेतना चित्तं अधिमोक्षो मनसिकारः।

(हिन्दी)- अभिधर्मपिटक - धातुकथापालि – उद्देशः १. नयमातिका= पद्धतियों की सूची- १. (१) सङ्ग्रह असङ्ग्रह (२) सङ्ग्रहीत से असङ्ग्रहीत (३) असङ्ग्रहीत से सङ्ग्रहीत (४) सङ्ग्रहीत से सङ्ग्रहीत (५) असङ्ग्रहीत से असङ्ग्रहीत (६) सम्प्रयोग विप्रयोग (७) सम्प्रयुक्त से विप्रयुक्त (८) विप्रयुक्त से सम्प्रयुक्त (९) सम्प्रयुक्त से सम्प्रयुक्त (१०) विप्रयुक्त से विप्रयुक्त (११) सङ्ग्रहीत से सम्प्रयुक्त विप्रयुक्त (१२) सम्प्रयुक्त से सङ्ग्रहीत असङ्ग्रहीत (१३) असङ्ग्रहीत से सम्प्रयुक्त विप्रयुक्त (१४) विप्रयुक्त से सङ्ग्रहीत असङ्ग्रहीत।

२. आन्तरिकमातिका= विवेचन की सूची- २. (१) पञ्चस्कन्ध (२) बारह आयतन (३) अठारह धातु (४) चार सत्य (५) बाईस इन्द्रियाँ (६) प्रतीत्यसमुत्पाद (७) चार स्मृतिप्रस्थान (८) चार सम्यक्प्रधान (९) चार ऋद्धिपाद (१०) चार ध्यान (११) चार अप्रमाण (१२) पाँच इन्द्रियाँ (१३) पाँच बल (१४) सात बोध्यङ्ग (१५) आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग (१६) स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, अधिमोक्ष एवं मनसिकार।

३. नयमुखमातिका ३. तीहि सङ्गहो, तीहि असङ्गहो, चतूहि सम्पयोगो, चतूहि विप्पयोगो।

४. लक्खणमातिका ४. सभागो, विसभागो।

५. बाहिरमातिका ५. सब्बापि धम्मसङ्गणी धातुकथाय मातिकाति।

१. पठमनयो

१. सङ्गहासङ्गहपदनिद्देसो

१. खन्धो

६. रूपक्खन्धो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितो? रूपक्खन्धो एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहितो।

७. वेदनाक्खन्धो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितो? वेदनाक्खन्धो एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितो।

(सं.)- ३. नयमुखमातृका ३. त्रिभि: सङ्ग्रह:, त्रिभि: असङ्ग्रह:, चतुर्भि: सम्प्रयोग:, चतुर्भि: विप्रयोग:।

४. लक्षणमातृका ४. सभाग:, विसभाग:।

५. बाह्यमातृका ५. सर्वा अपि धम्मसङ्गणीधातुकथयो: मातृका इति।

१. प्रथमनयः १. सङ्ग्रहासङ्ग्रहपदनिर्द्देशः १. स्कन्धः

६. रूपस्कन्ध: कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:? रूपस्कन्ध: एकेन स्कन्धेन एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:। कतिभि: असङ्ग्रहीत:? चतुर्भि: स्कन्धै: एकेनायतनेनसप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीत:।

७. वेदनास्कन्ध: कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:? वेदनास्कन्ध: एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीत:। कतिभि असङ्ग्रहीत:? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीत:।

(हिन्दी)- ३. पद्धतियों के प्रकार या शीर्षक- ३. तीन के साथ सङ्ग्रह, तीन के साथ असङ्ग्रह, चार के साथ सम्प्रयोग, चार के साथ विप्रयोग ।

४. लक्षणों की सूची - ४. सभाग, विसभाग।

५. बाह्य विषयों की सूची - ५. धम्मसङ्गणी एवं धातुकथा की समस्त मातृकाएँ बाहरी मातृकाएँ है।

१. प्रथमनय- १. सङ्ग्रह एवं असङ्ग्रहपदनिर्द्देश १. स्कन्ध-

६. रूप- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों (और) धातुओं में संग्रहीत (सम्मिलित, वर्गीकृत) है? रूप- स्कन्ध एक स्कन्ध, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितने (स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में रूप- स्कन्ध) संग्रहीत नहीं है? चार स्कन्धों, एक आयतनों और सात धातुओं में रूप- स्कन्ध असंग्रहीत हैं।

७. वेदना- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत (सम्मिलित, वर्गीकृत) है? वेदना स्कन्ध एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। यह कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में असंग्रहीत (असम्मिलित, अवर्गीकृत) हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८. सञ्ञाक्खन्धो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितो? सञ्ञाक्खन्धो एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितो।

९. सङ्खारक्खन्धो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितो? सङ्खारक्खन्धो एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितो।

१०. विञ्ञाणक्खन्धो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितो? विञ्ञाणक्खन्धो एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहितो। (एकमूलकं।)

११. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि

(संस्कृतच्छाया)- ८. संज्ञास्कन्ध: कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:?
संज्ञास्कन्ध: एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीत:। कतिभि:असङ्ग्रहीत:? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीत:।

९. संस्कारस्कन्ध: कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:? संस्कारस्कन्ध: एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीत:। कतिभि: असङ्ग्रहीत:? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीत:।

१०. विज्ञानस्कन्ध: कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:? विज्ञानस्कन्ध: एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:। कतिभि: असङ्ग्रहीत:? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीत:। (एकमूलकम्।)

११. रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीत:? रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकादशभि: आयतनै: एकादशभि:

(हिन्दी)- ८. संज्ञा- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत है? संज्ञा स्कन्ध एक स्कन्ध में, एक आयतन में तथा एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९. संस्कार- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत है? यह एक स्कन्ध में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। यह कितनों में असंग्रहीत हैं? यह चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०. विज्ञान- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत है? विज्ञान स्कन्ध एक स्कन्ध, एक आयतन तथा सात धातुओं में संग्रहीत हैं। यह कितनों में असंग्रहीत हैं? यह चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११. रूप- स्कन्ध और वेदना- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत है? रूप स्कन्ध और वेदना- स्कन्ध दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा ग्यारह

धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१२. रूपक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च...पे०... द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१३. रूपक्खन्धो च सङ्खारक्खन्धो च...पे०... द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१४. रूपक्खन्धो च विञ्ञाणक्खन्धो च...पे०... द्वीहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि, न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (दुकमूलकं।)

१५. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि

(संस्कृतच्छाया)- धातुभि: सङ्ग्रहीतौ। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? त्रिभि: स्कन्धै: एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतौ।

१२. रूपस्कन्ध: च संज्ञास्कन्ध: च...पे०... द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतौ। कतिभि: असङ्ग्रहीतौ? त्रिभि: स्कन्धै: एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतौ।

१३. रूपस्कन्ध: च संस्कारस्कन्ध: च ...पे०... द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतौ। कतिभि: असङ्ग्रहीतौ? त्रिभि: स्कन्धै: एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतौ।

१४. रूपस्कन्ध: च विज्ञानस्कन्ध: च...पे०... द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां द्वादशभिः आयतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतौ। कतिभि: असङ्ग्रहीतौ? त्रिभि: स्कन्धै:, न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् धातुभि: सङ्ग्रहीतौ। (दुकमूलकम्।)

१५. रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च संज्ञास्कन्ध: च कतिभि: स्कन्धै:

(हिन्दी)- धातुओं में संग्रहीत हैं। यह कितनों में असंग्रहीत हैं? यह तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२. रूप- स्कन्ध और संज्ञा- स्कन्ध .... पे०... दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३. रूप- स्कन्ध और संस्कार - स्कन्ध .... पे०... दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। किसमें असंग्रहीत हैं? यह तीन स्कन्धों , एक आयतन तथा सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४. रूप- स्कन्ध और विज्ञान - स्कन्ध .... पे०... दो स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। किसमें संग्रहीत नहीं हैं? यह तीन स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

कतिहि धातूहि सङ्गहिता? रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च तीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१६. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सङ्खारक्खन्धो च...पे॰... तीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१७. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च विञ्ञाणक्खन्धो च...पे॰... तीहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि, न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (तिकमूलकं।)

१८. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च सङ्खारक्खन्धो च कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च

(संस्कृतच्छाया)- कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः? रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च संज्ञास्कन्ध: च त्रिभि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीता: । कतिभि: असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१६. रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च संस्कारस्कन्ध: च ...पे॰... त्रिभि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः । कतिभि: असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१७. रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च विज्ञानस्कन्ध: च...पे॰... त्रिभि: स्कन्धै: द्वादशभि: आयतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः । कतिभि: असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम्, न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१८. रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च संज्ञास्कन्ध: च संस्कारस्कन्ध: च कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः? रूपस्कन्ध: च वेदनास्कन्ध: च संज्ञास्कन्ध: च

(हिन्दी)- १५. रूप- स्कन्ध , वेदना- स्कन्ध और संज्ञा- स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत है? यह रूप स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध और संज्ञा- स्कन्ध तीन स्कन्धों में ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। किसमें असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६. रूप- स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध और संस्कार - स्कन्ध .... पे०... तीन स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दोन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१७. रूपस्कन्ध, वेदनास्कन्ध और विज्ञान- स्कन्ध कितने स्कन्धों.... पे०... तीन स्कन्धों, बारह आयतनों, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, न किन्ही भी आयतनों एवं किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत नहीं हैं।

१८. रूप- स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध, संज्ञा - स्कन्ध और संस्कार - स्कन्ध कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत है? रूप स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध, संज्ञा - स्कन्ध और

सङ्खारक्खन्धो च चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१९. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च विञ्ञाणक्खन्धो च...पे०... चतूहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन, न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (चतुक्कमूलकं।)

२०. रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च सङ्खारक्खन्धो च विञ्ञाणक्खन्धो च कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? रूपक्खन्धो च वेदनाक्खन्धो च सञ्ञाक्खन्धो च सङ्खारक्खन्धो च विञ्ञाणक्खन्धो च पञ्चहि खन्धेहि द्वादसायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

२१. पञ्चक्खन्धा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? पञ्चक्खन्धा

(संस्कृतच्छाया)- संस्कारस्कन्धः च चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९. रूपस्कन्धः च वेदनास्कन्धः च संज्ञास्कन्धः च विज्ञानस्कन्धः च...पे०... चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशभिः आयतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन, न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०. रूपस्कन्धः च वेदनास्कन्धः च संज्ञास्कन्धः च संस्कारस्कन्धः च विज्ञानस्कन्धः च कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? रूपस्कन्धः च वेदनास्कन्धः च संज्ञास्कन्धः च संस्कारस्कन्धः च विज्ञानस्कन्धः च पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशभिः आयतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१. पञ्चस्कन्धाः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? पञ्चस्कन्धा

(हिन्दी)- संस्कार - स्कन्ध चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। किसमें असंग्रहीत हैं? यह एक स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१९. रूप- स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध, संज्ञा - स्कन्ध और विज्ञान- स्कन्ध स्कन्धों.... पे०... चार स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध तथा न किन्ही आयतनों एवं न किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०. रूप- स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध, संज्ञा – स्कन्ध, संस्कार - स्कन्ध और विज्ञान- स्कन्ध कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? रूप- स्कन्ध, वेदना- स्कन्ध, संज्ञा – स्कन्ध, संस्कार - स्कन्ध और विज्ञान- स्कन्ध पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१. पाँच स्कन्ध कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? पाँच स्कन्धों

२. आयतनं

पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (पञ्चकं।)

२२. चक्खायतनं कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितं? चक्खायतनं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

२३. सोतायतनं ... घानायतनं... जिव्हायतनं... कायायतनं... रूपायतनं... सद्दायतनं... गन्धायतनं... रसायतनं... फोट्ठब्बायतनं...पे॰... एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं

२४. मनायतनं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहितं।

(संस्कृतच्छाया)- पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशभि: आयतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

२. आयतनं २२. चक्षु: आयतनं कतमै: स्कन्धै: कतमै: आयतनै: कतमै: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्? चक्षु: आयतनम् एकेन स्कन्धेन एकेन आयतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

२३. श्रोत्रायतनं ... घ्राणायतनं... जिह्वायतनं... कायायतनं... रूपायतनं... शब्दायतनं... गन्धायतनं...रसायतनं... स्प्रष्टव्यायतनं...पे॰... एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

२४. मन आयतनं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: एकादशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

(हिन्दी)- बारह आयतनों में अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२. चक्षु आयतन कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? चक्षु आयतन एक स्कन्ध, एक आयतन, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२३. श्रोत्रायतन... घ्राणायतन... जिह्वायतन... कायायतन... रूपायतन... शब्दायतन... गन्धायतन ... रसायतन... स्पर्शायतन... पे०... एक स्कन्ध में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों एवं सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२४. मन आयतन एक स्कन्ध में, एक आयतन में, सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२५. धम्मायतनं असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं। (एकमूलकं।)

२६. चक्खायतनञ्च सोतायतनञ्च एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

२७. चक्खायतनञ्च घानायतनञ्च... चक्खायतनञ्च जिव्हायतनञ्च... चक्खायतनञ्च कायायतनञ्च... चक्खायतनञ्च रूपायतनञ्च... चक्खायतनञ्च सद्दायतनञ्च... चक्खायतनञ्च गन्धायतनञ्च... चक्खायतनञ्च रसायतनञ्च... चक्खायतनञ्च फोट्ठब्बायतनञ्च एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

२८. चक्खायतनञ्च मनायतनञ्च द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता।

(संस्कृतच्छाया)- २५. धर्मायतनम् असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा चतुर्भि: स्कन्धै: एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? एकेन स्कन्धेन एकादभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

२६. चक्षु: आयतनञ्च स्रोत्रायतनञ्च एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतौ। कतिभि: असङ्ग्रहीता:? चतुर्भि: स्कन्धै: दशभि: आयतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीता:।

२७. चक्षु: आयतनञ्च घ्राणायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च जिह्वायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च कायायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च रूपायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च शब्दायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च गन्धायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च रसायतनञ्च... चक्षु: आयतनञ्च स्प्रष्टव्यायतनञ्च एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीता:। कतिभि: असङ्ग्रहीता:? चतुर्भि: स्कन्धै: दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीता:।

२८. चक्षु: आयतनञ्च मन आयतनञ्च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतौ।

(हिन्दी)- २५. धर्म आयतन असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों में, एक आयतन में तथा एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२६. चक्षु आयतन और श्रोत्रायतन एक स्कन्ध में, दो आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, दस आयतनों में, सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२७. चक्षु आयतन और घ्राणायतन... चक्षु आयतन और जिह्वायतन... चक्षु आयतन और कायायतन... चक्षु आयतन और रूपायतन... चक्षु आयतन और शब्दायतन... चक्षु आयतन और गन्धायतन... चक्षु आयतन और रसायतन... चक्षु आयतन और स्पर्शायतन एक स्कन्ध में, दो आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, दस आयतनों में, सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२८. चक्षु आयतन और मनायतन दो स्कन्धों में, दो आयतनों में, आठ धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२९. चक्खायतनञ्च धम्मायतनञ्च असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता। (दुकमूलकं।)

३०. द्वादसायतनानि कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? द्वादसायतनानि असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (द्वादसकं।)

३. धातु

३१. चक्खुधातु कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? चक्खुधातु एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(संस्कृतच्छाया)- कतिभि: असङ्ग्रहीतौ? त्रिभि: स्कन्धै: दशभि: आयतनै: दशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतौ

२९. चक्षु: आयतनञ्च धर्मायतनञ्च असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा चतुर्भि: स्कन्धै: द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्याम् सङ्ग्रहीतौ। कतिभि: असङ्ग्रहीतौ? एकेन स्कन्धेन दशायतनभि: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतौ।

३०. द्वादशायतनानि कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः? द्वादशायतनानि असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धभि: द्वादशभि: आयतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि। कतिभि: असङ्ग्रहीतानि? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीतानि।

३. धातु: ३१. चक्षुधातु: कतिभि: स्कन्धै: कतिभिः आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः? चक्षुर्धातु एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्गहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों में, दस आयतनों में, दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२९. चक्षु आयतन और धर्म आयतन असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों में, दो आयतनों में, एक दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों, सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३०. बारह आयतन कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? बारह आयतन असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में स्थित कर पाँच स्कंधों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? यह न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३. धातु - ३१. चक्षु धातु कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? चक्षु धातु एक स्कन्ध में, एक आयतन में, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३२. सोतधातु... घानधातु... जिव्हाधातु... कायधातु... रूपधातु... सद्दधातु... गन्धधातु... रसधातु... फोट्ठब्बधातु... चक्खुविञ्ञाणधातु... सोतविञ्ञाणधातु... घानविञ्ञाणधातु... जिव्हाविञ्ञाणधातु... कायविञ्ञाणधातु... मनोधातु... मनोविञ्ञाणधातु एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

३३. धम्मधातु असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(एकमूलकं।)

३४. चक्खुधातु च सोतधातु च एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

३५. चक्खुधातु च घानधातु च...चक्खुधातु च जिव्हाधातु च...चक्खुधातु च कायधातु च...

(संस्कृतच्छाया)- ३२. श्रोत्रधातु... घ्राणधातु... जिह्वाधातु... कायधातु... रूपधातु... शब्दधातु... गन्धधातु... रसधातु... स्प्रष्टव्यधातु... चक्षुर्विज्ञानधातु... श्रोत्रविज्ञानधातु... घ्राणविज्ञानधातु... जिह्वाविज्ञानधातु... कायविज्ञानधातु... मनोधातु... मनोविज्ञानधातु एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्गहिताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

३३. धर्मधातु असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः एकेन आयतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

३४. चक्षुर्धातुश्च श्रोत्रधातु च एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतौ। कतिभिः असङ्ग्रहीतौ? चतुर्भिः स्कन्धभिः दशायतनभिः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतौ।

३५. चक्षुर्धातुश्च घ्राणधातुश्च... चक्षुर्धातुश्च जिह्वाधातुश्च... चक्षुर्धातुश्च कायधातुश्च...

(हिन्दी) - ३२. श्रोत्रधातु... घ्राणधातु... जिह्वाधातु... कायधातु... रूपधातु... शब्दधातु... गन्धधातु... रसधातु... स्प्रष्टव्यधातु... चक्षुविज्ञानधातु..... श्रोत्रविज्ञानधातु... घ्राणविज्ञानधातु... जिह्वाविज्ञानधातु... कायविज्ञानधातु... मनोधातु.....मनोविज्ञानधातु एक स्कन्ध, एक आयतन तथा एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३३. धर्मधातु असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर शेष धर्म धातु चार स्कन्धों में, एक आयतन में, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, ग्यारह धातुओं तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३४. चक्षुधातु और श्रोत्रधातु एक स्कन्ध में, दो आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, दस आयतनों तथा सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३५. चक्षुधातु और घ्राणधातु ... चक्षुधातु और जिह्वाधातु ... चक्षुधातु और कायधातु ...

चक्खुधातु च रूपधातु च... चक्खुधातु च सद्दधातु च... चक्खुधातु च गन्धधातु च... चक्खुधातु च रसधातु च... चक्खुधातु च फोट्ठब्बधातु च एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

३६. चक्खुधातु च चक्खुविञ्ञाणधातु च द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

३७. चक्खुधातु च सोतविञ्ञाणधातु च... चक्खुधातु च घानविञ्ञाणधातु च... चक्खुधातु च जिव्हाविञ्ञाणधातु च... चक्खुधातु च कायविञ्ञाणधातु च... चक्खुधातु च मनोधातु च... चक्खुधातु च मनोविञ्ञाणधातु च द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

३८. चक्खुधातु च धम्मधातु च असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता।

(संस्कृतच्छाया)- चक्षुर्धातुः च रूपर्धातुः च... चक्षुर्धातुः च शब्दधातुः च... चक्षुर्धातुः च गन्धधातुः च... चक्षुर्धातुः च रसधातुः च... चक्षुर्धातुः च स्प्रष्टव्यधातुः च एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

३६. चक्षुर्धातुः च चक्षुर्विज्ञानधातुः च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतौ। कतिभिः असङ्ग्रहीतौ? त्रिभिः स्कन्धैः दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतौ।

३७. चक्षुर्धातुः च श्रोत्रविज्ञानधातुः च... चक्षुर्धातुः च घ्राणविज्ञानधातुः च... चक्षुर्धातुः च जिह्वाविज्ञानधातुः च... चक्षुर्धातुः च कायविज्ञानधातुः च... चक्षुर्धातुः च मनोधातुः च... चक्षुर्धातुः च मनोविज्ञानधातुः च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? त्रिभिः स्कन्धैः दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

३८. चक्षुर्धातुः च धर्मधातुः च असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतौ।

(हिन्दी) - चक्षुधातु और रूपधातु ... चक्षुधातु और शब्दधातु ... चक्षुधातु और गन्धधातु ... चक्षुधातु और रसधातु ... चक्षुधातु और स्प्रष्टव्य धातु एक स्कन्ध, दो आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, दस आयतनों तथा सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३६. चक्षुधातु और चक्षु विज्ञानधातु दो स्कन्धों, दो आयतनों तथा दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, दस आयतनों तथा सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३७. चक्षुधातु और श्रोत्रविज्ञानधातु.... चक्षुधातु और घ्राणविज्ञानधातु .... चक्षुधातु और जिह्वाविज्ञानधातु ... चक्षुधातु और कायविज्ञानधातु ... चक्षुधातु और मनधातु ... चक्षुधातु और मनोविज्ञानधातु दो स्कन्धों, दो आयतनों तथा दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, दस आयतनों तथा सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३८. चक्षुधातु और धर्मधातु असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों, दो आयतनों तथा दो धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता। (दुकमूलकं।)

३९. अट्ठारस धातुयो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? अट्ठारस धातुयो असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (अट्ठारसकं।)

४. सच्चं

४०. दुक्खसच्चं कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितं? दुक्खसच्चं पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहितं।

४१. समुदयसच्चं ... मग्गसच्चं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

४२. निरोधसच्चं न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं।

(सं.)- कतिभि: असङ्ग्रहीतौ? एकेन स्कन्धेन दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतौ।

३९. अष्टादश धातव: कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः? अष्टादश धातव: असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

४. सत्यम् **४०**. दु:खसत्यं कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्? दु:खसत्यं पञ्चै: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

४१. समुदयसत्यम् ... मार्गसत्यं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

४२. निरोधसत्यं न कैश्चित् स्कन्धै: एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्।

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों तथा सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

३९. अठारह धातु कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत हैं? अठारह धातु असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह धातुओं तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों तथा न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४०. दु:खसत्य कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? दु:खसत्य पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों तथा न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४१. समुदयसत्य..... मार्गसत्य एक स्कन्ध, एक आयतन तथा एक धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४२. निरोधसत्य न किन्ही स्कन्धों , एक आयतन तथा एक धातु में सग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहितं? पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

(एकमूलकं।)

४३. दुक्खसच्चं च समुदयसच्चं च पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४४. दुक्खसच्चं च मग्गसच्चं च पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४५. दुक्खसच्चं च निरोधसच्चं च असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (दुकमूलकं।)

४६. दुक्खसच्चं च समुदयसच्चं च मग्गसच्चं च पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता।

(सं.)- कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? पञ्चभि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

४३. दु:खसत्यञ्च समुदयसत्यञ्च पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीते।

४४. दु:खसत्यञ्च मार्गसत्यञ्च पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीते।

४५. दु:खसत्यञ्च निरोधसत्यञ्च असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीते।

४६. दु:खसत्यञ्च समुदयसत्यञ्च मार्गसत्यञ्च पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि।

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? पाँच स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४३. दु:खसत्य और समुदयसत्य पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों तथा न किन्हीं धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४४. दु:खसत्य और मार्गसत्य पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों तथा न किन्हीं धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४५. दु:खसत्य और निरोधसत्य असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों तथा न किन्हीं धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४६. दु:खसत्य, समुदयसत्य और मार्गसत्य पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४७. दुक्खसच्चं च समुदयसच्चं च निरोधसच्चं च असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता। (तिकमूलकं।)

४८. दुक्खसच्चं च समुदयसच्चं च मग्गसच्चं च निरोधसच्चं च असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४९. चत्तारि सच्चानि कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितानि? चत्तारि सच्चानि असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहितानि। कतिहि असङ्गहितानि? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहितानि। (चतुक्कं।) **(सं.)-** कतिभि: असङ्ग्रहीतानि? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीतानि।

४७. दु:खसत्यञ्च समुदयसत्यञ्च निरोधसत्यञ्च असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि। कतिभि: असङ्ग्रहीतानि? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीतानि।

४८. दु:खसत्यञ्च समुदयसत्यञ्च मार्गसत्यञ्च निरोधसत्यञ्च असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि। कतिभि: असङ्ग्रहीतानि? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीतानि।

४९. चत्वारि सत्यानि कतिभि: स्कन्धै: कतिभि आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि? चत्वारि सत्यानि असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि। कतिभि: असङ्ग्रहीतानि? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीतानि।

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों तथा न किन्हीं धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४७. दु:खसत्य, समुदयसत्य और निरोधसत्य असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों तथा न किन्हीं धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४८. दु:खसत्य, समुदयसत्य, मार्गसत्य और निरोधसत्य असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किसी स्कन्ध में, न किन्ही आयतनों में, न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४९. चारसत्य कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? चारसत्य असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों में तथा अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों तथा न किन्हीं धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५. इन्द्रियं

५०. चक्खुन्द्रियं कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितं? चक्खुन्द्रियं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

५१. सोतिन्द्रियं... घानिन्द्रियं... जिव्हिन्द्रियं... कायिन्द्रियं... इत्थिन्द्रियं ... पुरिसिन्द्रियं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

५२. मनिन्द्रियं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहितं।

५३. जीवितिन्द्रियं द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? तीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

५४. सुखिन्द्रियं ... दुक्खिन्द्रियं... सोमनस्सिन्द्रियं... दोमनस्सिन्द्रियं... उपेक्खिन्द्रियं...

(सं.)- ५. इन्द्रियं ५०. चक्षुरिन्द्रियं कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्? चक्षुरिन्द्रियं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

५१. श्रोत्रेन्द्रियं... घ्राणेन्द्रियं... जिह्वेन्द्रियं... कायेन्द्रियं... स्त्रीन्द्रियं ... पुरुषेन्द्रियं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

५२. मन इन्द्रियं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: एकादशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

५३. जीवितेन्द्रियं द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? त्रिभि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

५४. सुखेन्द्रियं ... दु:खेन्द्रियं... सौमनस्येन्द्रियं... दौर्मनस्येन्द्रियं... उपेक्षेन्द्रियं...

(हिन्दी)- ५०. चक्षु इन्द्रिय कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत है? चक्षु इन्द्रिय एक स्कन्ध, एक आयतनों तथा एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५१. श्रोतइन्द्रिय... घ्राणइन्द्रिय... जिह्वाइन्द्रिय... कायइन्द्रिय... स्त्रीइन्द्रिय... पुरुषइन्द्रिय एक स्कन्ध में, एक आयतन में, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५२. मनेन्द्रिय एक स्कन्ध, एक आयतन तथा सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५३. जीवितेन्द्रिय दो स्कन्धों, एक आयतन तथा एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, ग्यारह आयतनों तथा सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५४. सुखेन्द्रिय ... दु:खेन्द्रिय... सौमनस्येन्द्रिय... दौर्मनस्येन्द्रिय... उपेक्षेन्द्रिय...

सद्धिन्द्रियं... वीरियिन्द्रियं... सतिन्द्रियं... समाधिन्द्रियं... पञ्ञिन्द्रियं... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं... अञ्ञिन्द्रियं... अञ्ञाताविन्द्रियं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं। (एकमूलकं।)

५५. चक्खुन्द्रियं च सोतिन्द्रियं च एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५६. चक्खुन्द्रियं च घानिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च जिव्हिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च कायिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च इत्थिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च पुरिसिन्द्रियं च एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५७. चक्खुन्द्रियं च मनिन्द्रियं च द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता।

(सं.)- श्रद्धेन्द्रियं... वीर्येन्द्रियं... स्मृतीन्द्रियं... समाधीन्द्रियं... प्रज्ञेन्द्रियं... अनज्ञातं ज्ञास्यामीतीन्द्रियं ... आज्ञेन्द्रियं... आज्ञातावीन्द्रियं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना संग्रहीतम्। कतिभि असंग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असंग्रहीतम्।

५५. चक्षुरिन्द्रियश्च श्रोत्रेन्द्रियश्च एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां संग्रहीते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? चतुर्भि: स्कन्धै: दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीते।

५६. चक्षुरिन्द्रियञ्च घ्राणेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च जिह्वेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च कायेन्द्रियञ्च ... चक्षुरिन्द्रियञ्च स्त्रीन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च पुरुषेन्द्रियञ्च एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां असंग्रहिते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? चतुर्भि: स्कन्धै: दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असंग्रहिते।

५७. चक्षुरिन्द्रियञ्च मन इन्द्रियञ्च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां अष्टभि: धातुभि: सङ्ग्रहीते।

(हिन्दी)- श्रद्धेन्द्रिय... वीर्येन्द्रिय... स्मृतीन्द्रिय... समाधीन्द्रिय... प्रज्ञेन्द्रिय... अनज्ञात ज्ञास्यामी (किसी अज्ञात धर्म को जानने हेतु का संकल्प लेने वाली इन्द्रिय) इन्द्रिय... आज्ञेन्द्रिय (अर्हत अवस्था के ज्ञान के द्वारा प्राप्त इन्द्रिय) ... आज्ञातावीन्द्रिय (सम्यक् ज्ञान प्राप्त अर्हत की इन्द्रिय) एक स्कन्ध, एक आयतनों और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५५. चक्षु इन्द्रिय और श्रोत्रेन्द्रिय से एक स्कन्ध, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? वे चार स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५६. चक्षु इन्द्रिय और घ्राण इन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और जिह्वा इन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और काया इन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और स्त्रीइन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और पुरुष इन्द्रिय एक स्कन्ध, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५७. चक्षु इन्द्रिय और मनेन्द्रिय दो स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

५८. चक्खुन्द्रियं च जीवितिन्द्रियं च द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५९. चक्खुन्द्रियं च सुखिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च दुक्खिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च सोमनस्सिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च दोमनस्सिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च उपेक्खिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च सद्धिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च वीरियिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च सतिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च समाधिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च पञ्ञिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च अञ्ञिन्द्रियं च... चक्खुन्द्रियं च अञ्ञाताविन्द्रियं च द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता। (दुकमूलकं।)

६०. बावीसतिन्द्रियानि कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहितानि?

(सं.)- कतिभि: असङ्ग्रहीते? त्रिभि: स्कन्धै: दशायतनै: दशभि: धातुभि: असंग्रहिते।

५८. चक्षुरिन्द्रियञ्च जीवितेन्द्रियञ्च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? त्रिभि: स्कन्धै: दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीते।

५९. चक्षुरिन्द्रियञ्च सुखेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च दु:खेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च सौमनस्येन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च दौर्मनस्येन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च उपेक्षेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च श्रद्धेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च वीर्येन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च स्मृतीन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च समाधीन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च प्रज्ञेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च अनज्ञातं ज्ञास्यामीतीन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च आज्ञेन्द्रियञ्च... चक्षुरिन्द्रियञ्च आज्ञातावीन्द्रियञ्च द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभि: सङ्ग्रहीते। कतिभि: असङ्ग्रहीते? त्रिभि: स्कन्धै: दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतः।

६०. द्वाविंशति इन्द्रियाणि कतिभि: स्कन्धै: कतिभि: आयतनै: कतिभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि?

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५८. चक्षु इन्द्रिय और जीवित इन्द्रिय दो स्कन्ध, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५९. चक्षुइन्द्रिय और सुख इन्द्रिय ... चक्षुइन्द्रिय और दु:खइन्द्रिय... चक्षुइन्द्रिय और सौमनस्येन्द्रिय... चक्षुइन्द्रिय और दौर्मनस्येन्द्रिय... चक्षुइन्द्रिय और उपेक्षाइन्द्रिय... चक्षुइन्द्रिय और श्रद्धाइन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और वीर्येन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और स्मृतिइन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और समाधिइन्द्रिय... चक्षुइन्द्रिय और प्रज्ञाइन्द्रिय... चक्षुइन्द्रिय और अनज्ञातं ज्ञास्यामी इन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और आज्ञेन्द्रिय... चक्षु इन्द्रिय और अज्ञातावीन्द्रिय दो स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६०. बाइस इन्द्रियाँ कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत हैं?

बावीसतिन्द्रियानि चतूहि खन्धेहि सत्तहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहितानि। कतिहि असङ्गहितानि? एकेन खन्धेन पञ्चहायतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहितानि।

६. पटिच्चसमुप्पादादि

६१. अविज्जा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

६२. अविज्जापच्चया सङ्खारा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

६३. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहितं।

६४. विञ्ञाणपच्चया नामरूपं चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहितं।

(सं.)- द्वाविंशति इन्द्रियाणि चतुर्भि: स्कन्धै: सप्त आयतनानि त्रयोदशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतानि। कतिभि: असङ्ग्रहीतानि? एकेन स्कन्धेन पञ्चायतनै: पञ्चभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतानि।

६. प्रतीत्यसमुत्पादादि ६१. अविद्या एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीता। कतिभि: असङ्ग्रहीता चतुर्भि: स्कन्धभि: एकादशभि: आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीता।

६२. अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारा एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादश आयतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

६३. संस्कारप्रत्ययात् विज्ञानं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: एकादशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

६४. विज्ञानप्रत्ययाद् नामरूपं चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीतम्। कतिभि: असङ्ग्रहीतम्? एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीतम्।

(हिन्दी)- बाइस इन्द्रियों, चार स्कन्धों, सात आयतनों और तेरह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, पाँच आयतनों और पाँच धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६१. अविद्या एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६२. अविद्याप्रत्यय (अविद्या के कारण) से संस्कार एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६३. संस्कार प्रत्यय से विज्ञान एक स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६४. विज्ञान प्रत्यय से नामरूप चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्धों, एक आयतनों और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६५. नामरूपपच्चया सळायतनं द्वीहि खन्धेहि छहायतनेहि द्वादसहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? तीहि खन्धेहि छहायतनेहि छहि धातूहि असङ्गहितं।

६६. सळायतनपच्चया फस्सो... फस्सपच्चया वेदना... वेदनापच्चया तण्हा... तण्हापच्चया उपादानं... कम्मभवो [उपादानपच्चया कम्मभवो (सी॰ स्या॰)] एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितो।

६७. उपपत्तिभवो ... कामभवो... सञ्ञाभवो... पञ्चवोकारभवो पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहितो।

६८. रूपभवो पञ्चहि खन्धेहि पञ्चहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? न केहिचि खन्धेहि सत्तहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहितो।

(सं.)- ६५. नामरूपप्रत्ययात् षडायतनं द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां षडायतनैः द्वादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीतम्। कतिभिः असङ्ग्रहीतम्? त्रिभिः स्कन्धैः षडायतनैः षड्भिः धातुभिः असङ्ग्रहीतम्।

६६. षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शः... स्पर्शप्रत्ययाद् वेदना... वेदनाप्रत्ययात् तृष्णा ... तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानं... कर्मभवः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतः।

६७. उपपत्तिभवः ... कामभवः... संज्ञाभवः... पञ्चविकारभवः पञ्चभिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? न कैश्चित् स्कन्धैः एकादशायतनैः एकेन धातुना असङ्ग्रहीतः।

६८. रूपभवः पञ्चभिः स्कन्धैः पञ्चायतनैः अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? न कैश्चित् स्कन्धैः सप्तभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतः।

(हिन्दी)- ६५. नामरूप प्रत्यय से षडायतन दो स्कन्धों, छह आयतनों और बारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, छह आयतनों और छह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६६. षडायतन प्रत्यय से स्पर्श.... स्पर्श प्रत्यय से वेदना ..... वेदना प्रत्यय से तृष्णा..... तृष्णा प्रत्यय से उपादान ..... कर्मभव एक स्कन्धों, एक आयतनों और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

६७. उपपत्तिभव.....कामभव....संज्ञाभव....पंचविकारभव पाँच स्कंधों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

६८. रूपभव पाँच स्कन्धों, पाँच आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों (पाँच स्कन्धों में असंग्रहीत नहीं हैं किन्तु) , सात आयतन और दस धातु में असंग्रहीत हैं।

६९. अरूपभवो... नेवसञ्ञानासञ्ञाभवो... चतुवोकारभवो चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहितो।

७०. असञ्ञाभवो... एकवोकारभवो एकेन खन्धेन द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहितो।

७१. जाति द्वीहि खन्धेहि... जरा द्वीहि खन्धेहि... मरणं द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? तीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

७२. सोको... परिदेवो... दुक्खं... दोमनस्सं... उपायासो... सतिपट्ठानं... सम्मप्पधानं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

(सं.)- ६९. अरूपभवः... नैवसंज्ञानासंज्ञाभवः... चतुर्विकारभवः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतः।

७०. असंज्ञाभवः... एकविकारभव एकेन स्कन्धेन द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? चतुर्भिः स्कन्धैः दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतः।

७१. जातिः द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् ... जरा द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् ... मरणं द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभिः असङ्ग्रहीतम्? त्रिभिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतम्।

७२. शोकः... परिदेवः... दुःखं... दौर्मनस्यं... उपायासः... स्मृतिप्रस्थानं... सम्यक् प्रधानं एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभिः असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतम्।

(हिन्दी)- ६९. अरूपभव... नैवसंज्ञानासंज्ञाभव... चतुर्विकारभव (चार प्रकार के विकार भव) चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७०. असंज्ञाभव... एकविकारभव एक स्कन्ध, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७१. जन्म दो स्कन्धों में... जरा दो स्कन्धों ... मरण दो स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७२. शोक... परिदेव... दुःख... दौर्मनस्य... उपायास... स्मृतिप्रस्थान... सम्यक् प्रधान एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७३. इद्धिपादो द्वीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? तीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहितो।

७४. झानं द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? तीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितं।

७५. अप्पमञ्ञा ... पञ्चिन्द्रियानि... पञ्च बलानि... सत्त बोज्झङ्गा... अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो... फस्सो... वेदना... सञ्ञा... चेतना... अधिमोक्खो... मनसिकारो एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहितो।

७६. चित्तं एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहितं। कतिहि असङ्गहितं? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहितं।

७. तिकं

७७. कुसला धम्मा... अकुसला धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि

(सं.)- **७३**. ऋद्धिपादः द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? त्रिभिः स्कन्धैः दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतः।

७४. ध्यानं द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतम्। कतिभिः असङ्ग्रहीतम्? त्रिभिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतम्।

७५. अप्रमाण्याः ... पञ्चेन्द्रियानि... पञ्च बलानि... सप्त बोध्यङ्गा... आर्याष्टाङ्गिकः मार्गः... स्पर्शः... वेदना... संज्ञा... चेतना... अधिमोक्षः... मनसिकार एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीतः। कतिभिः असङ्ग्रहीतः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतः।

७६. चित्तम् एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सङ्ग्रहीतम्। कतिभिः असङ्ग्रहीतम्? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीतम्।

७. त्रिकं **७७**. कुशलाः धर्माः ... अकुशलाः धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः

(हिन्दी)- ७३. ऋद्धिपाद दो स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७४. ध्यान दो स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७५. अप्रमाण... पाँच इन्द्रिय...पाँच बल...सात बोध्यंग....आर्य अष्टांगिक मार्ग.... स्पर्श... वेदना.... संज्ञा... चेतना... अधिमोक्ष... मनसिकार एक स्कन्ध में एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७६. चित्त एक स्कन्ध में, एक आयतन में, सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७७. कुशल धर्म....अकुशल धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों में, कितने धातुओं में संग्रहीत हैं?

सङ्गहिता? कुसला धम्मा... अकुसला धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

७८. अब्याकता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

७९. सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा... दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

८०. अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि सत्तहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

८१. विपाका धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता।

(सं.)- सङ्ग्रहीताः? कुशलाः धर्माः ... अकुशलाः धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

७८. अव्याकृता धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशयातनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

७९. सुखया वेदनया सम्प्रयुक्ताः धर्माः ... दुःखया वेदनया सम्प्रयुक्ताः धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८०. अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्ताः धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां सप्तभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८१. विपाका धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- कुशल धर्म....अकुशल धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्धों मे, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७८. अव्याकृत धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

७९. सुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म ... दुःख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म तीन स्कन्धों, दो आयतनों और तीन धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८०. अदुःखअसुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म तीन स्कन्धों, दो आयतनों और सात धातुओं में संग्रहीत हैं। किस में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८१. विपाक धर्म (जो धम्म चित्त की कुशल अवस्थाओं के स्वयं परिणाम हैं।) चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

८२. विपाकधम्मधम्मा... संकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

८३. नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहिता।

८४. उपादिन्नुपादानिया धम्मा पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहिता।

८५. अनुपादिन्नुपादानिया धम्मा पञ्चहि खन्धेहि सत्तहायतनेहि अट्ठहि धातूहि

(सं.)- कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८२. विपाकधर्मधर्माः ... संक्लिष्टसंक्लेशिका धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८३. नैवविपाकनविपाकधर्मधर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८४. उपादिन्नोपादानीया धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

८५. अनुपादिन्नोपादानीया धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः सप्तभिः आयतनैः अष्टभिः धातुभिः

(हिन्दी)- किसमें असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८२. विपाक (परिणाम) धर्म अधर्म... (ऐसे धम्म जो स्वयं चित्त की कुशल या अकुशल अवस्थाओं के परिणाम को पैदा करने वाले हैं।) ... संक्लिष्टसांक्लेशिक धर्म (जो धम्म स्वयं अपवित्र है और अपवित्रता के आलम्बन भी बन जाते हैं) चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८३. न विपाक न विपाक धर्म अधर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, तेरह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८४. उपादिन्न एवं उपादानीय धर्म (जो धम्म पूर्व कर्म के परिणामस्वरूप प्राप्त किये गये हैं और जो स्वयं भविष्य में ऐसे ही धम्मों को पैदा करने वाले हैं) पाँच स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

८५. अनुपादिन्न एवं उपादानीय धर्म पाँच स्कन्धों, सात आयतनों और आठ धातुओं में

सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि पञ्चहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

८६. अनुपादिन्नअनुपादानिया धम्मा... असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

८७. असंकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

८८. सवितक्कसविचारा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

८९. अवितक्कविचारमत्ता धम्मा... पीतिसहगता धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि

(सं.)- सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः पञ्चभिः आयतनभिः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८६. अनुपादिन्नोपादानीया धर्माः ... असंक्लिष्टासांक्लेशिका धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतो हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८७. असंक्लिष्टसांक्लेशिका धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८८. सवितर्कसविचारा धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धैः दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

८९. अवितर्कविचारमत्ता धर्माः... प्रीतिसहगता धर्माः चतुर्भिः स्कन्धभिः द्वाभ्याम्

(हिन्दी)- संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, पाँच आयतन और दस धातु में असंग्रहीत हैं।

८६. अनुपादिन्न अनुपादानिय धर्म ...असंक्लिष्टक्लेश धर्म (जो धम्म स्वयं न तो पूर्व कर्म के परिणाम स्वरूप प्राप्त ही किये गए है और न जो भविष्य में धम्मों को पैदा करने वाले हैं) असंस्कृत धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८७. असंक्लिष्टसंक्लेषिक धर्म (जो धम्म स्वयं अपवित्र नहीं हैं किन्तु अपवित्रता के आलंबन बनते हैं) पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८८. सवितर्क और सविचार धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और तीन धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

८९. अवितर्क और अविचार धर्म.... प्रीतिसहगत चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो

धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

९०. अवितक्कअविचारा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया असङ्गहिता।

९१. सुखसहगता धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

९२. उपेक्खासहगता धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि सत्तहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

९३. दस्सनेन पहातब्बा धम्मा... भावनाय पहातब्बा धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा... आचयगामिनो धम्मा... अपचयगामिनो धम्मा...

(सं.)- ~~आयतनाभ्यां द्वाभ्यां~~ धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९०. अवितर्काविचारा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनै एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

९१. सुखसहगता धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां तिसृभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९२. उपेक्षासहगता धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां सप्तभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९३. दर्शनेन प्रहातव्या धर्माः ... भावनया प्रहातव्या धर्माः ... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुका धर्माः ... भावनया प्रहातव्यहेतुका धर्माः... आचयगामिनो धर्माः ... अपचयगामिनो धर्माः...

(हिन्दी)- धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९०. अवितर्क और अविचार धर्म असंस्कृत धर्म निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

९१. सुखसहगत धर्म तीन स्कन्धों में, दो आयतनों में और तीन धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों , और दस आयतनों और पंद्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९२. उपेक्षासहगत (उपेक्षा की भावना से युक्त) धर्म तीन स्कन्धों, दो आयतनो और सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९३. दर्शन से प्रहातव्य (नष्ट करने योग्य) धर्म ....., भावना से प्रहाण करने योग्य धर्म (अभ्यास द्वारा नाश किये जाने योग्य)....., दर्शन से प्रहाण हेतुक धर्म (ऐसे धर्म जिनके हेतुका विनाश दर्शन द्वारा किया जा सकता है).., भावना से प्रहाण हेतुक धर्म....., आचयगामिन (कर्म संग्रह करने के कारण उत्पन्न) धर्म....., अपचयगामिन

सेक्खा धम्मा... असेक्खा धम्मा... महग्गता धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

९४. नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा धम्मा... नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा... नेवाचयगामिनापचयगामिनो धम्मा... नेवसेक्खनासेक्खा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

९५. परित्ता धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

९६. अप्पमाणा धम्मा... पणीता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि

(सं.)- शैक्ष्याः धर्माः...अशैक्ष्याः धर्माः... महद्गताः धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९४. नैव दर्शनेन न भावनया प्रहातव्या धर्माः... नैव दर्शनेन न भावनया प्रहातव्यहेतुका धर्माः... नैवाचयगामिनापचयगामिनः धर्माः ... नैवशैक्ष्यानाशैक्ष्याः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९५. प्ररित्ताधर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९६. अप्रमाणा धर्माः... प्रणीता धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम्

(हिन्दी)- धर्म (कर्म संचय के विनाश के कारण उत्पन्न धर्म) ....., शैक्ष्य (आर्य पुद्गलों के ७ प्रकार के चित्त) धर्म ....., अशैक्ष्य धर्म ....., महद्गत (महान आकार वाले चित्त) धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९४. न दर्शन से न भावना से प्रहाण करने योग्य धर्म ....., न दर्शन से न भावना से प्रहाण हेतुक धर्म ....., न आचयगामिन न अपचयगामिन धर्म ....., न शैक्ष्य न अशैक्ष्य धर्म ....., असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर, पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९५. प्ररित्त धर्म (अल्प आकार वाले धर्म) पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९६. अप्रमाण धर्म (अपरिमेय आकार वाले)....., प्रणीत धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर, चार स्कन्धों, दो आयतनों और

द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

९७. परित्तारम्मणा [परित्तारमणा (?)] धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

९८. महग्गतारम्मणा धम्मा... अप्पमाणारम्मणा धम्मा... हीना धम्मा... मिच्छत्तनियता धम्मा... सम्मत्तनियता धम्मा... मग्गारम्मणा धम्मा... मग्गहेतुका धम्मा... मग्गाधिपतिनो धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

९९. मज्झिमा धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९७. प्ररिक्तालम्बना धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९८. महद्गतालम्बना धर्माः... अप्रमाणालम्बना धर्माः... हीनाः धर्माः... मिथ्यात्वनियताः धर्माः... सम्यक्त्वनियता धर्माः... मार्गालम्बना धर्माः... मार्गहेतुका धर्माः... मार्गाधिपतिनो धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

९९. मध्यमा धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९७. प्ररिक्तालम्बन धर्म (ऐसी चित्त वृत्तियाँ जिनका आलम्बन अल्प आकार वाला है) चार स्कन्धों में, दो आयतनों और आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

९८. महद्गतालम्बन धर्म (ऐसी चित्त वृत्तियाँ जिनका आलम्बन महान आकार वाला है) ....., अप्रमाणालम्बन धर्म ....., हीन धर्म ....., मिथ्यात्व की ओर ले जाने वाला धर्म....., सम्यकत्व की ओर ले जाने वाला धर्म....., मार्गालम्बन धर्म (ऐसा धर्म जिनका आलम्बन मार्ग है) ....., मार्गहेतुक धर्म (ऐसा धर्म जिनका हेतु मार्ग है)....., मार्गाधिपति धर्म (ऐसा धर्म जिनका एकमात्र उद्धेश्य मार्ग है) चार स्कन्धों में दो आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों, सोलह धातुओं में, असंग्रहीत हैं।

९९. मध्यम धर्म (मध्यम अवस्था की चित्त वृत्तियाँ) पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१००. अनियता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१०१. उप्पन्ना धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१०२. अनुप्पन्ना धम्मा पञ्चहि खन्धेहि सत्तहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि पञ्चहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

१०३. उप्पादिनो धम्मा पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहिता।

१०४. अतीता धम्मा... अनागता धम्मा... पच्चुप्पन्ना धम्मा... अज्झत्ता धम्मा... अज्झत्तबहिद्धा धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता।

(सं.)- १००. अनियता धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१०१. उत्पन्ना धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१०२. अनुत्पन्ना: धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: सप्तभि: आयतनै: अष्टभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: पञ्चभि: आयतनै: दशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१०३. उत्पादिन: धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: एकायतनेन एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

१०४. अतीता: धर्म ..... अनागता: धर्माः..... प्रत्युत्पन्ना: धर्माः.... अध्यात्मान: धर्माः.... अध्यात्मबहिर्द्धा धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- १००. अनियत धर्म असंस्कृत धर्म (ऐसे धर्म जिनकी प्रकृति अनिश्चित है) निर्वाण को छोड़कर, पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०१. उत्पन्न धर्म (मन की ऐसी अवस्था जो उत्पन्न हो चुकी है) पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०२. अनुत्पन्न धर्म पाँच स्कन्धों में, सात आयतनों में, आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, पाँच आयतनों में , दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०३. उप्पादिन्न धर्म (ऐसे धर्म जो भविष्य में उत्पन्न होने वाले है) पाँच स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, एक आयतन, एक धातु द्वारा असंग्रहीत हैं।

१०४. अतीत के धर्म.... अनागत के धर्म.... वर्तमान के धर्म.... अध्यात्म धर्म (आंतरिक).... अध्यात्मबाह्य धर्म पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१०५. बहिद्धा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१०६. अतीतारम्मणा धम्मा... अनागतारम्मणा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१०७. पच्चुप्पन्नारम्मणा धम्मा... अज्झत्तारम्मणा धम्मा... बहिद्धारम्मणा धम्मा... अज्झत्तबहिद्धारम्मणा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१०५. बहिर्द्धा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१०६. अतीतालम्बना धर्माः..... अनागतालम्बना धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१०७. प्रत्युत्पन्नालम्बना धर्माः..... अध्यात्मालम्बना धर्माः... बहिर्द्धालम्बना धर्माः अध्यात्मबहिर्द्धालम्बना धर्माः... चतूर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां अष्टभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०५. बाह्य धर्म (जो धर्म किसी व्यक्ति के बाहर अवस्थित है) असंस्कृत धर्म निर्वाण को छोड़कर, पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०६. अतीत आलम्बन के धर्म.... अनागत आलम्बन के धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों, सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०७. वर्तमान आलम्बन के धर्म.... अध्यात्म आलम्बन के धर्म (ऐसा धर्म जिनका आलम्बन कोई आंतरिक वस्तु है).... बाह्य आलम्बन के अध्यात्मबाह्य आलम्बन के धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में, आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों, दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०८. सनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१०९. अनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा एकेन खन्धेन नवहायतनेहि नवहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि तीहायतनेहि नवहि धातूहि असङ्गहिता।

११०. अनिदस्सनअप्पटिघा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि, दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

८. दुकं

१११. हेतू धम्मा... हेतू चेव सहेतुका च धम्मा... हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- १०८. सनिदर्शनसप्रतिघा धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनै सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१०९. अनिदर्शनसप्रतिघा धर्माः एकेन स्कन्धेन नवभि आयतनैः नवभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः त्रिभि आयतनैः नवभिः धातुभि असङ्ग्रहीताः।

११०. अनिदर्शनाप्रतिघा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः, दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१११. हेतुधर्माः... हेतवः चैव सहेतुका च धर्माः... हेतवः चैव हेतुसम्प्रयुक्ता च धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)-१०८. सनिदर्शनसप्रतिघ धर्म (वे धम्म जो दृश्य हैं और इन्द्रिय और उसके विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं) एक स्कन्ध में, एक आयतन में, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१०९. अनिदर्शनसप्रतिघ धर्म (वे धम्म जो दृश्य नहीं हैं .....".....) एक स्कन्ध में, नव आयतनों में, नव धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, तीन आयतनों में, नव धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११०. अनिदर्शनअप्रतिघ धर्म (वे धम्म जो दृश्य नहीं हैं ....."..... न सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं) असंस्कृत धर्म निर्वाण को छोड़कर, पाँच स्कन्धों में, दो आयतनों में, आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, दस आयतनों, दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१११. जो धर्म हेतु है .... दूसरों के हेतु और हेतुओं से युक्त हैं वे .... जो धर्म दूसरों के हेतु और हेतुओं से सम्प्रयुक्त हैं वे एक स्कन्ध में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११२. न हेतू धम्मा... अहेतुका धम्मा... हेतुविप्पयुत्ता धम्मा... न हेतू अहेतुका [न हेतू अहेतुका (स्या॰ क॰) विभ॰ दुकपञ्हापुच्छकेपि] धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

११३. सहेतुका धम्मा... हेतुसम्पयुत्ता धम्मा... सहेतुका चेव न च हेतू धम्मा... हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतू धम्मा... न हेतू सहेतुका धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

११४. सप्पच्चया धम्मा... सङ्खता धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

११५. अप्पच्चया धम्मा... असङ्खता धम्मा न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय

(सं.)- ११२. न हेतवः धर्माः... अहेतुका धर्माः... हेतुविप्रयुक्ताः धर्माः.... न हेतवः अहेतुका धर्माः....असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

११३. सहेतुकाः धर्माः... हेतुसम्प्रयुक्ताः धर्माः.... सहेतुका चैव न हेतवः च धर्माः.... हेतुसम्प्रयुक्ता: चैव न च हेतवः धर्माः... न हेतवः सहेतुका धर्माः चतुर्भि: स्कन्धै: द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभि: आयतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

११४. सप्रत्ययाद् धर्माः... संस्कृता धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

११५. अप्रत्यया धर्माः... असंस्कृता धर्माः न कैश्चित् स्कन्धै: एकेनायतनेन एकेन

(हिन्दी)- ११२. जो धर्म न दूसरों के हेतु हैं और न हेतुओं से युक्त हैं .... हेतु विप्रयुक्त धर्म हैं .... न हेतु और अहेतुक धर्म हैं .... असंस्कृत धर्म निर्वाण को छोड़कर, पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११३. जो धर्म हेतुओं से सम्प्रयुक्त हैं.... जो धर्म हेतुओं से युक्त हैं और हेतु धर्म नहीं हैं .... हेतुओं से सम्प्रयुक्त हैं लेकिन स्वयं दूसरों के हेतु नहीं हैं .... न दूसरों के हेतु हैं और जो हेतुओं से युक्त हैं वे ..... चार स्कन्धों और बारह आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११४. सप्रत्यय (चार कारणों से उत्पन्न) धर्म ..... संस्कृत धर्म पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११५. अप्रत्यय धर्म ..... असंस्कृत धर्म न किन्ही स्कन्धों में, एक आयतन में,

धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

११६. सनिदस्सना धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

११७. अनिदस्सना धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि, एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहिता।

११८. सप्पटिघा धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

११९. अप्पटिघा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि, दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? पञ्चभिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

११६. सनिदर्शना धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

११७. अनिदर्शना धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः स्थापयित्त्वा पञ्चभिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः, एकेनायतनेन एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

११८. सप्रतिघा धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभि सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

११९. अप्रतिघा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः, दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? पाँच स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११६. सनिदर्शन (दृश्य) धर्म एक स्कन्ध में, एक आयतन में, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११७. अनिदर्शन धर्म असंस्कृत धर्म निर्वाण को छोड़कर, पाँच स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों , एक आयतन और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

११८. सप्रतिघ धर्म एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और दस धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, दो आयतनों और आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

११९. अप्रतिघ धर्म असंस्कृत धर्म निर्वाण को छोड़कर, पाँच स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों , दस आयतनों और दस में असंग्रहीत हैं।

१२०. रूपिनो धम्मा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१२१. अरूपिनो धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

१२२. लोकिया धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१२३. लोकुत्तरा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१२४. केनचि विञ्ञेय्या धम्मा... केनचि न विञ्ञेय्या धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न

(सं.)- १२०. रूपिनः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१२१. अरूपिनः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः असङ्ग्रहीताः।

१२२. लौकिकाः धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१२३. लोकोत्तरा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१२४. केनचित् विज्ञेया धर्माः... केनचित् न विज्ञेया धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः न

(हिन्दी)-१२०. रूपयुक्तधर्म एक स्कन्ध, ग्यारह आयतनों, ग्यारह धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२१. अरूपधर्म में चार असंस्कृत धर्म निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर, स्कन्ध चार, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२२. लौकिक धर्म पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२३. लोकोत्तर धर्म असंस्कृत धर्म निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्ध, दो आयतनों में, दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२४. किसी एक द्वारा (चक्षु विज्ञान से) जानने योग्य धर्म..... किसी एक द्वारा न जानने योग्य धर्म असंस्कृत धर्म निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर, पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत

केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१२५. आसवा धम्मा... आसवा चेव सासवा च धम्मा... आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१२६. नो आसवा धम्मा... आसवविप्पयुत्ता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१२७. सासवा धम्मा... सासवा चेव नो च आसवा धम्मा... आसवविप्पयुत्ता सासवा धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१२८. अनासवा धम्मा... आसवविप्पयुत्ता अनासवा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा

(सं.)- कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१२५. आस्रवा धर्माः....आस्रवा: चैव सास्रवा: च धर्माः... आस्रवा: चैव आस्रवसम्प्रयुक्ता: च धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१२६. अनास्रवा धर्माः....आस्रवविप्रयुक्ताः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१२७. सास्रवा धर्माः... सास्रवा: चैव न अनास्रवा धर्माः.... आस्रवविप्रयुक्ताः सास्रवा धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: सङ्ग्रहीताः।

१२८. अनास्रवा धर्माः... आस्रवविप्रयुक्ताः अनास्रवा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा

(हिन्दी)- हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२५. आस्रव (चित्तमल) धर्म..... आस्रव भी और सास्रव धर्म भी (चित्तमल हैं और चित्तमलों से युक्त भी है).... आस्रव भी और आस्रवसम्प्रयुक्त और धर्म एक स्कन्ध में, एक आयतन में, एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों, सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२६. जो धर्म न स्वयं चित्तमल है .... आस्रवविप्रयुक्त धर्म (जिनसे चित्त-मल संलग्न नहीं हैं) वे असंस्कृत धर्म निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर, पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? किन्ही भी स्कन्धों, किन्ही भी आयतनों और किन्ही भी धातुओं में असंग्रहीत नहीं हैं।

१२७. जो धर्म सास्रव .... और सास्रव धर्म है किन्तु स्वयं आस्रव धर्म नहीं है .... आस्रवविप्रयुक्त सास्रव धर्म है वे पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२८. जो धर्म अनास्रव.... आस्रवविप्रयुक्त अनास्रव असंस्कृत धर्म स्कन्धों,

चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१२९. आसवसम्पयुत्ता धम्मा... आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१३०. संयोजना धम्मा... गन्था धम्मा... ओघा धम्मा... योगा धम्मा... नीवरणा धम्मा... परामासा धम्मा... परामासा चेव परामट्ठा च धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१३१. नो परामासा धम्मा... परामासविप्पयुत्ता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि

(सं.)- चतुर्भि: स्कन्धै: द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१२९. आस्रवसम्प्रयुक्ता धर्माः... आस्रवसम्प्रयुक्ता: चैव न च आस्रवा धर्माः चतुर्भि: स्कन्धै: द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनै: षोडशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१३०. संयोजना धर्माः.... ग्रन्था धर्माः... ओघा धर्माः... योगधर्माः... नीवरणा धर्माः... परामर्शा धर्माः... परामर्शा: चैव परामृष्टा: च धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनै: एकेन धातुना संग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१३१. न परामर्शा: धर्माः... परामर्शविप्रयुक्ताः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित्

(हिन्दी)- चार स्कन्धों, दो आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१२९. जो धर्म आस्रवों से सम्प्रयुक्त.... जो आस्रवों से सम्प्रयुक्त परन्तु स्वयं आस्रव नहीं है वे चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३०. जो धर्म संयोजन धर्म ... ग्रन्थ धर्म ... ओघ धर्म ... योग धर्म ... नीवरण (ध्यान के विघ्न (आवरण)) धर्म ... परामर्श धर्म ... परामर्श (मिथ्या धारणाएँ) और परामृष्ट (मिथ्या धारणाओं को पैदा करने वाली चित्त की आस्थाएँ) धर्म है वे एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३१. जो धर्म परामर्श धर्म... परामर्शविप्रयुक्त असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोडकर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों,

खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१३२. परामट्ठा धम्मा... परामट्ठा चेव नो च परामासा धम्मा... परामासविप्पयुत्ता परामट्ठा धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१३३. अपरामट्ठा धम्मा... परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१३४. परामाससम्पयुत्ता धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१३५. सारम्मणा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१३२. परामृष्टा धर्माः....परामृष्टाः चैव न च परामर्शा धर्माः... परामर्शविप्रयुक्ताः परामृष्टा धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१३३. अपरामृष्टा धर्माः... परामर्शविप्रयुक्ताः अपरामृष्टा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असंग्रहीताः।

१३४. परामर्शसम्प्रयुक्ता धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असंग्रहीताः।

१३५. सालम्बना धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असंग्रहीताः।

(हिन्दी)- स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३२. जो धर्म परामृष्ट (मिथ्या धारणाओं को उत्पन्न करता है) ... जो धर्म परामृष्ट परंतु स्वयं परामर्श नहीं है ... जो धर्म परामर्श से विप्रयुक्त और परामृष्ट विषय हैं वे धर्म पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३३. जो धर्म अपरामृष्ट .... जो धर्म परामर्शविप्रयुक्त किंतु स्वयं अपरामृष्ट हैं वे असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३४. जो धर्म परामर्शसम्प्रयुक्त है वे चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? वे एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३५. जो धर्म सालम्बन चार स्कन्धों में, बारह आयतनों में, आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३६. अनारम्मणा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१३७. चित्ता धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

१३८. नो चित्ता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१३९. चेतसिका धम्मा... चित्तसम्पयुत्ता धम्मा... चित्तसंसट्ठा धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- १३६. अनालम्बना: धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा एकेन स्कन्धेन एकादशायतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१३७. चित्ता धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: एकादशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१३८. न चित्ता धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनै: एकादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१३९. चैतसिका धर्माः... चित्तसम्प्रयुक्ता धर्माः.... चित्तसंसृष्टा धर्माः त्रिभि: स्कन्धै: एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी) -१३६. जो धर्म अनालम्बन असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर एक स्कन्ध से, ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३७. जो धर्म चित्त स्वरूप हैं एक स्कन्ध में, एक आयतन में, सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३८. जो धर्म चित्त स्वरूप नहीं हैं असंस्कृत स्कन्ध निर्वाण छोड़कर चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्धों में, एक आयतन में और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१३९. चैतसिक धर्म .... चित्तसम्प्रयुक्त धर्म .... चित्तसंसृष्ट (आसक्त) धर्म तीन स्कन्धों में एक आयतन में एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४०. अचेतसिका धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा द्वीहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१४१. चित्तविप्पयुत्ता धम्मा... चित्तविसंसट्ठा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१४२. चित्तसमुट्ठाना धम्मा चतूहि खन्धेहि छहायतनेहि छहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन छहायतनेहि द्वादसहि धातूहि असङ्गहिता।

१४३. नो चित्तसमुट्ठाना धम्मा... नो चित्तसहभुनो धम्मा... नो चित्तानुपरिवत्तिनो धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा द्वीहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- १४०. अचैतसिका धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? त्रिभिः स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१४१. चित्तविप्रयुक्ताः धर्माः.... चित्तविसंसृष्टा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा एकेन स्कन्धेन एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१४२. चित्तसमुत्थाना धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः षडायतनैः षड्भिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन षडायतनैः द्वादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१४३. न चित्तसमुत्थाना धर्माः.... न चित्तसहभूताः धर्माः.... न चित्तानुपरिवर्तिनः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? त्रिभिः स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनै न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- १४०. अचैतसिक धर्म असंस्कृत स्कन्ध निर्वाण छोड़कर दो स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों में और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४१. चित्तविप्रयुक्त धर्म .... चित्तविसंसृष्ट (चेतना से पृथक) धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर एक स्कन्ध में, ग्यारह आयतनों में और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, एक आयतन में और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४२. चित्तसमुत्थान (चेतना के द्वारा उत्पन्न) चार स्कन्धों में, छ आयतन में और छ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, छ आयतनों और बारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४३. जो धर्म चित्तसमुत्थान नहीं है .... चित्तसहभूत (चेतना की उत्पत्ति के साथ उत्पन्न होने वाले) नहीं है .... चित्तानुपरिवर्त्ति (जो धर्म चेतना के परिवर्त्तन के साथ परिवर्त्तित होने वाले) नहीं है वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर दो स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४४. चित्तसहभुनो धम्मा... चित्तानुपरिवत्तिनो धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१४५. चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१४६. नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा... नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा... नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा द्वीहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१४७. अज्झत्तिका धम्मा द्वीहि खन्धेहि छहायतनेहि द्वादसहि धातूहि सङ्गहिता।

(सं.)- १४४. चित्तसहभूता: धर्माः.... चित्तानुपरिवर्तिन: धर्माः चतुर्भि: स्कन्धै: एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१४५. चित्तसंसृष्टसमुत्थाना धर्माः .... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूताः धर्माः ... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिन: धर्माः त्रिभि: स्कन्धै: एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१४६. न चित्तसंसृष्टसमुत्थाना धर्माः.... न चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूता: धर्माः... न चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिन: धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? त्रिभि: स्कन्धै:, न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् च धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१४७. आध्यात्मिका धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां षडायतनै: द्वादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- १४४. जो धर्म चित्तसहभूत ....चित्तानुपरिवर्त्ति हैं वे धर्म चार स्कन्धों में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४५. जो धर्म चित्तसंसृष्टसमुत्थान (अर्थात् जो धर्म चेतना के साथ संयुक्त और उसीसे उत्पन्न होने वाले हैं) .... जो धर्म चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूत (अर्थात् चेतना से युक्त, उसके द्वारा उत्पन्न होने वाले और उसके साथ रहने वाले हैं).... जो धर्म चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्त्ति (अर्थात् जो धर्म चेतना से युक्त, उससे उत्पन्न होने वाले और चेतना के परिवर्त्तन के साथ परिवर्त्तित होने वाले हैं) वे तीन स्कन्धों में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४६. जो धर्म चित्तसंसृष्टसमुत्थान नहीं हैं .... जो धर्म चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूत नहीं हैं .... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्त्ति नहीं हैं वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर दो स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४७. अध्यात्मिक धर्म (जो किसी व्यक्ति के अन्दर स्थित हैं) दो स्कन्धों में, छह आयतनों में और बारह धातुओं में संग्रहीत हैं।

कतिहि असङ्गहिता? तीहि खन्धेहि छहायतनेहि छहि धातूहि असङ्गहिता।

१४८. बाहिरा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि छहायतनेहि छहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन छहायतनेहि द्वादसहि धातूहि असङ्गहिता।

१४९. उपादा धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

१५०. नो उपादा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि तीहायतनेहि नवहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि नवहायतनेहि नवहि धातूहि असङ्गहिता।

१५१. उपादिन्ना धम्मा पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहिता।

१५२. अनुपादिन्ना धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि सत्तहायतनेहि

(सं.)- कतिभि: असङ्ग्रहीताः? त्रिभि: स्कन्धै: षडायतनै: षड्भि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१४८. बाह्याः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा चतुर्भि: स्कन्धै: षडायतनै: षड्भि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन षडायतनै: द्वादशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१४९. उपादाया: धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनै: दशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१५०. न उपादाया: धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पंचभि: स्कन्धै: त्रिभि: आयतनै: नवभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: नव आयतनै: नवभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१५१. उपादिन्ना: धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: एकादशायतनै: सप्तदशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: एकायतनेन: एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

१५२. अनुपादिन्ना धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: सप्तायतनै:

(हिन्दी)- कितनों में असंग्रहीत हैं? तीन स्कन्धों में, छ आयतनों में और छ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४८. बाह्य धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों में, छह आयतनों में और छह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, छह आयतनों और बारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१४९. उपादा धर्म (पूर्व कर्मों के परिणामस्वरूप अर्जित हैं) एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और दस धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, बारह आयतनों में और आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५०. उपादान धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, तीन आयतनों में और नौ धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, नव आयतनों और नव धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५१. जो धर्म उपादिन्न (पूर्व कर्मों के परिणामस्वरूप अर्जित नहीं हैं) पाँच स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, एक आयतन और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

१५२. जो धर्म अनुपादिन्न असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, सात आयतनों

अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि पञ्चहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

१५३. उपादाना धम्मा... किलेसा धम्मा... किलेसा चेव संकिलेसिका च धम्मा... किलेसा चेव संकिलिट्ठा च धम्मा... किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१५४. नो किलेसा धम्मा... असंकिलिट्ठा धम्मा... किलेसविप्पयुत्ता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१५५. संकिलेसिका धम्मा... संकिलेसिका चेव नो च किलेसा धम्मा... किलेसविप्पयुत्ता संकिलेसिका धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि

(सं.)- ~~अष्टभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः~~। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: पञ्चायतनै: दशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१५३. उपादाना धर्माः..... क्लेशा धर्माः.... क्लेशा: चैव संक्लेशा: च धर्माः... क्लेशा: चैव संक्लिष्टा च धर्माः... क्लेशा चैव क्लेशसम्प्रयुक्ता: च धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? चतुर्भि: स्कन्धै: एकादशायतनैः सप्तदशभि: धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१५४. न क्लेशा धर्माः..... असंक्लिष्टा धर्माः.... क्लेशविप्रयुक्ताः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धत: हित्वा पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि: असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धै: न कैश्चित् आयतनै: न कैश्चित् धातुभि: असङ्ग्रहीताः।

१५५. संक्लेशिका धर्माः..... संक्लेशिका: चैव न च क्लेशा धर्माः..... क्लेशविप्रयुक्ताः संक्लेशिका धर्माः पञ्चभि: स्कन्धै: द्वादशायतनै: अष्टादशभि: धातुभि: सङ्ग्रहीताः। कतिभि:

(हिन्दी)- में और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, पाँच आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५३. जो धर्म उपादान (इंद्रियों द्वारा ग्रहण किया गया) .... क्लेश (चित्त मल)धर्म .... क्लेश और सांक्लेशिक (जो धर्म क्लेश को उत्पन्न करने वाले हैं) धर्म .... क्लेश और संक्लिष्ट धर्म (जो धर्म क्लेशों से युक्त हैं) .... क्लेश और क्लेश युक्त धर्म एक स्कन्ध में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५४. जो धर्म क्लेश नहीं हैं .... असंक्लिष्ट धर्म नहीं हैं .... क्लेशविप्रयुक्त धर्म हैं वे असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५५. जो धर्म सांक्लेशिक हैं .... जो धर्म सांक्लेशिक परन्तु क्लेश धर्म नहीं हैं .... जो धर्म क्लेशविप्रयुक्त सांक्लेशिक धर्म हैं वे पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में

असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१५६. असंकिलेसिका धम्मा... किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिका धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१५७. संकिलिट्ठा धम्मा... किलेससम्पयुत्ता धम्मा... संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसा धम्मा... किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१५८. दस्सनेन पहातब्बा धम्मा... भावनाय पहातब्बा धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१५९. न दस्सनेन पहातब्बा धम्मा... न भावनाय पहातब्बा धम्मा ... न दस्सनेन

(सं.)- असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१५६. असंक्लेशिका धर्माः..... क्लेशविप्रयुक्ताः असंक्लेशिका धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१५७. संक्लिष्टा धर्माः... क्लेशसम्प्रयुक्ता धर्माः... संक्लिष्टाः चैव न च क्लेशा धर्माः .... क्लेशसम्प्रयुक्ताः चैव न च क्लेशा धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१५८. दर्शनेन प्रहातव्या धर्माः... भावनया प्रहातव्या धर्माः... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुका धर्माः... भावनया प्रहातव्यहेतुका धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१५९. न दर्शनेन प्रहातव्या धर्माः... न भावनया प्रहातव्या धर्माः... न दर्शनेन

(हिन्दी)- असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५६. जो धर्म असांक्लेशिक .... क्लेशविप्रयुक्त धर्म असांक्लेशिक धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५७. जो धर्म संक्लिष्ट.... क्लेशसम्प्रयुक्त धर्म.... संक्लिष्ट और न क्लेशधर्म.... क्लेशसम्प्रयुक्त हैं किन्तु क्लेशधर्म नहीं है वे चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५८. जो धर्म दर्शन के द्वारा हटाये या नष्ट किये जा सकने वाले हैं .... भावना के द्वारा हटाये या नष्ट किये जा सकने वाले.... जिन धर्म का हेतु दर्शन के द्वारा हटाये या नष्ट किये जा सकते हैं.... जिन धर्म का हेतु भावना के द्वारा हटाये या नष्ट किये जा सकते हैं, वे चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१५९. जो धर्म दर्शन के द्वारा हटाये या नष्ट नहीं किये जा सकने वाले हैं .... जो धर्म भावना के द्वारा हटाये या नष्ट नहीं किये जा सकने वाले.... जिन धर्मों के हेतु न दर्शन के द्वारा

पहातब्बहेतुका धम्मा... न भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१६०. सवितक्का धम्मा... सविचारा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१६१. अवितक्का धम्मा... अविचारा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया असङ्गहिता।

१६२. सप्पीतिका धम्मा... पीतिसहगता धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- प्रहातव्यहेतुका धर्माः... न भावनया प्रहातव्यहेतुका धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६०. सवितर्काः धर्माः... सविचाराः धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६१. अवितर्काः धर्माः... अविचाराः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

१६२. सप्रीतिकाः धर्माः.... प्रीतिसहगताः धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी) - हटाये या नष्ट किये जा सकते हैं.... जिन धर्मों के हेतु न भावना के द्वारा हटाये या नष्ट किये जा सकते हैं, वे असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६०. वितर्क संलग्न धर्म .... विचार संलग्न धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और तीन धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और पन्द्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६१. अवितर्क धर्म .... अविचार धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

१६२. सप्रीतिक धर्म.... प्रीतिसहगत धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों सें और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६३. अप्पीतिका धम्मा... न पीतिसहगता धम्मा... न सुखसहगता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१६४. सुखसहगता धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१६५. उपेक्खासहगता धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि सत्तहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

१६६. न उपेक्खासहगता धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- १६३. अप्रीतिका धर्माः.... न प्रीतिसहगता धर्माः.... न सुखसहगता धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशयतनैः अष्टादशाभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६४. सुखसहगताः धर्माः त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६५. उपेक्षासहगताः धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् सप्तभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्यां स्कन्धाभ्यां दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६६. न उपेक्षासहगताः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित्, आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी) - १६३. अप्रीतिक धर्म.... प्रीति से असहगत (असहचर) धर्म.... सुख से असहगत धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६४. जो धर्म सुखसहगत धर्म हैं वे तीन स्कन्धों में, दो आयतनों में , तीन धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दोनो स्कन्धों में, दस आयतनों में , पंद्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६५. जो धर्म उपेक्षासहगत है वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर तीन स्कन्धों में, दो आयतनों में और सात धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों में, दस आयतनों में और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६६. जो धर्म उपेक्षा से सहगत धर्म नहीं है वे असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और तेरह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६७. कामावचरा धम्मा... परियापन्ना धम्मा... सउत्तरा धम्मा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

१६८. न कामावचरा धम्मा... अपरियापन्ना धम्मा... अनुत्तरा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१६९. रूपावचरा धम्मा... अरूपावचरा धम्मा... निय्यानिका धम्मा... नियता धम्मा... सरणा धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१७०. न रूपावचरा धम्मा... न अरूपावचरा धम्मा... अनिय्यानिका धम्मा... अनियता

(सं.)- १६७. कामावचराः धर्माः....पर्यापन्नाः धर्माः..... सोत्तराः धर्माः पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६८. न कामावचराः धर्माः....अपर्यापन्नाः धर्माः..... अनुत्तराः धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम्, आयतनाभ्याम्, द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१६९. रूपावचराः धर्माः.... अरूपावचराः धर्माः.... निर्याणिकाः धर्माः... नियताः धर्माः.... शरणाः धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् द्वाभ्याम्, धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७०. न रूपावचराः धर्माः... न अरूपावचराः धर्माः... अनिर्याणिकाः धर्माः... अनियताः

(हिन्दी)- १६७. जो धर्म कामावचर (जिन धर्मों का सम्बन्ध कामनाओं के लोक से है) है वे धर्म.... पर्यापन्न (जो धर्म आवागमन के चक्र में निहित हैं) धर्म.... सउत्तर (जिन से आगे बढ़कर भी कुछ धर्म हैं) धर्म पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६८. जो धर्म कामावचर नहीं हैं .... अपर्यापन्न धर्म हैं .... अनुत्तर धर्म हैं वे असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१६९. जो धर्म रूपावचर है वे धर्म.... अरूपावचर धर्म.... निर्याणिक (जो धर्म निर्वाण की प्राप्ति कराने वाले हैं)धर्म.... नियत (जिन धर्मों के परिणाम सुनिश्चित हैं) धर्म.... एवं सरण (जो धर्म दुःखदायी पाप- कर्मों से युक्त हैं) धर्म चार स्कन्धों में, बारह आयतनों में और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों और न सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१७०. न रूपावचर धर्म.... न अरूपावचर धर्म.... अनिर्यानिक धर्म.... अनियत

धम्मा... अरणा धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? अरणा धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

सङ्गहासङ्गहपदनिद्देसो पठमो।

(सं.)- धर्माः अरणा धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? अरणा धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

सङ्ग्रहासङ्ग्रहपदनिर्देशः प्रथमः।

(हिन्दी)- धर्म.... कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं में संग्रहीत हैं? अरण धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़करपाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्हीं स्कन्धों, न किन्हीं आयतनों और न किन्हीं भी धातुओं में असंग्रहीत हैं।

****

२. दुतियनयो

२. सङ्गहितेनअसङ्गहितपदनिद्देसो

१७१. चक्खायतनेन ये धम्मा... फोट्ठब्बायतनेन ये धम्मा... चक्खुधातुया ये धम्मा... फोट्ठब्बधातुया ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि असङ्गहिता? ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

१७२. चक्खुविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... सोतविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... घानविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... जिव्हाविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... कायविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... मनोधातुया ये धम्मा... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि द्वादसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- **२. सङ्ग्रहीतेन असङ्ग्रहीत पदनिर्देशः द्वितीयनयः**

१७१. चक्ष्वायतनेन ये धर्माः... स्प्रष्टव्यायतनेन ये धर्माः... चक्षुर्धातुना ये धर्माः... स्प्रष्टव्यधातुना ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः? ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७२. चक्षुर्विज्ञानधातुना ये धर्माः... श्रोत्रविज्ञानधातुना ये धर्माः... घ्राणविज्ञानधातुना ये धर्माः... जिह्वाविज्ञानधातुना ये धर्माः... कायविज्ञानधातुना ये धर्माः... मनोधातुना ये धर्माः... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः... पे... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशयायतनैः द्वादशभिः धातुभि असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)-१७१. कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं में वे धर्म सम्मिलित (संग्रहीत) नहीं हैं जो चक्षुआयतन धर्म.... स्प्रष्टव्यायतन धर्म.... चक्षुधातु धर्म.... स्प्रष्टव्यधातु धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में सम्मिलित (संग्रह) है, किन्तु धातु संग्रह और आयतन संग्रह में सम्मिलित नहीं है? वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और आठ धातुओं में वे सम्मिलित नहीं हैं।

१७२. कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं में वे धर्म सम्मिलित (संग्रहीत) नहीं हैं जो चक्षुविज्ञानधातु.... श्रोत्रविज्ञानधातु.... घ्राणविज्ञानधातु.... जिह्वाविज्ञानधातु....कायविज्ञानधातु.... मनोधातु.... मनोविज्ञानधातु धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में सम्मिलित (संग्रह) है, किन्तु धातु संग्रह और आयतन संग्रह में असंग्रहीत ...पू०..... चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और बारह धातुओं में वे असंग्रहीत हैं।

१७३. चक्खुन्द्रियेन ये धम्मा... सोतिन्द्रियेन ये धम्मा... घानिन्द्रियेन ये धम्मा... जिव्हिन्द्रियेन ये धम्मा... कायिन्द्रियेन ये धम्मा... इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

१७४. असञ्ञाभवेन ये धम्मा... एकवोकारभवेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि तीहायतनेहि नवहि धातूहि असङ्गहिता।

१७५. परिदेवेन ये धम्मा... सनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

१७६. अनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि दसहायतनेहि

(सं.)- १७३. चक्षुरिन्द्रियेन ये धर्माः... श्रोत्रेन्द्रियेन ये धर्माः... घ्राणेन्द्रियेन ये धर्माः... जिह्वेन्द्रियेन ये धर्माः... कायेन्द्रियेन ये धर्माः... स्त्रीन्द्रियेन ये धर्माः... पुरुषेन्द्रियेन धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः...पू०.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टाभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७४. असंज्ञाभवेन ये धर्माः.... एकविकारभवेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः ....पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः त्रिभिः आयतनैः नवभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७५. परिदेवेन ये धर्माः... सनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः ....पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७६. अनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः ....पू०.... ने धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः दशायतनैः

(हिन्दी)- १७३. जो धर्म चक्षुइन्द्रिय.... श्रोत्रेन्द्रिय.... घ्राणेन्द्रिय.... जिह्वेन्द्रिय के साथ जो धर्म... कायेन्द्रिय....स्त्री इन्द्रिय....पुरुष इन्द्रिय धर्मों के साथ जो धर्म स्कन्ध में संग्रहीत है, किन्तु जो धर्म धातु और आयतन में असंग्रहीत ...पू०...वे धर्म चार स्कन्धों, बारह आयतनों और आठ धातुओं में वे असंग्रहीत हैं।

१७४. जो धर्म असंज्ञाभव में.... एकविकार भव के साथ जो धर्म स्कन्ध से संग्रहीत है, किन्तु जो धर्म आयतन और धातु में असंग्रहीत ...पू०... वे धर्म चार स्कन्धों में, तीन आयतनों में नौ धातुओं से असंग्रहीत हैं।

१७५. जो धर्म परिदेव में.... सनिदर्शन से सप्रतिघ (वे धम्म जो दृश्य है और इन्द्रिय और उसके विषय के संनिकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं) में जो धर्म के साथ स्कन्ध संग्रह से संग्रहीत है, किन्तु जो धर्म आयतन और धातु में असंग्रहीत है ...पू०... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में , आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१७६. अनिदर्शनसप्रतिघ धर्म में जो धर्मों स्कन्ध संग्रह से संग्रहीत है, किन्तु धातु संग्रह से और आयतन संग्रह से असंग्रहीत है ...पू०...वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में,

सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

१७७. सनिदस्सनेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

१७८. सप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादाधम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि असङ्गहिता? ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

दसायतना सत्तरस धातुयो, सत्तिन्द्रिया असञ्ञाभवो एकवोकारभवो।
परिदेवो सनिदस्सनसप्पटिघं, अनिदस्सनं पुनदेव [पुनरेव (पी०)] सप्पटिघं उपादाति॥
सङ्गहितेनअसङ्गहितपदनिद्देसो दुतियो।

(सं.)- षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७७. सनिदर्शनैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः .....पू०.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टाभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१७८. सप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः... उपादायधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः? ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशैः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

दशायतनानि सप्तदश धातवः, सप्तेन्द्रिया असंज्ञाभवः एकविकारभवः।
परिदेवः सनिदर्शनसप्रतिघम्, अनिदर्शनं पुनरेव सप्रतिघं उपादायेति।।
सङ्ग्रहीतेनासङ्ग्रहीतपदनिर्देशः

(हिन्दी)- सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१७७. जो सनिदर्शन धर्मों में स्कन्ध संग्रह से संग्रहीत है, किन्तु धातु संग्रह से और आयतन संग्रह से असंग्रहीत ...पू०.....वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में , आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१७८. जो धर्म सप्रतिघ धर्म में .... उपादान धर्मों स्कन्ध संग्रह जो धर्म संग्रह में संग्रहीत है, किन्तु धातु जो धर्म संग्रह और आयतन जो धर्म संग्रह में असंग्रहीत हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों में, कितने धातुओं में असंग्रहीत हैं? वे धर्म चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में , सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

दस आयतनों सत्रह धातुओं, सात इन्द्रिय असंज्ञाभव एकविकारभव।।
परिदेव सनिदर्शनसप्रतिघ, अनिदर्शन और फिर सप्रतिघ उपादा।।

****

३. ततियनयो

३. असङ्गहितेनसङ्गहितपदनिद्देसो

१७९. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा... समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८०. निरोधसच्चेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८१. जीवितिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे०... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

(सं.)-

३. तृतियनयः

३. असङ्ग्रहीतेनसङ्ग्रहीतपदनिर्देशः

१७९. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः... संज्ञास्कन्धेन ये धर्माः संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः.... समुदयसत्येन ये धर्माः.... मार्गसत्येन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८०. निरोधसत्येन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः. ...पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८१. जीवितेन्द्रियेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्गहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः...पू०... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- १७९. कितने स्कन्धों, कितने आयतनों, कितने धातुओं में वे धर्म संग्रहीत हैं, जो वेदनास्कन्ध.... संज्ञास्कन्ध.... संस्कारस्कन्ध.... समुदयसत्य.... मार्गसत्य धर्मों के साथ समान स्कन्ध में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु समान आयतन और समान धातु में संग्रहीत (सम्मिलित) है? वे धर्म असंस्कृत तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं, निर्वाण को छोड़कर।

१८०. निरोध सत्य से जो धर्म स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत है ...पू०..... वे धर्म चार स्कन्धों में, एक आयतन में एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८१. जीवितेन्द्रिय से जो धर्म स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत है ...पू०... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर दो स्कन्धों में, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८२. इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा... सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया सङ्खारेन ये धम्मा... सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा... वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन [उपादानपच्चया कम्मभवेन (स्या॰)] ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८३. जातिया ये धम्मा... जराय ये धम्मा... मरणेन ये धम्मा... झानेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे॰...

(सं.)- १८२. स्त्रीन्द्रियेन ये धर्माः.... पुरुषेन्द्रियेन ये धर्माः सुखेन्द्रियेन ये धर्माः.... दुःखेन्द्रियेन ये धर्माः.... सौमनस्येन्द्रियेन ये धर्माः...., दौर्मनस्येन्द्रियेन ये धर्माः...., उपेक्षेन्द्रियेन ये धर्माः.....। श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः.... वीर्येन्द्रियेण ये धर्माः..... स्मृतीन्द्रियेन ये धर्माः.... समाधीन्द्रियेन ये धर्माः...., प्रज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः.... अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेन ये धर्माः..... आज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः.... आज्ञातावीन्द्रियेन ये धर्माः..... अविद्यया ये धर्माः... अविद्याप्रत्ययात् संस्कारेण ये धर्माः....षडायतनप्रत्ययात् स्पर्शेण ये धर्माः.... स्पर्शप्रत्ययाद् वेदनया ये धर्माः... वेदनाप्रत्ययात् तृष्णया ये धर्माः... तृष्णाप्रत्ययात् उपादानेन ये धर्माः..... कर्मभवेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः ....पू॰.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८३. जात्या ये धर्माः.... जरया ये धर्माः... मरणेन ये धर्माः....ध्यानेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः...पू॰....

(हिन्दी)- १८२. जो धर्म स्त्री इन्द्रिय हैं ....पुरुष इन्द्रिय में जो धर्म.... सुख इन्द्रिय में जो धर्म.... दुख इन्द्रिय में जो धर्म.... सौमनस्य इन्द्रिय में जो धर्म.... दौर्मनस्य इन्द्रिय में जो धर्म.... उपेक्षा इन्द्रिय में जो धर्म.... श्रद्धा इन्द्रिय में जो धर्म.... वीर्य इन्द्रिय में जो धर्म.... स्मृति इन्द्रिय में जो धर्म.... समाधि इन्द्रिय में जो धर्म.... प्रज्ञा इन्द्रिय में जो धर्म.... अनाज्ञातं ज्ञास्यामि इन्द्रिय में जो धर्म.... आज्ञा इन्द्रिय में जो धर्म.... आज्ञाताविं इन्द्रिय में जो धर्म.... अविद्या में जो धर्म.... अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कार में जो धर्म.... षडायतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श में जो धर्म.... स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना में जो धर्म.... वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा में जो धर्म.... तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान में जो धर्म.... कर्मभव से जो धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत...पू॰... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर तीन स्कन्धों में, एक आयतन में एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८३. जो धर्म जन्म.... जरा.... .... मरण.... ध्यान के द्वारा संग्रहीत धर्म स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत (सम्मिलित) .....पू॰...

ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८४. सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा... उपायासेन ये धम्मा... सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा... अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा... फस्सेन ये धम्मा... वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... अधिमोक्खेन ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा... हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८५. अप्पच्चयेहि धम्मेहि ये धम्मा... असङ्खतेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८६. आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा...

(सं.)- ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८४. शोकेन ये धर्माः.... दुःखेन ये धर्माः.... दौर्मनस्येन ये धर्माः.... उपायासेन ये धर्माः..... स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः..... सम्यक् प्रधानेन ये धर्माः...अप्रमाण्येन ये धर्माः... पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः..... पञ्चभिः बलैः ये धर्माः... सप्तभिः बोध्यङ्गैः ये धर्माः... आर्येण अष्टाङ्गिकेन मार्गेण ये धर्माः..... स्पर्शेण ये धर्माः..... वेदनया ये धर्माः..... संज्ञया ये धर्माः..... चेतनया ये धर्माः..... अधिमोक्षेण ये धर्माः..... मनसिकारेन ये धर्माः.....हेतुभिः धर्मैः ये धर्माः..... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः..... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः ....पू..... ते धर्माः असङ्कृतं स्कन्धतः हित्वा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

१८५. अप्रत्ययैः धर्मैः ये धर्माः.... असंस्कृतैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः...पू॰..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८६. आस्रवधर्मैः ये धर्माः....आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च, धर्मैः ये धर्माः.....

(हिन्दी)-वे धर्म असंस्कृत स्कन्ध निर्वाण स्कन्ध को छोड़कर दो स्कन्धों में,एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८४. जो धर्म शोक से .... दुख .... दौर्मनस्य.... उपायास.... स्मृति प्रस्थान.... सम्यक् प्रधान.... अप्रमाण.... पाँच इन्द्रियाँ .... पाँच बल.... सात बोध्यंगों.... आर्य अष्टांगिकमार्ग .... स्पर्श .... वेदना .... संज्ञा .... चेतना .... अधिमोक्ष .... मनसिकार .... हेतु .... हेतु और सहेतुक .... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त से जो धर्म के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत हैं ...पू॰..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८५. जो धर्म अप्रत्यय धर्म से.... असंस्कृत धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत हैं ...पू॰..... वे धर्म चार स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु से संग्रहीत हैं।

१८६. जो धर्म आस्रव धर्मों से.... जो धर्म आस्रव और सास्रव धर्मों से....

आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८७. संयोजनेहि ... गन्थेहि... ओघेहि... योगेहि... नीवरणेहि... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि चेव परामट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१८८. चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे०... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

(सं.)- आस्रवैश्चैव आस्रवसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८७. संयोजनैः.... ग्रन्थैः ..... औघैः....योगैः..... नीवरणैः..... परामर्शधर्मैः ये धर्माः.... परामर्शैः चैव परामृष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१८८. चैतसिकैः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः..... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः..... चित्तसंसृष्टसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः..... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः। आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः....पू०..... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- आस्रव और आस्रवसम्प्रयुक्त संग्रह धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन और समान संग्रह धातु संग्रह में संग्रहीत ...पू०..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर तीन स्कन्धों में, एक आयतन में एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८७. जो धर्म संयोजन धर्मों से .... ग्रंथ....ओघ....योग.... नीवरण....परामर्श धर्म से जो धर्म परामर्श और परामृष्ट धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत... पू०.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर तीन स्कन्धों में, एक आयतन से एक धातु से संग्रहीत हैं।

१८८. जो धर्म चैतसिक धर्मों से .... चित्तसम्प्रयुक्त.... चित्तसंसृष्ट.... चित्तसंसृष्टसमुत्थान .... चित्तसंसृष्ट-समुत्थानसहभू धर्मों ....चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्ती धर्मों के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं। किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत...पू०..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं।

१८९. चित्तसहभूमि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे॰... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१९०. उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

तयो खन्धा तथा सच्चा, इन्द्रियानि च सोळस।
पदानि पच्चयाकारे, चुद्दसूपरि चुद्दस॥
समतिंस पदा होन्ति, गोच्छकेसु दसस्वथ।
दुवे चूळन्तरदुका [चुल्लन्तरदुका (सी॰)], अट्ठ होन्ति महन्तराति॥

असङ्गहितेनसङ्गहितपदनिद्देसो ततियो।

(सं.)- १८९. चित्तसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः ....पू०.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१९०. उपादानधर्मैः ये धर्माः..... क्लेशधर्मैः ये धर्माः..... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः.... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः..... क्लेशैश्चैव क्लेश सम्प्रयुक्तश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहता? ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

त्रयः स्कन्धा तथा सत्या, इन्द्रियाणि च षोडश।
पदानि प्रत्ययाकारे, चतुर्दश उपरि चतुर्दश।।
समत्रिंश पदा भवन्ति, गुच्छकेषु दशस्वथ।
द्वे चूल्लन्तरद्विका, अष्टौ भवन्ति महन्तरेति।। असङ्ग्रहीतेन सङ्ग्रहीतपदनिर्देशः तृतियः।

(हिन्दी)- १८९. जो धर्म चित्तसहभू धर्मों से .... चित्तानुपरिवर्ती धर्मो के साथ स्कन्ध संग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, किन्तु आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत हैं ...पू०..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर न किन्हीं स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं।

१९०. जो धर्म उपादानधर्मो से.... जो धर्म क्लेशधर्मो से.... जो धर्म क्लेशसांक्लेशिक धर्मो से.... जो धर्म क्लेशसंक्लिष्ट धर्मो से.... जो धर्म क्लेशसम्प्रयुक्तधर्मो से स्कन्ध संग्रह में असंग्रहीत, आयतन संग्रह में संग्रहीत और धातुसंग्रह में संग्रहीत है। वे धर्म कितनों स्कन्धों, कितने आयतनों, कितने धातुओं में संग्रहीत हैं? वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु में संग्रहीत हैं।

तीन स्कन्धों तथा सत्य, इन्द्रिय सोलह। पद प्रत्ययाकार चौदह, अतिरिक्त चौदह ।।
दस गुच्छकों में तीस पद हैं और क्षुद्रान्तर दो है, आठ महान्तर है।

****

४. चतुत्थनयो
४. सङ्गहितेनसङ्गहितपदनिद्देसो

१९१. समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

१९२. इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा... सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा...।

(सं.)- ४. चतुर्थनयः ४. सङ्ग्रहीतेन सङ्ग्रहीतपदनिर्देशः

१९१. समुदयसत्येन ये धर्माः....मार्गसत्येन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

१९२. स्त्रीन्द्रियेन ये धर्माः.... पुरुषेन्द्रियेन ये धर्माः.... सुखेन्द्रियेन ये धर्माः..... दुःखेन्द्रियेन ये धर्माः.... सौमनस्येन्द्रियेन ये धर्माः... दौर्मनस्येन्द्रियेन ये धर्माः.... उपक्षेन्द्रियेन ये धर्माः.... श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः..... वीर्येन्द्रियेण ये धर्माः..... स्मृतीन्द्रियेन ये धर्माः..... समाधीन्द्रियेन ये धर्माः..... पञ्चेन्द्रियेन ये धर्माः.... अनज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेन ये धर्माः.... आज्ञेन्द्रियेन धर्माः.....आज्ञातावीन्द्रियेन ये धर्माः....।

(हिन्दी)- १९१. कितने स्कन्धों, कितने आयतनों, कितनी धातुओं में वे धर्म संग्रहीत हैं, जो समुदयसत्य धर्मो.... मार्गसत्य धर्मों के रूप में स्कन्धो, आयतनो और धातुओं में संग्रहीत (सम्मिलित) हैं, जो समुदयसत्य धर्म, मार्गसत्य धर्म के रूप (स्कन्ध आयतन और धातु) में संग्रहीत हैं। एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में वे संग्रहीत हैं।

१९२. जो धर्म स्त्री इन्द्रिय (के साथ संग्रहीत) हैं....पुरुष इन्द्रिय .... सुख इन्द्रिय .... दुःख इन्द्रिय .... सौमनस्य इन्द्रिय.... दौर्मनस्य इन्द्रिय.... उपेक्षा इन्द्रिय.... श्रद्धा इन्द्रिय.... वीर्य इन्द्रिय.... स्मृति इन्द्रिय.... समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय.... अनाज्ञातं आज्ञाष्यामि इन्द्रिय.... आज्ञा इन्द्रिय.... आज्ञाताविं इन्द्रिय....।

अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया सङ्खारेन ये धम्मा... सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन ये धम्मा... सोकेन ये धम्मा... परिदेवेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा... उपायासेन ये धम्मा...। सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा... अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा... फस्सेन ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... अधिमोक्खेन ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा ...।

हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि... संयोजनेहि... गन्थेहि... ओघेहि... योगेहि... नीवरणेहि... परामासेहि... उपादानेहि... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता

(सं.)- अविद्यया ये धर्माः.... अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारेण ये धर्माः..... षडायतनप्रत्ययात् स्पर्शेण ये धर्माः..... वेदनाप्रत्ययात् तृष्णया ये धर्माः.... तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः.... कर्मभवेन ये धर्माः.... शोकेन ये धर्माः..... परिदेवेन ये धर्माः..... दुःखेन ये धर्माः..... दौर्मनस्येन ये धर्माः..... उपायासेन ये धर्माः.....। स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः..... सम्यक्प्रधानेन ये धर्माः.... अप्रमाण्येन ये धर्माः.... पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः..... पञ्चभिः बलैः ये धर्माः... सप्तभिः बोध्यङ्गैः ये धर्माः..... आर्येण अष्टाङ्गिकेन मार्गेण ये धर्माः... स्पर्शेण ये धर्माः... चेतनया ये धर्माः.... अधिमोक्षेन ये धर्माः..... मनसिकारेन ये धर्माः.....।

हेतुभिः धर्मैः ये धर्माः.... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः..... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः.... आस्रवैः... संयोजनैः... ग्रन्थैः ... ओघैः... योगैः... नीवरणैः... परामर्शैः..... उपादानैः.... क्लेशधर्मैः ये धर्माः.... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः..... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः.... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः

(हिन्दी)- जो धर्म अविद्या (के साथ संग्रहीत) हैं .... अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कार.... षडायतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श.... स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना.... वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा.... तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान .... कर्मभव .... शोक .... दुःख .... दौर्मनस्य .... उपायास .... स्मृति प्रस्थान .... सम्यक् प्रधान .... अप्रमाण.... पाँच इन्द्रियों .... पाँच बलों .... सात बोध्यंगों.... आर्य अष्टांगिकमार्ग.... स्पर्श .... चेतना.... अधिमोक्ष.... मनसिकार.... ।

जो धर्म हेतु (के साथ संग्रहीत) हैं.... हेतु और सहेतुक.... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त .... आस्रव.... संयोजन.... ग्रंथ.... ओघ.... योग.... नीवरण.... परामर्श.... उपादान.... क्लेश धर्म.... क्लेश सांक्लेशिक.... जो धर्म क्लेश, संक्लिष्ट.... क्लेश और क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत (सम्मिलित) हैं जो पुनः ....

आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता।

द्वे सच्चा पन्नरसिन्द्रिया, एकादस पटिच्चपदा।
उद्धं पुन एकादस, गोच्छकपदमेत्थ तिंसविधाति [तिंसविधन्ति (पी॰)]॥
सङ्गहितेनसङ्गहितपदनिद्देसो चतुत्थो।

(सं.)- आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः।

द्वे सत्ये पञ्चदशेन्द्रियानि एकादश प्रतीत्यपदा।
ऊर्ध्व पुन एकादश, गुच्छकपदमित्र त्रिंशविधाति।।
सङ्ग्रहीतेनसङ्गहितपदनिर्देशः चतुर्थः।

(हिन्दी)- स्कन्ध, आयतन और धातु में संग्रहीत है। वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों एवं कितनी धातुओं में संग्रहीत हैं? वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन से एक धातु से संग्रहीत हैं।

दो सत्य, पन्द्रह इन्द्रिय, एकादश प्रतिपदा।
ऊर्ध्व पुनः ग्यारह, गुच्छकपद तीस।।

****

५. पञ्चमनयो

५. असङ्गहितेनअसङ्गहितपदनिद्देसो

१९३. रूपक्खन्धेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि असङ्गहिता? ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१९४. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१९५. विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा... मनायतनेन ये धम्मा... चक्खुविञ्ञाणधातुया ये

(सं.)- ५. पञ्चमनयः ५. असङ्ग्रहीतेनअसङ्ग्रहीतपदनिर्देशः

१९३. रूपस्कन्धेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्मा स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभि धातुभिः असङ्ग्रहीताः? ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९४. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः.... संज्ञास्कन्धेन ये धर्म.... संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०.... ते धर्माः द्वाभ्यां स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९५. विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः..... मनायतनेन ये धर्माः... चक्षुर्विज्ञानधातुना ये

(हिन्दी)- १९३. जो धर्म रूपस्कन्ध के रूप में स्कन्धसंग्रह, आयतन संग्रह और धातु संग्रह में संग्रहीत (सम्मिलित) नहीं हैं, जो धर्म उन धर्मों के रूप में स्कन्धसंग्रह, आयतनसंग्रह और धातुसंग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, वे धर्म किन स्कन्धों, किन आयतनों और किन धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं? वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं।

१९४. जो धर्म वेदनास्कन्ध .... संज्ञास्कन्ध .... संस्कारस्कन्ध के रूप में स्कन्धसंग्रह, आयतनसंग्रह और धातुसंग्रह में संग्रहीत (सम्मिलित) नहीं हैं, वे धर्म किन स्कन्धों, किन आयतनों और किन धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं? वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं।

१९५. जो धर्म विज्ञानस्कन्ध.... मनायतन.... चक्षुर्विज्ञानधातु .... पू०....

धम्मा...पे०... मनोधातुया ये धम्मा... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... मनिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

१९६. चक्खायतनेन ये धम्मा...पे०... फोट्ठब्बायतनेन ये धम्मा... चक्खुधातुया ये धम्मा...पे०... फोट्ठब्बधातुया ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

१९७. धम्मायतनेन ये धम्मा... धम्मधातुया ये धम्मा... इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा... जीवितिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

१९८. समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा... निरोधसच्चेन ये धम्मा

(सं.)- धर्माः.... पू.... मनोधातुना ये धर्माः..... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः..... मनेन्द्रियेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९६. चक्ष्वायतनेन ये धर्माः.....पू०... स्प्रष्टव्यायतनेन ये धर्माः..... चक्षुधातुना ये धर्माः.....पू०.... स्प्रष्टव्यधातुना ये धर्माः.... स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९७. धर्मायतनेन ये धर्माः.....धर्मधातुना ये धर्माः..... स्त्रीन्द्रियेन ये धर्माः... पुरुषेन्द्रियेन ये धर्माः... जीवितेन्द्रियेन ये धर्माः...स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०....ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९८. समुदयसत्येन ये धर्माः.....मार्गसत्येन ये धर्माः.... निरोधसत्येन ये धर्माः

(हिन्दी)- मनोधातु.... मनोविज्ञानधातु .... मन इन्द्रिय के साथ स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं .... पू०.... वे धर्म चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं।

१९६. जो धर्म चक्षुआयतन.... स्प्रष्टव्यायतन.... चक्षुधातु.... स्प्रष्टव्यधातु के साथ स्कन्ध संग्रह में असंग्रहीत , आयतन संग्रह में असंग्रहीत और धातु संग्रह में असंग्रहीत है। वे धर्म (कितने धर्मों के साथ उनमें (स्कन्ध आयतन और धातु) में असंग्रहीत हैं, वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१९७. जो धर्म धर्मायतन .... धर्मधातु.... स्त्री इन्द्रिय.... पुरुष इन्द्रिय.... जीवितेन्द्रिय धर्मों (जीवन) के साथ स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत (असम्मिलित) हैं वे धर्म कितने धर्मों के साथ उनमें (स्कन्ध, आयतन और धातु) संग्रह में असंग्रहीत है। वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१९८. जो धर्म समुदयसत्य, मार्गसत्य और निरोधसत्य इन धर्मों

खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०...ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

१९९. चक्खुन्द्रियेन ये धम्मा...पे०... कायिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

२००. सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया सङ्खारेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०...

(सं.)- स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

१९९. चक्षुरिन्द्रियेन ये धर्माः.....पू०.....कायेन्द्रियेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः ....पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२००. सुखेन्द्रियेन ये धर्माः .....दुःखेन्द्रियेन ये धर्माः ..... सौमनस्येन्द्रियेन ये धर्माः .... दौर्मनस्येन्द्रियेन ये धर्माः... उपेक्षेन्द्रियेन ये धर्माः..... श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः..... वीर्येन्द्रियेण ये धर्माः .... स्मृतीन्द्रियेन ये धर्माः..... समाधीन्द्रियेन ये धर्माः ..... प्रज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः ..... अनज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेन, ये धर्माः..... आज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः..... आज्ञातावीन्द्रियेन ये धर्माः..... अविद्यया ये धर्माः.... अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारेण ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०.....

(हिन्दी)- के साथ किसी एक ही स्कन्ध संग्रह, एक ही आयतन संग्रह और एक ही धातु संग्रह में असंग्रहीत हैं, वे कितने स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं ...पू०..... वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं।

१९९. जो धर्म चक्षुइन्द्रिय ... कायेन्द्रिय इन धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में संग्रहीत नहीं हैं ...पू०.... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत नहीं हैं।

२००. जो धर्म सुख इन्द्रिय (असंग्रहीत) हैं .... दुःख इन्द्रिय .... सौमनस्य इन्द्रिय .... दौर्मनस्य इन्द्रिय.... उपेक्षा इन्द्रिय .... श्रद्धा इन्द्रिय.... वीर्य इन्द्रिय .... स्मृति इन्द्रिय .... समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय .... अनज्ञातमाज्ञाष्यामि इन्द्रिय .... आज्ञा इन्द्रिय .... आज्ञातावीन्द्रिय .... , अविद्या.... अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कार धर्मों के साथ (एक ही) स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं, जो पुनः उन्हीं धर्मों के साथ उनमें असंग्रहीत . ...पू०....

ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२०१. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

२०२. विञ्ञाणपच्चया नामरूपेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

२०३. नामरूपपच्चया सळायतनेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहिता।

२०४. सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा... वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन

(सं.)- ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०१. संस्कारप्रत्ययाद् विज्ञानेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०२. विज्ञानप्रत्ययाद् नामरूपेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः ...पू०... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०३. नामरूपप्रत्ययाद् षड़ायतनेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

२०४. षड़ायतनप्रत्ययाद् स्पर्शेण ये धर्माः...स्पर्शप्रत्ययाद् वेदनया ये धर्माः... वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णया ये धर्माः... तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः.... कर्मभवेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन

(हिन्दी)- यह धर्म इन धर्मों दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०१. संस्कार के कारण उत्पन्न विज्ञान किसी (एक ही) स्कन्ध, आयतन एवं धातु में इन धर्मों के साथ संग्रहीत नहीं है ...पू०..... ये धर्म चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०२. विज्ञान के कारण से उत्पन्न नामरूप किसी (एक ही) स्कन्ध, आयतन एवं धातु में इन धर्मों के साथ संग्रहीत नहीं है ...पू०.... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०३. नामरूप के कारण से उत्पन्न षड़ायतन से जो धर्मों के साथ उन्हीं स्कन्ध आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं जो पुनः उन्हीं धर्मों के साथ उनमें में असंग्रहीत...पू०... वे धर्म तीन स्कन्ध से, एक आयतन से एक धातु में असंग्रहीत हैं।

२०४. छः आयतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श....स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना....वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा....तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान एवं कर्मभव इन धर्मों के साथ किसी (एक ही) स्कन्ध,

असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२०५. अरूपभवेन ये धम्मा... नेवसञ्ञानासञ्ञाभवेन ये धम्मा ... चतुवोकारभवेन ये धम्मा... इद्धिपादेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२०६. असञ्ञाभवेन ये धम्मा... एकवोकारभवेन ये धम्मा... जातिया ये धम्मा... जराय ये धम्मा... मरणेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

२०७. परिदेवेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि

(सं.)- असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः ....पू०..... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०५. अरूपभवेन ये धर्माः..... नैवसंज्ञानासंज्ञाभवेन ये धर्माः.....चतुर्विकारभवेन ये धर्माः.....ऋद्धिपादेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०..... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०६. असंज्ञाभवेन ये धर्माः.... एकविकारभवेन ये धर्माः... जात्या ये धर्माः... जरया ये धर्माः... मरणेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः ....पू०....ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०७. परिदेवेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम्

(हिन्दी)- आयतन एवं धातु के साथ संग्रहीत नहीं है, जो धर्म उन धर्मों के रूप में स्कन्धसंग्रह, आयतनसंग्रह और धातुसंग्रह में संग्रहीत नहीं हैं, वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों एवं सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०५. जो धर्म अरूपभव.... नैवसंज्ञानासंज्ञाभव.... चार विकारभव (चार स्कन्धों वाला अस्तित्व) से जो धर्म.... ऋद्धिपाद के साथ किसी एक ही स्कन्ध, आयतन एवं धातु के साथ संग्रहीत नहीं है ...पू०..... यह धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों में दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०६. जो धर्म असंज्ञाभव .... एक विकारभव .... जन्म .... जरा .... मरण के साथ किसी एक ही स्कन्ध, आयतन एवं धातु के साथ संग्रहीत नहीं है ...पू० .... वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन से सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०७. जो धर्म परिदेव के साथ किसी एक ही स्कन्ध, आयतन एवं धातु के साथ संग्रहीत नहीं है ...पू०....

द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

२०८. सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा... उपायासेन ये धम्मा... सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा... झानेन ये धम्मा... अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा... फस्सेन ये धम्मा... वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... अधिमोक्खेन ये धम्मा ... मनसिकारेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२०९. चित्तेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ~~आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः~~ असङ्ग्रहीताः।

२०८. शोकेन ये धर्माः.... दुःखेन ये धर्माः....दौर्मनस्येन ये धर्माः....उपायासेन ये धर्माः.... स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः..... सम्यक्प्रधानेन ये धर्माः.... ध्यानेन ये धर्माः... अप्रमाण्येन ये धर्माः... पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः.... पञ्चबलैः ये धर्माः... सप्तबोध्यङ्गैः ये धर्माः..... आर्येण अष्टाङ्गिकेन मार्गेण ये धर्माः.... स्पर्शेण ये धर्माः... वेदनया ये धर्माः.... संज्ञया ये धर्माः....चेतनया ये धर्माः.... अधिमोक्षेन ये धर्माः.... मनसिकारेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०..... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२०९. चित्तेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों एवं आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०८. जो धर्म शोक .... दुख .... दौर्मनस्य .... उपायास .... स्मृतिप्रस्थान .... सम्यक्प्रधान .... ध्यान.... अप्रमाण .... पाँच इन्द्रियों .... पाँच बलों .... सात बोध्यंगों .... आर्य अष्टांगिक मार्ग .... स्पर्श .... वेदना .... संज्ञा .... चेतना .... अधिमोक्ष .... मनसिकार के साथ असंग्रहीत है ... पू०.... वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों एवं सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२०९. जो धर्म चित्त के साथ किसी एक ही स्कन्ध, आयतन एवं धातु के साथ असंग्रहीत हैं, किसी एक ही स्कन्ध, आयतन एवं धातु के साथ संग्रहीत नहीं है, जो धर्म उन धर्मों के रूप में ...पू०....वे धर्म चार स्कन्धों , ग्यारह आयतनों एवं ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

१. तिकं

२१०. कुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... अकुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... दुक्खाय वेद नाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... विपाकेहि धम्मेहि ये धम्मा... विपाकधम्मधम्मेहि ये धम्मा... अनुपादिन्नअनुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलिट्ठअसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... अवितक्कविचारमत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... आचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... अपचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... सेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... असेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... महग्गतेहि धम्मेहि ये धम्मा... अप्पमाणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परित्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... महग्गतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अप्पमाणारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... हीनेहि धम्मेहि ये धम्मा...

(सं.)- २१०. कुशलधर्मैः ये धर्माः .....अकुशलधर्मैः ये धर्माः... सुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः.... दुःखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः.... अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... विपाकधर्मैः ये धर्माः... विपाकधर्मधर्मैः ये धर्माः... अनुपादत्तानुपादनीयैः धर्मैः ये धर्माः... संक्लिष्टसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः.... असंक्लिष्टासंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः.... सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः.... अवितर्कविचारमात्रैः धर्मैः ये धर्माः... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः...उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः... दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः .... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः...दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः...भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः.... आचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः... अपचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः... शैक्ष्यैः धर्मैः ये धर्माः... अशैक्ष्यैः धर्मैः ये धर्माः... महद्गतैः धर्मैः ये धर्माः.... अप्रमाणैः धर्मैः ये धर्माः.... प्ररित्तालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः...महद्गतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... अप्रमाणालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... हीनधर्मैः ये धर्माः....

(हिन्दी)- २१०. जो धर्म कुशल (में असंग्रहीत हैं) ....अकुशल धर्मों....सुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों.... दुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों.... अदुखअसुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों.... विपाक धर्मों.... विपाक धर्म वाले धर्मों.... अनुपादिन्नअनुपादानीय धर्मों.... संक्लिष्टसंक्लेश धर्मों.... असंक्लिष्ट असंक्लेशीक धर्मों .... सवितर्कसविचार धर्मों.... अवितर्कविचारमात्र धर्मों.... प्रीतिसहगत धर्मों.... सुखसहगत धर्मों....उपेक्षासहगत धर्मों.... दर्शन द्वारा प्रहाण करने योग्य धर्मों.... भावना द्वारा प्रहाण करने योग्य धर्मों....दर्शन द्वारा प्रहाण करने योग्य हेतु वाले धर्मों....भावना द्वारा प्रहाण करने योग्य हेतु वाले धर्मों....आचयगामी (वे धम्म जो कर्म-संचय के कारण बनते हैं) धर्मों.... अपचयगामी धर्मों.... शैक्ष्य धर्मों.... अशैक्ष्य धर्मों.... महद्गत धर्मों.... अप्रमाण धर्मों....प्ररित्तालम्बन (मन की अवस्थाएँ वे जिनका आलम्बन अल्प आकार वाला हैं) धर्मों ....महद्गतालम्बन धर्मों....अप्रमाणालम्बन धर्मों.... हीन धर्मों....

पणीतेहि धम्मेहि ये धम्मा... मिच्छत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सम्मत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गाधिपतीहि धम्मेहि ये धम्मा... अतीतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनागतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... पच्चुपन्नारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... बहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तबहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२११. सनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

२. दुकं

२१२. हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता

(सं.)- प्रणीतधर्मैः ये धर्माः... मिथ्यात्वनियतैः धर्मैः ये धर्माः... सम्यकत्वनियतैः धर्मैः ये धर्माः.... मार्गालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... मार्गहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः... मार्गाधिपतिभिः धर्मैः ये धर्माः.... अतीतालम्बनैः धर्मैः ये.... अनागतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः.... प्रत्युत्पन्नालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः.... अध्यात्मालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... बाह्यालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः..... अध्यात्मबाह्यालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू॰.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२११. सनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः.... अनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू॰.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१२. हेतुधर्मैः ये धर्माः ..... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः.....स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः

(हिन्दी)- प्रणीत धर्मों.... मिथ्यात्वनियत धर्मों (जो निश्चयपूर्वक बुरे हैं).... सम्यकत्वनियत धर्मों.... मार्गालम्बन धर्मों.... मार्गहेतु धर्मों....मार्गाधिपति धर्मों....अतीतालम्बन धर्मों.... अनागतालम्बन धर्मों.... प्रत्युत्पन्नालम्बन धर्मों....आध्यात्मालम्बन धर्मों....बाह्यालम्बन (मन की वे अवस्थाएँ जिनका आलम्बन कोई बाहरी वस्तु हैं) धर्मों.... आध्यात्माबाह्यालम्बन धर्मों के साथ उन्हीं स्कन्ध आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं जो पुनः उन्हीं धर्मों के साथ उनमें में असंग्रहीत .... पू॰.... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२११. जो धर्म सनिदर्शनसप्रतिघ (वे धम्म जो दृश्य है और इन्द्रिय और उसके विषय के संनिकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं) धर्मों से.... अनिदर्शनसप्रतिघ धर्म से धर्मों के साथ जो धर्म किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं जो उन्हीं धर्मों के साथ...पू॰..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१२. जो धर्म हेतु धर्मों .... हेतु और सहेतुक धर्मों .... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं

धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२१३. सहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुसहेतुकेहि [न हेतू सहेतुकेहि (सी०), न हेतूहि सहेतुकेहि (स्या० क०)] धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२१४. अप्पच्चयेहि धम्मेहि ये धम्मा... असङ्खतेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२१५. सनिदस्सनेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू०.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१३. सहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः ... हेतुसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः.... सहेतुकैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः... हेतुसम्प्रयुक्तैश्चैव न च हेतुभिः धर्मैः ये धर्माः... न हेतुसहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः। आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः....पू०..... ते धर्माः... एतेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१४. अप्रत्ययधर्मैः ये धर्माः...असंस्कृतधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१५. सनिदर्शनैः धर्मैः ये धर्माः...सप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)-.... पू०.... वे धर्म दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१३. जो धर्म सहेतुक .... हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों....सहेतुक किन्तु स्वयं हेतु न बनाने वाले धर्मों.... हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों और स्वयं हेतु न बनाने वाले धर्मों.... न हेतुसहेतुक धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं, जो धर्म उन धर्मों के रूप में ...पू०.... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१४. जो धर्म अप्रत्यय धर्मों..... असंस्कृत धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं ...पू० ... वे धर्म दो स्कन्ध, ग्यारह आयतन और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१५. जो धर्म सनिदर्शन ....सप्रतिघ धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं ...पू०... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और आठ धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१६. रूपीहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

२१७. अरूपीहि धम्मेहि ये धम्मा... लोकुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२१८. आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२१९. अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि अनासवेहि धम्मेहि

(सं.)- २१६. रूपिधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१७. अरूपिधर्मैः ये धर्माः लोकोत्तरधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१८. आस्रवधर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च धर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव आस्रवसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकदशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२१९. अनास्रवैः धर्मैः ये धर्माः... आस्रवसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... आस्रवसम्प्रयुक्तैश्चैव न च आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः... आस्रवविप्रयुक्तैः अनास्रवैः धर्मैः

(हिन्दी)- २१६. जो धर्म रूपी धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, एक आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं ...पू॰.... वे धर्म एक स्कन्ध, आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१७. जो धर्म अरूपी धर्म से....लोकोत्तर धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं .... पू॰... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों में दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१८. जो धर्म आस्रव धर्मों.... जो धर्म आस्रव एवं सास्रव धर्मों....आस्रव एवं आस्रवसम्प्रयुक्त धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं .... पू॰.... वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२१९. जो धर्म आस्रवरहित धर्मों .... आस्रवसम्प्रयुक्त धर्मों .... आस्रवसम्प्रयुक्त एवं स्वयं आस्रव न होने वाले धर्मों .... आस्रवविप्रयुक्त अनास्रव धर्मों

ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२२०. संयोजनेहि धम्मेहि ये धम्मा... गन्थेहि धम्मेहि ये धम्मा... ओघेहि धम्मेहि ये धम्मा... योगेहि धम्मेहि ये धम्मा... नीवरणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि चेव परामट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२२१. अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामाससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासविप्पयुत्तेहि अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... सारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

२२२. अनारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... नो चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तविप्पयुत्तेहि

(सं.)- ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२०. संयोजनधर्मैः ये धर्माः...ग्रन्थधर्मैः ये धर्माः ..... ओघधर्मैः ये धर्माः... योगधर्मैः ये धर्माः... नीवरणधर्मैः ये धर्माः... परामर्शधर्मैः ये धर्माः..... परामर्शैश्चैव परामृष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२१. अपरामृष्टधर्मैः ये धर्माः..... परामर्शसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... परामर्शविप्रयुक्तैः अपरामृष्टैः धर्मैः ये धर्माः ..... सालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू०.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२२. अनालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः.... न चित्तधर्मैः ये धर्माः.... चित्तविप्रयुक्तैः

(हिन्दी)- के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं .... पू०.... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२०. जो धर्म संयोजन धर्मों .... ग्रंथी धर्मों.... ओघ ... योग .... नीवरण धर्मों .... परामर्श धर्मों.... परामर्श एवं परामृष्ठ धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं .... पू०.... वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२१. जो धर्म अपरामृष्ठ धर्मों (जो मिथ्या धारणाओं को पैदा करने वाली नहीं हैं) .... परामर्शसम्प्रयुक्त धर्मों (जो मिथ्या धारणाओं की सहचर हैं).... परामर्शविप्रयुक्त अपरामृष्ठ धर्मों .... सालम्बन धर्मों (जो धम्म किसी आलम्बन का सहारा लेकर पैदा होते हैं) के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं .... पू०.... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२२. जो धर्म अनालम्बन धर्मों .... न चित्तधर्म.... चित्तविप्रयुक्त

धम्मेहि ये धम्मा... चित्तविसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा... बाहिरेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादाधम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

२२३. चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

२२४. चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे॰...

(सं.)- धर्मैः ये धर्माः... चित्तविसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः... चित्तसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः.... बाह्यैः धर्मैः ये धर्माः..... उपादायधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू॰.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२३. चित्तधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू॰.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२४. चैतसिकैः धर्मैः ये धर्माः..... चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः.... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः....चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू॰....

(हिन्दी)- धर्म.... चित्तविसंसृष्ठ (जो चेतना से संसृष्ट नहीं हैं) धर्म.... चित्तसमुत्थान (जो चेतना के द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं) धर्म.... चित्तसहभू (जो चेतना की उत्पत्ति के साथ उत्पन्न होने वाले हैं) धर्म.... चित्तानुपरिवर्ति धर्म (जो चेतना के परिवर्तन के साथ परिवर्तित हो जाते हैं).... बाह्य धर्म... उपादा धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं .... पू॰.... वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन से और सात धातुओं से असंग्रहीत हैं।

२२३. जो धर्म चित्त से धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं जो उन्हीं धर्मों के साथ उनमें असंग्रहीत .... पू॰.... वे धर्म चार स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२४. जो धर्म चैतसिक धर्मों .... चित्तसम्प्रयुक्त धर्मों .... चित्तसंसृष्ट धर्मों (जो चेतना से संसृष्ट हैं).... चित्तसंसृष्ट एवं चित्त से उत्पन्न धर्मों .... चित्तसंसृष्ट एवं चित्त के साथ उत्पन्न होने वाले धर्मों.... चित्तसंसृष्ट एवं चित्त से उत्पन्न से अनुपरिवर्ति धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं

ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२२५. अज्झत्तिकेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहिता।

२२६. उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा...पे०... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

२२७. असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसविप्पयुत्तेहि असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि

(सं.)- ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२५. आध्यात्मिकैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू०.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

२२६. उपादानधर्मैः ये धर्माः... क्लेशधर्मैः ये धर्माः...क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः.... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः... पू०.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

२२७. असांक्लेशिकधर्मैः ये धर्माः..... संक्लिष्टैः धर्मैः ये धर्माः..... क्लेशसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः..... संक्लिष्टैः चैव न च, क्लेशधर्मैः ये धर्माः...क्लेशसम्प्रयुक्तैश्चैव न च क्लेशधर्मैः ये धर्माः... क्लेशविप्रयुक्तैः असांक्लेशिकधर्मैः ये धर्माः.... दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः

(हिन्दी)- .... पू०.... वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों से और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२५. जो धर्म अध्यात्मिक धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं .... पू०.... वे धर्म तीन स्कन्धों में, एक आयतन और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

२२६. जो धर्म उपादानभूत धर्मों.... क्लेश धर्मों (जो धम्म क्लेश (चित्त-मल-राग, द्वेष, मोहादि) - स्वरूप हैं) .... क्लेश धर्मों एवं सांक्लेशिक धर्मों (जो धम्म क्लेश पैदा करने वाले हैं)..... क्लेश धर्मों एवं संक्लिष्ट धर्मों .... क्लेश धर्मों और क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातु में असंग्रहीत हैं.... पू०.... वे धर्म दो स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

२२७. जो धर्म असांक्लेशिक धर्मों (में असंग्रहीत हैं) .... संक्लिष्ट धर्मों (जो धम्म क्लेशों से युक्त हैं) .... क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों (जो धम्म क्लेशों से संलग्न हैं).... संक्लिष्ट एवं अक्लेशभूत धर्मों.... क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों और स्वयं अक्लेशभूत धर्मों तथा .... क्लेशविप्रयुक्त एवं असांक्लेशिक धर्मों.... दर्शन द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्मों .... भावना या अभ्यास के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्मों....

ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पीतिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... न कामावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... रूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अरूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अपरियापन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... निय्यानिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... नियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा... सरणेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि असङ्गहिता? ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

रूपञ्च धम्मायतनं धम्मधातु, इत्थिपुमं जीवितं नामरूपं।
द्वे भवा जाति जरा मच्चुरूपं, अनारम्मणं नो चित्तं चित्तेन विप्पयुत्तं॥

(सं.)- ये धर्माः.... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः.... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकैः धर्मेभिः ये धर्माः..... भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मेभिः ये धर्मैः... सवितर्कैः धर्मैः ये धर्माः.... सविचारैः धर्मैः ये धर्माः... सप्रीतिकैः धर्मैः ये धर्माः.... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः.... सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः.... उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः.... न कामावचरैः धर्मैः ये धर्माः... रूपावचरैः धर्मैः ये धर्माः... अरूपावचरैः धर्मैः ये धर्माः.... अपर्यापन्नैः धर्मैः ये धर्माः... निर्याणिकैः धर्मैः ये धर्माः... नियतैः धर्मैः ये धर्माः... अनुत्तरैः धर्मैः ये धर्माः.... सरणैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, तैः धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसंग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः ते ये धर्माः एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

रूपञ्च धर्मायतनं धर्मधातु, स्त्रीपुमं जीवितं नामरूपम्।
द्वे भवा जाति जरा मृत्युरूपम्, अनालम्बनं न चित्तं चित्तेन विप्रयुक्तम्।।

(हिन्दी)- दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतुवाले धर्मों ....भावना के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतुवाले धर्मों... सवितर्क धर्मों.... सविचार धर्मों.... सप्रीति धर्मों.... प्रीतिसहगत धर्मों.... सुखसहगत धर्मों....उपेक्षा धर्मों.... न कामावचर धर्मों.... रूपावचर धर्मों .... अरूपावर धर्मों.... अपर्यापन्न धर्मों.... निर्यानिक धर्मों.... नियत धर्मों.... अनुत्तर धर्मों.... सरण धर्मों के साथ किसी एक स्कन्ध, आयतन और धातुओं में असंग्रहीत हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं में असंग्रहीत हैं? वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में संग्रहीत हैं।

रूप और धर्मायतन धर्मधातु, स्त्री पुरुष जीवित नामरूप।
दो भव जाति जरा मृत्युरूप, अनालम्बन न चित्त चित्त से विप्रयुक्त।।

विसंसट्ठं समुट्ठान-सहभु अनुपरिवत्ति।
बाहिरं उपादा द्वे, विसयो [द्वेवीसति (स्या॰)] एसनयो सुबुद्धो॥

असङ्गहितेनअसङ्गहितपदनिद्देसो पञ्चमो।

(सं.)- विसंसृष्टं समुत्थान-सहभु अनुपरिवर्ति।
बाह्यम् उपादान द्वे, विषये एषनयः सुबुद्धः।।

असङ्ग्रहीतेन असङ्ग्रहीतपदनिर्देशः पञ्चमः।

(हिन्दी)- विसंसृष्ठ समुत्थान सहभू अनुपरिवर्ति,
बाह्य उपादान दो विषय, यह पद्धति भाली भाँति जानी गई है।।

****

६. छट्ठनयो

६. सम्पयोगविप्पयोगपदनिद्देसो

१. खन्धो

२२८. रूपक्खन्धो कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्तोति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्तो? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२२९. वेदनाक्खन्धो... सञ्ञाक्खन्धो... सङ्खारक्खन्धो तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२३०. विञ्ञाणक्खन्धो तीहि खन्धेहि सम्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

(सं.)- ६. सम्प्रयोगविप्रयोगपदनिर्देशः

१. स्कन्धः

२२८. रूपस्कन्धः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्तो इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्तः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२२९. वेदनास्कन्धः.... संज्ञास्कन्धः.... संस्कारस्कन्धः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः, एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२३०. विज्ञानस्कन्धः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः कैश्चित् विप्रयुक्तः, एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद विप्रयुक्तः।

(हिन्दी)- २२८. कितने स्कन्धों, कितने आयतनों, कितनी धातुओं के साथ रूप स्कन्ध सम्प्रयुक्त (संयुक्त) हैं? किसी के साथ नहीं (क्योंकि अपने साथ वह संयुक्त नहीं हो सकता और अन्य धर्म मानसिक है)। आंशिक रूप से कितने से विप्रयुक्त (स्क., आ. और धा. के साथ रूपस्कन्ध संयुक्त नहीं) हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं के साथ विप्रयुक्त है, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२२९. वेदनास्कन्ध .... संज्ञास्कन्ध .... संस्कारस्कन्ध .... तीन स्कन्धों में, एक आयतन और सात धातुओं के साथ आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन, एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। यह कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से (आंशिक रूप में) विप्रयुक्त हैं, एक आयतन और एक धातु से आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३०. विज्ञानस्कन्ध तीन स्कन्धों में सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप में सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन में आंशिक रूप से, एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२. आयतनं

२३१. चक्खायतनं...पे°... फोट्ठब्बायतनं...पे°... सम्पयुत्तन्ति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्तं? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२३२. मनायतनं तीहि खन्धेहि सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

३. धातु

२३३. चक्खुधातु ...पे°... फोट्ठब्बधातु...पे°... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२३४. चक्खुविञ्ञाणधातु...पे°... मनोधातु... मनोविञ्ञाणधातु तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- २३१. चक्ष्वायतनं... पू०..... स्प्रष्टव्यायतनं...पू०..... सम्प्रयुक्तन्ति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्तम्? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्, एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२३२. मन आयतनं त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

३. धातु २३३. चक्षुधातु.....पू०..... स्प्रष्टव्यधातु....पू०..... सम्प्रयुक्ताः? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धभिः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः इति; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२३४. चक्षुर्विज्ञानधातु.....पू०..... मनोधातु.... मनोविज्ञानधातु त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- २३१. चक्षुआयतन.... स्प्रष्टव्यायतन.... सम्प्रयुक्त हैं? किसी से नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु से आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३२. मनायतन तीन स्कन्धों में सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। यह कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन, एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३३. चक्षुधातु.... स्प्रष्टव्यधातु.... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? किसी से नहीं हैं। कितनों में विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३४. चक्षुविज्ञानधातु....मनोधातु....मनोविज्ञानधातु तीन स्कन्धों में सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में यह आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है

४. सच्चादि

२३५. समुदयसच्चं... मग्गसच्चं तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तं; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२३६. निरोधसच्चं... चक्खुन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं... इत्थिन्द्रियं... पुरिसिन्द्रियं...पे०... सम्पयुत्तन्ति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्तं? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२३७. मनिन्द्रियं तीहि खन्धेहि सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२३८. सुखिन्द्रियं... दुक्खिन्द्रियं... सोमनस्सिन्द्रियं... दोमनस्सिन्द्रियं तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं।

(सं.)- २३५. समुदयसत्यं..... मार्गसत्यं त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तम्; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२३६. निरोधसत्यं..... चक्षुरिन्द्रियं ...पू०... कायेन्द्रियं..... स्त्रीन्द्रियं.... पुरुषेन्द्रियं.....पू०..... सम्प्रयुक्तन्ति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्तम्? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२३७. मन इन्द्रियं त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२३८. सुखेन्द्रियं..... दुःखेन्द्रियं.... सौमनस्येन्द्रियं.... दौर्मनस्येन्द्रियं त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्।

(हिन्दी)- २३५. समुदयसत्य..... मार्गसत्य तीन स्कन्धों में एक आयतन, एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३६. निरोधसत्य....चक्षुइन्द्रिय....कायइन्द्रिय.... स्त्री इन्द्रिय.... पुरुषेन्द्रिय.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों में, एक आयतन और सात धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३७. मनइन्द्रिय तीन स्कन्धों में सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों में और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३८. सुख इन्द्रिय.... दुःख इन्द्रिय.... सौमनस्य इन्द्रिय .... दौर्मनस्य इन्द्रिय तीन स्कन्धों में एक आयतन में और एक धातु में सम्प्रयुक्त हैं;

कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२३९. उपेक्खिन्द्रियं तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन छहि धातूहि सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२४०. सद्धिन्द्रियं... वीरियिन्द्रियं... सतिन्द्रियं... समाधिन्द्रियं... पञ्ञिन्द्रियं... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं... अञ्ञिन्द्रियं... अञ्ञाताविन्द्रियं... अविज्जा... अविज्जापच्चया सङ्खारा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२४१. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं तीहि खन्धेहि सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तं;

(सं.)- कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२३९. उपेक्षेन्द्रियं त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन षड्भिः धातुभिः सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२४०. श्रद्धेन्द्रियं... वीर्येन्द्रियं... स्मृतीन्द्रियं... समाधीन्द्रियं.... प्रज्ञेन्द्रियं.... अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियं..... आज्ञेन्द्रियं..... आज्ञातावीन्द्रियं.... अविद्या..... अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ता; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२४१. संस्कारप्रत्ययाद् विज्ञानं त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनेन दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्;

(हिन्दी)- वे एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों में विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२३९. उपेक्षा इन्द्रिय तीन स्कन्धों, एक आयतन और छह धातुओं में सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों में विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन, एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४०. श्रद्धा इन्द्रिय....वीर्येन्द्रिय.... स्मृति इन्द्रिय....समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय.... अनाज्ञातं आज्ञास्यामिन्द्रिय.... आज्ञा इन्द्रिय.... आज्ञातावीन्द्रिय.... अविद्या .... अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कार तीन स्कन्धों में, एक आयतन में और एक धातु में संग्रहीत हैं; एक स्कन्ध में, एक आयतन में और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों में विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और सोलह धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन में और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४१. संस्कार के कारण से उत्पन्न विज्ञान तीन स्कन्धों में सम्प्रयुक्त है, एक आयतन में और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों में विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में विप्रयुक्त हैं;

एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२४२. सळायतनपच्चया फस्सो तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्तो; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२४३. फस्सपच्चया वेदना तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२४४. वेदनापच्चया तण्हा... तण्हापच्चया उपादानं... कम्मभवो तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तो; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

(सं.)- एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२४२. षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्तः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः इति। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२४३. स्पर्शप्रत्ययाद् वेदना त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२४४. वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णा.....तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानं..... कर्मभवः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

(हिन्दी)- एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४२. छह आयतनों के कारण से उत्पन्न स्पर्श तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं के साथ सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों में और दस धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन, एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४३. स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना तीन स्कन्धों में, एक आयतन और सात धातुओं के साथ सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४४. वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा.... तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान.... कर्मभव तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु के साथ सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों में विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध में, दस आयतनों में और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन , एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४५. रूपभवो...पे°... सम्पयुत्तोति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्तो? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि तीहि धातूहि विप्पयुत्तो।

२४६. अरूपभवो... नेवसञ्ञानासञ्ञाभवो... चतुवोकारभवो...पे°... सम्पयुत्तोति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२४७. असञ्ञाभवो... एकवोकारभवो... परिदेवो...पे°... सम्पयुत्तोति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्तो? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२४८. सोको... दुक्खं... दोमनस्सं तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

(सं.)- २४५. रूपभवः.... पू०.... सम्प्रयुक्तो इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्तः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः त्रिभिः धातुभिः विप्रयुक्तः।

२४६. अरूपभव.... नैवसंज्ञानासंज्ञाभवः..... चतुर्विकारभवः ...पू०... सम्प्रयुक्तो इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२४७. असंज्ञाभवः...एकविकारभवः..... परिदेवः.....पू०..... सम्प्रयुक्तः? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्तः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२४८. शोकः..... दुःखं.....दौर्मनस्यं त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

(हिन्दी)- २४५. रूपभव...पू०..... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों , न किन्ही आयतनों और तीन धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२४६. अरूपभव..... नैवसंज्ञानासंज्ञाभव .....चारविकारभव...पू०..... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४७. असंज्ञाभव.....एकविकारभव..... परिदेव ...पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४८. शोक.... दुःख.... दौर्मनस्य तीन स्कन्धों में, एक आयतन और एक धातु के साथ सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२४९. उपायासो... सतिपट्ठानं... सम्मप्पधानं तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तं; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२५०. इद्धिपादो द्वीहि खन्धेहि सम्पयुत्तो; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२५१. झानं द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तं; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

२५२. अप्पमञ्ञा... पञ्चिन्द्रियानि... पञ्च बलानि... सत्त बोज्झङ्गा... अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्तो; एकेन खन्धेन

(सं.)- २४९. उपायास: .... स्मृतिप्रस्थानं... सम्यक् प्रधानं त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तम्; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२५०. ऋद्धिपादः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् सम्प्रयुक्तः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२५१. ध्यानं द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तम्; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

२५२. अप्रमाण्यं ... पञ्चेन्द्रियानि.... पञ्च बलानि.... सप्त बोध्यङ्गानि... आर्यः अष्टांगिकः मार्गः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्तः ; एकेन स्कन्धेन

(हिन्दी)- २४९. उपायास....स्मृतिप्रस्थान.... सम्यक् प्रधान तीन स्कन्धों में एक आयतन और एक धातु के साथ सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं के साथ विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५०. ऋद्धिपाद दो स्कन्धों में सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५१. ध्यान दो स्कन्धों में एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में , सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५२. अप्रमाण (ब्रह्मविहार)....पांच इन्द्रियाँ.... पांच बल....सात बोध्यंग..... आर्य अष्टांगिक मार्ग तीन स्कन्धों में, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध ,

एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२५३. फस्सो ... चेतना... मनसिकारो तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्तो; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

२५४. वेदना... सञ्ञा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२५५. चित्तं तीहि खन्धेहि सम्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तं। कतिहि विप्पयुत्तं? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्तं; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तं।

(सं.)- एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२५३. स्पर्शः.....चेतना.....मनसिकारः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्तः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनेन दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

२५४. वेदना... संज्ञा त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२५५. चित्तं त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तम्। कतिभिः विप्रयुक्तम्? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्तम्; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तम्।

(हिन्दी)- एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५३. स्पर्श...चेतना.... मनसिकार तीन स्कन्धों में एक आयतन से, सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५४. वेदना... संज्ञा तीन स्कन्धों में, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५५. चित्त तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध , दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५६. अधिमोक्खो तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन द्वीहि धातूहि सम्पयुत्तो; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्तो। कतिहि विप्पयुत्तो? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्तो; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्तो।

५. तिकं

२५७. कुसला धम्मा... अकुसला धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२५८. सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा... दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२५९. अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता;

(सं.)- २५६. अधिमोक्षः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन द्वाभ्यां धातुभ्यां सम्प्रयुक्तः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्तः। कतिभिः विप्रयुक्तः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः विप्रयुक्तः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्तः।

५. त्रिकं

२५७. कुशला धर्माः.... अकुशला धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२५८. सुखवेदनया सम्प्रयुक्ताः धर्माः.... दुःखवेदनया सम्प्रयुक्ताः धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२५९. अदुःखासुखवेदनया सम्प्रयुक्ताः धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः;

(हिन्दी)- २५६. अधिमोक्ष तीन स्कन्धों, एक आयतन और दो धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध , एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में , पन्द्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५७. कुशल धर्म.... अकुशल धर्म कितने स्कन्धों में कितने आयतनों और कितने धातुओं के साथ सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध , दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५८. सुख वेदना के साथ सम्प्रयुक्त धर्म..... दुःख वेदना के साथ सम्प्रयुक्त धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध , दस आयतनों और पन्द्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२५९. अदुःखअसुख वेदना के साथ सम्प्रयुक्त धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त है;

एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२६०. विपाका धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२६१. विपाकधम्मधम्मा... संकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२६२. नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा... अनुपादिन्नुपादानिया धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२६३. अनुपादिन्नअनुपादानिया धम्मा... असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

(सं.)- एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२६०. विपाकधर्माः.....पू॰.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः, एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२६१. विपाकधर्मधर्माः.....संक्लिष्टसंक्लेशिकाः धर्माः ...पू॰.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२६२. नैवविपाकनविपाकधर्मधर्माः .....अनुपादत्तानुपादानीया धर्माः .... पू॰....सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२६३. अनुपादत्त अनुपादनीया धर्माः.... असंक्लिष्टसंक्लेशिकाः धर्माः .... पू॰... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६०. विपाक धर्म.... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६१. विपाकधर्म (विपाक स्वभाव वाले धर्म).... संक्लिष्टसांक्लेशिक धर्म.... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६२. न विपाक धर्म न विपाक स्वभाव वाले धर्म.... अनुपादिन्नुपादनीय धर्म .... पू॰...सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों , न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२६३. अनुपादिन्न एवं अनुपादनीय धर्म.... असंक्लिष्टअसांक्लेशिक धर्म .... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२६४. सवितक्कसविचारा धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२६५. अवितक्कविचारमत्ता धम्मा... पीतिसहगता धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२६६. अवितक्कअविचारा धम्मा...पे॰... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

२६७. सुखसहगता धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- २६४. सवितर्कसविचारा धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२६५. अवितर्कविचारमात्रकाः धर्माः..... प्रीतिसहगता धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२६६. अवितर्काविचारा धर्माः....पू॰..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

२६७. सुखसहगता धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- २६४. सवितर्क सविचार धर्म एक स्कन्ध से एक आयतन से एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६५. अवितर्कविचारमात्र धर्म.... प्रीतिसहगत धर्म एक स्कन्ध से एक आयतन से एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६६. अवितर्क अविचार धर्म.... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों से और एक धातु से विप्रयुक्त हैं।

२६७. सुखसहगत धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६८. उपेक्खासहगता धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२६९. दस्सनेन पहातब्बा धम्मा भावनाय पहातब्बा धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा... आचयगामिनो धम्मा... अपचयगामिनो धम्मा... सेक्खा धम्मा... असेक्खा धम्मा... महग्गता धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२७०. अप्पमाणा धम्मा... पणीता धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२७१. परित्तारम्मणा धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- २६८. उपेक्षासहगता धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२६९. दर्शनेन प्रहातव्याः धर्माः भावनया प्रहातव्याः धर्माः... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकाः धर्माः... भावनया प्रहातव्यहेतुकाः धर्माः..... आचयगामिनः धर्माः... अपचयगामिनः धर्माः.... शैक्ष्याः धर्माः..... अशैक्ष्याः धर्माः..... महद्गता धर्माः..... पू॰... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२७०. अप्रमाणा धर्माः..... प्रणीता धर्माः.....पू॰..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२७१. प्ररित्तालम्बनाः धर्माः... पू॰... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- २६८. उपेक्षासहगत धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२६९. दर्शन द्वारा प्रहाण होने योग्य धर्म, भावना द्वारा प्रहाण होने योग्य धर्म....दर्शन द्वारा प्रहाण होने योग्य हेतु धर्म....भावना द्वारा प्रहाण होने योग्य हेतु धर्म....आचयगामी धर्म.... अपचयगामी द्वारा प्रहाण होने धर्म.... शैक्ष्य धर्म.... अशैक्ष्य धर्म.... महद्गत धर्म.... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२७०. अप्रमाण धर्म ..... प्रणीत धर्म.... पू॰....सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२७१. प्ररित्तालम्बन धर्म.... पू॰....सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२७२. महग्गतारम्मणा धम्मा... अप्पमाणारम्मणा धम्मा... हीना धम्मा... मिच्छत्तनियता धम्मा... सम्मत्तनियता धम्मा... मग्गारम्मणा धम्मा... मग्गहेतुका धम्मा... मग्गाधिपतिनो धम्मा...पे०... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२७३. अनुप्पन्ना धम्मा...पे०... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२७४. अतीतारम्मणा धम्मा...पे०... अनागतारम्मणा धम्मा...पे०... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२७५. पच्चुप्पन्नारम्मणा धम्मा... अज्झत्तारम्मणा धम्मा... बहिद्धारम्मणा धम्मा... अज्झत्तबहिद्धारम्मणा धम्मा...पे०... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- २७२. महद्गतालम्बनाः धर्माः... अप्रमाणालम्बनाः धर्माः.....हीनधर्माः... मिथ्यात्वनियताः धर्माः... सम्यक्त्वनियताः धर्माः..... मार्गालम्बनाः धर्माः... मार्गहेतुकाः धर्माः.... मार्गाधिपतयः धर्माः ...पू०... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२७३. अनुत्पन्नाः धर्माः.....पू०..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२७४. अतीतालम्बनाः धर्माः....पू०..... अनागतालम्बनाः धर्माः .....पू०..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२७५. प्रत्युत्पन्नालम्बनाः धर्माः..... अध्यात्मावलम्बनाः धर्माः... बाह्यालम्बनाः धर्माः... अध्यात्मबाह्यालम्बनाः धर्माः... पू०... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- २७२. महद्गत आलम्बन वाले धर्म..... अप्रमाणालम्बन वाले धर्म.... हीन धर्म.... मिथ्यात्वनियत धर्म.... सम्यकत्वनियत धर्म....मार्गालम्बन धर्म.... मार्गहेतु धर्म....मार्गाधिपति धर्म.... पू०....सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२७३.अनुत्पन्न धर्म.... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों से और पाँच धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२७४. अतीतालम्बन धर्म.... अनागतालम्बन धर्म.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों , सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२७५. प्रत्युत्पन्नालम्बन धर्म....आध्यात्मालम्बन धर्म.... बाह्य आलम्बन वाले धर्म.... आध्यात्मबाह्यालम्बन धर्म.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और

२७६. सनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा... अनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा...पे०... सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

६. दुकं

२७७. हेतू धम्मा... हेतू चेव सहेतुका च धम्मा... हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुना सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुना केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२७८. सहेतुका धम्मा... हेतुसम्पयुत्ता धम्मा...पे०... सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२७९. सहेतुका चेव न च हेतू धम्मा... हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतू धम्मा...

(सं.)- २७६. सनिदर्शनसप्रतिघाः धर्माः.... अनिदर्शनसप्रतिघाः धर्माः ....पू०.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

६. दुकं २७७. हेतुधर्माः... हेतवः चैव सहेतुकाश्च धर्माः.... हेतवः चैव हेतुसम्प्रयुक्ताश्च धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२७८. सहेतुकाः धर्माः ..... हेतुसम्प्रयुक्ताः धर्माः ....पू०.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२७९. सहेतुकाश्चैव न च हेतवः धर्माः ..... हेतुसम्प्रयुक्ताश्चैव न च हेतवः धर्माः ....

(हिन्दी)- दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२७६. सनिदर्शन और सप्रतिघ धर्म..... अनिदर्शन और सप्रतिघ धर्म ... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२७७. हेतु धर्म .....हेतु और सहेतुक धर्म..... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

२७८. सहेतुक धर्म.....हेतुसम्प्रयुक्त धर्म... पू०....सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२७९. सहेतुक और स्वयं अहेतुभूत धर्म..... हेतुसम्प्रयुक्त और अहेतुभूत धर्म....

न हेतुसहेतुका धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२८०. अप्पच्चया धम्मा... असङ्खता धम्मा... सनिदस्सना धम्मा... सप्पटिघा धम्मा... रूपिनो धम्मा...पे॰... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२८१. लोकुत्तरा धम्मा...पे॰... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२८२. आसवा धम्मा... आसवा चेव सासवा च धम्मा... आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- न हेतुसहेतुकाः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२८०. अप्रत्ययाः धर्माः .... असंस्कृता धर्माः ..... सनिदर्शनाः धर्माः ... सप्रतितिघाः धर्माः ..... रूपिनः धर्माः ... पू०... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२८१. लोकोत्तरा धर्माः ... पू०.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२८२. आस्रवाः धर्माः ... आस्रवाः चैव सास्रवाः च धर्माः ... आस्रवाः चैव आस्रवसम्प्रयुक्ताः च धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- न अहेतुभूत और न सहेतुक धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८०. अप्रत्यय धर्म..... असंस्कृत धर्म.... सनिदर्शन धर्म.... सप्रतिघ धर्म.... रूपिधर्म ... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं । कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों में, एक आयतन से और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८१. लोकोत्तर धर्म .... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं । कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों से और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२८२. आस्रव धर्म ... आस्रव और सास्रव धर्म ... आस्रव और आस्रव सम्प्रयुक्त तीन स्कन्धों में, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों से और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८३. अनासवा धम्मा... आसवविप्पयुत्ता अनासवा धम्मा...पे०... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२८४. आसवसम्पयुत्ता धम्मा...पे०... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२८५. आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवा धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२८६. संयोजना धम्मा... गन्था धम्मा... ओघा धम्मा... योगा धम्मा... नीवरणा धम्मा... परामासा धम्मा... परामासा चेव परामट्ठा च धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- २८३. अनास्रवाः धर्माः... आस्रवविप्रयुक्ताः अनास्रवाः धर्माः.... पू०..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२८४. आस्रवसम्प्रयुक्ताः धर्माः... पू०.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशाभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२८५. आस्रवसम्प्रयुक्ताश्चैव न च आस्रवाः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२८६. संयोजनाः धर्माः.... ग्रन्थाः धर्माः.... ओघाः धर्माः... योगाः धर्माः...नीवरणाः धर्माः..... परामर्शाः धर्माः.... परामर्शाः चैव परामृष्टाः च धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- २८३. अनास्रव धर्म.... आस्रवविप्रयुक्त अनास्रव धर्म.... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२८४. आस्रवसम्प्रयुक्त धर्म ... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८५. आस्रवसम्प्रयुक्त धर्म और अनास्रव धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८६. संयोजन धर्म .... ग्रंथ धर्म .... ओघ धर्म .... योग धर्म .... नीवरण धर्म .... परामर्श धर्म .... परामर्श और परामृष्ट धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८७. अपरामट्ठा धम्मा... परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठा धम्मा सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२८८. परामाससम्पयुत्ता धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२८९. सारम्मणा धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९०. अनारम्मणा धम्मा... चित्तविप्पयुत्ता धम्मा... चित्तविसंसट्ठा धम्मा... उपादा धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९१. चित्ता धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि

(सं.)- २८७. अपरामृष्टाः धर्माः..... परामर्शविप्रयुक्ताः अपरामृष्टाः धर्माः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भि धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२८८. परामर्शसम्प्रयुक्ताः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२८९. सालम्बनाः धर्माः... पू॰.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९०. अनालम्बनाः धर्माः... चित्तविप्रयुक्ताः धर्माः.... चित्तविसंसृष्टाः धर्माः....उपादायधर्माः ... पू॰ .... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९१. चित्तधर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित्

(हिन्दी)- २८७. अपरामृष्ट धर्म.... परामर्शविप्रयुक्त अपरामृष्ट धर्म सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२८८. परामर्शसम्प्रयुक्त धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२८९. सालम्बन धर्म ... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९०. अनालम्बन धर्म....चित्तविप्रयुक्त धर्म.... चित्तविसंसृष्ट धर्म....उपादा धर्म ... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९१. चित्त धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से

सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९२. चेतसिका धम्मा... चित्तसम्पयुत्ता धम्मा... चित्तसंसट्ठा धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९३. अनुपादिन्ना धम्मा...पे°... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२९४. उपादाना धम्मा... किलेसा धम्मा... किलेसा चेव संकिलेसिका च धम्मा... किलेसा चेव संकिलिट्ठा च धम्मा... किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि

(सं.)- सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९२. चैतसिकाः धर्माः.... चित्तसम्प्रयुक्ताः धर्माः... चित्तसंसृष्टाः धर्माः... चित्तसंसृष्टसमुत्थानाः धर्माः... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभुवः धर्माः... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिनः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९३. अनुपादिन्नाः धर्माः .... पू°.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२९४. उपादानाः धर्माः ... क्लेशाः धर्माः.... क्लेशाश्चैव संक्लेशिकाः च धर्माः .... क्लेशाश्चैव संक्लिष्टा च धर्माः... क्लेशाश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्ताः च धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः, एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः

(हिन्दी)- सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९२. चैतसिक धर्म....चित्तसम्प्रयुक्त धर्म.... चित्तसंसृष्ट धर्म.... चित्तसंसृष्टसमुत्थान धर्म.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभू धर्म.... चित्तसंसृष्टसमुत्थान अनुपरिवर्ती धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९३. अनुपादिन्न धर्म.... पू°.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२९४. उपादान धर्म.... क्लेश धर्म.... क्लेश और सांक्लेशिक धर्म.... क्लेश और संक्लिष्ट धर्म.... क्लेश और क्लेश सम्प्रयुक्त धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से

विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९५. असंकिलेसिका धम्मा... किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिका धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तातिति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

२९६. संकिलिट्ठा धम्मा... किलेससम्पयुत्ता धम्मा...पे॰... सम्पयुत्तातिति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९७. संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसा धम्मा... किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसा धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९८. दस्सनेन पहातब्बा धम्मा... भावनाय पहातब्बा धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुका

(सं.)- विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९५. असंक्लेशिकाः धर्माः.... क्लेशविप्रयुक्ताः असंक्लेशिकाः धर्माः ... पू॰... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

२९६. संक्लिष्टाः धर्माः..... क्लेशसम्प्रयुक्ताः धर्माः ...पू॰..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९७. संक्लिष्टाः चैव न च क्लेशाः धर्माः ... क्लेशसम्प्रयुक्ताः चैव न च क्लेशाः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनेन षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९८. दर्शनेन प्रहातव्याः धर्माः... भावनया प्रहातव्याः धर्माः.... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकाः

(हिन्दी)- विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९५. असांक्लेशिक धर्म.... क्लेशविप्रयुक्त असांक्लेशिक धर्म .... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

२९६. संक्लिष्ट धर्म (जो धर्म क्लेशों से युक्त हैं) ....क्लेशसम्प्रयुक्त धर्म.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९७. संक्लिष्ट धर्म और अक्लेशभूत धर्म..... क्लेशसम्प्रयुक्त धर्म और अक्लेशभूत धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९८. दर्शन के द्वारा प्रहाण होने योग्य धर्म....भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण होने योग्य धर्म....

धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२९९. सवितक्का धम्मा... सविचारा धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३००. अवितक्का धम्मा... अविचारा धम्मा...पे॰... सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

३०१. सप्पीतिका धम्मा... पीतिसहगता धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३०२. सुखसहगता धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि

(सं.)- धर्माः... भावनया प्रहातव्यहेतुकाः धर्माः... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

२९९. सवितर्काः धर्माः...सविचाराः धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३००. अवितर्काः धर्माः.... अविचाराः धर्माः....पू॰..... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

३०१. सप्रीतिकाः धर्माः ... प्रीतिसहगताः धर्म एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३०२. सुखसहगताः धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित्

(हिन्दी)- दर्शन के द्वारा प्रहाण होने योग्य हेतु धर्म....भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण होने योग्य हेतु धर्म....सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

२९९. सवितर्क धर्म.... सविचार धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३००. अवितर्क धर्म....अविचार धर्म.... पू॰.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और एक धातु से विप्रयुक्त हैं।

३०१. सप्रीतिक धर्म.... प्रीतिसहगत धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३०२. सुखसहगत धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से

सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३०३. उपेक्खासहगता धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३०४. न कामावचरा धम्मा... अपरियापन्ना धम्मा... अनुत्तरा धम्मा...पे०... सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३०५. रूपावचरा धम्मा... अरूपावचरा धम्मा... निय्यानिका धम्मा... नियता धम्मा... सरणा धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्तााति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता। धम्मायतनं धम्मधातु, दुक्खसच्चं च जीवितं।

(सं.)- सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३०३. उपेक्षासहगता धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३०४. न कामावचराः धर्माः..... अपर्यापन्नाः धर्माः... अनुत्तराः धर्माः... पू०.... सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३०५. रूपावचराः धर्माः.... अरूपावचराः धर्माः..... निर्याणिकाः धर्माः... नियताः धर्माः...सरणाः धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

धर्मायतनं धर्मधातुः, दुःखसत्यञ्चं जीवितम्।

(हिन्दी)- सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३०३. उपेक्षासहगत धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३०४. न कामावचर धर्म.... अपर्यापन्न धर्म....अनुत्तर धर्म.... पू०.... सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातु से विप्रयुक्त हैं।

३०५. रूपावचर धर्म.... अरूपावचर धर्म.... निर्यानिक धर्म .... नियत धर्म.... सरण धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

धर्मायतन धर्मधातु, दुःखसत्य और जीवित इन्द्रिय।

सळायतनं नामरूपं, चत्तारो च महाभवा॥
जाति जरा च मरणं, तिकेस्वेकूनवीसति।
गोच्छकेसु च पञ्ञास, अट्ठ चूळन्तरे पदा॥
महन्तरे पन्नरस, अट्ठारस ततो परे।
तेवीस पदसतं एतं, सम्पयोगे न लब्भतीति॥

सम्पयोगविप्पयोगपदनिद्देसो छट्ठो।

(सं.)- षडायतनं नामरूपम्, चत्वारश्च महाभवाः।।
जाति जरा च मरणम्, त्रिकेश्वेकोनविंशति।
गुच्छकेषु च पञ्चदश, अष्टाचूलान्तरे पदा।।
महन्तरे पञ्चदश, अष्टादश ततः परे।
त्रिविंशति पदशतम् एतत्, सम्प्रयोगे न लभ्यते इति।।

सम्प्रयोगविप्रयोगपदनिर्देशः षष्टः।

(हिन्दी)- षड़ायतन नामरूप और चार महाभव।।
जाति, जरा और मरण, उन्निस त्रिक मातृकाओं।।
और प्रज्ञा के गुच्छकों में पचास, आठ क्षुद्रकान्तर पद ।।
पंद्रह महान्तर और अठारह पद उसके आगे।
ये एक सौ तेइस पद, सम्प्रयोगों में प्राप्त नहीं हैं।।

****

७. सत्तमनयो

७. सम्पयुत्तेनविप्पयुत्तपदनिद्देसो

३०६. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा... विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा... मनायतनेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि विप्पयुत्ता? ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३०७. चक्खुविञ्ञाणधातुया ये धम्मा...पे०... मनोधातुया ये धम्मा... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

३०८. मनिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३०९. उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

(सं.)- ७. सप्तमनयः ७. सम्प्रयुक्तेन विप्रयुक्तपदनिर्देशः

३०६. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः..... संज्ञास्कन्धेन ये धर्माः..... संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः... विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः.... मनः आयतनेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः? ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३०७. चक्षुर्विज्ञानधातुना ये धर्माः...पू०..... मनोधातुना ये धर्माः... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

३०८.मन इन्द्रियेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३०९.. उपेक्षेन्द्रियेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३०६. जो धर्म वेदना स्कन्ध.... संज्ञास्कन्ध....संस्कारस्कन्ध....विज्ञानस्कन्ध और मनायतन से सम्प्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से विप्रयुक्त हैं? वे धर्म चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं, एक आयतन और एक धातु से वे आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३०७. जो धर्म चक्षुविज्ञानधातु से.... पू०.... मनोधातु....मनोविज्ञानधातु से जो धर्म सम्प्रयुक्त हैं , उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और एक धातु से विप्रयुक्त हैं।

३०८. जो धर्म मन इन्द्रिय से सम्प्रयुक्त हैं , उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं.... वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३०९. जो धर्म उपेक्षा इन्द्रिय से सम्प्रयुक्त हैं , उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

३१०. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणेन ये धम्मा... सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा... फस्सेन ये धम्मा... वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... चित्तेन ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३११. अधिमोक्खेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

३१२. अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३१३. सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

(सं.)- ३१०. संस्कारप्रत्ययविज्ञानेन ये धर्माः... षडायतनप्रत्ययस्पर्शेण ये धर्माः... स्पर्शप्रत्ययवेदनया ये धर्माः.... स्पर्शेन ये धर्माः.... वेदनया ये धर्माः.... संज्ञया ये धर्माः... चेतनया ये धर्माः.... चित्तेन ये धर्माः.... मनसिकारेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तै धर्मैः ये धर्माः.... विप्रयुक्ताः ... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३११. अधिमोक्षेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

३१२. अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः.....उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३१३. सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३१०. जो धर्म संस्कार के कारण से उत्पन्न विज्ञान स्कन्ध से....षड़ायतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श से..... स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना से ..... स्पर्श से जो धर्म..... वेदना ..... संज्ञा से जो धर्म..... चेतना ..... चित्त ..... और मनस्कार से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं..... वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३११. जो धर्म अधिमोक्ष से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और एक धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

३१२. जो धर्म अदुःखअसुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म हैं और जो धर्म उपेक्षा सहगत धर्मों से सम्प्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातु से विप्रयुक्त हैं।

३१३. जो धर्म सवितर्कसविचार धर्म से सम्प्रयुक्त है, जो धर्म उन धर्मों से विप्रयुक्त हैं..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३१४. चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा ... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३१५. सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

३१६. उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि विप्पयुत्ता? ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

खन्धा चतुरो आयतनञ्च मेकं।
धातूसु सत्त द्वेपि च इन्द्रियतो॥

(सं.)- ३१४. चित्तधर्मैः ये धर्माः..... चैतसिकैः धर्मैः ये धर्माः... चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः... चित्तसंसृष्टसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः...चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः चित्तसंमृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३१५. सवितर्कैः धर्मैः ये धर्माः... सविचारैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः।

३१६. उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः? ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभि धातुभिः विप्रयुक्ताः।

स्कन्धा चत्वारः आयतनञ्चैकम्।
धातुषु सप्त द्वौ अपि च इन्द्रियतः।।

(हिन्दी)- ३१४. जो धर्म चित्त धर्मों से.... चैतसिक धर्मों..... चित्तसम्प्रयुक्त धर्मों..... चित्तसंसृष्ट धर्मों..... चित्तसंसृष्टसमुत्थान धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभू धर्मों.... और चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्ती धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं..... वे धर्म चार स्कन्धों , एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३१५. जो धर्म सवितर्क धर्मों से.... सविचार धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और एक धातु से विप्रयुक्त हैं।

३१६. जो धर्म उपेक्षासहगत धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों और कितने धातुओं से विप्रयुक्त हैं? वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

चार स्कन्धों और एक आयतन। सात धातुओं और दो इन्द्रियों से ।।

तयो पटिच्च तथरिव फस्सपञ्चमा।
अधिमुच्चना मनसि तिकेसु तीणि॥
सत्तन्तरा द्वे च मनेन युत्ता।
वितक्कविचारणा उपेक्खकाय चाति॥

सम्पयुत्तेनविप्पयुत्तपदनिद्देसो सत्तमो।

(सं.)- त्रयः प्रतीत्य तथैव स्पर्शपञ्चमम्।
अधिमोचनं मनसि त्रिकेषु त्रीणि।।
सप्तान्तरा द्वौ च मनसा युक्ताः।
वितर्कविचारणे उपेक्षया चेति।।

सम्प्रयुक्तेन विप्रयुक्तपदनिर्देशः सप्तमः।

(हिन्दी)- तीन से प्रतीत्यसमुत्पाद ज्ञान तथा स्पर्श को मिलाकर पाँच।
अधिमोक्ष, मनसिकार तीन त्रीक मातृकाओं में।
सात अन्तर द्विक मातृकाएँ, मन से युक्त
दो (वितर्क और विचार) उपेक्षा से युक्त तीन अवस्थाएं या धर्म।।

****

८. अट्ठमनयो

८. विप्पयुत्तेनसम्पयुत्तपदनिद्देसो

३१७. रूपक्खन्धेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि।

३१८. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा... विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा...पे°... सरणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अरणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि।

धम्मायतनं धम्मधातु, अथ जीवितं नामरूपं।
सळायतनं जातिजरामतं, द्वे च तिके न लब्भरे॥
पठमन्तरे सत्त च, गोच्छके दस अपरन्ते।
चुद्दस छ च मत्थके, इच्चेते सत्तचत्तालीस धम्मा।
समुच्छेदे न लब्भन्ति, मोघपुच्छकेन चाति॥ विप्पयुत्तेनसम्पयुत्तपदनिद्देसो अट्ठमो।

(सं.) ८. विप्रयुक्तेनसम्प्रयुक्तपदनिर्देशः

३१७. रूपस्कन्धेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति।

३१८. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः.... संज्ञास्कन्धेन ये धर्माः.... संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः... विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः.... पू०.... शरणधर्मैः ये धर्माः.... अरण्यधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति।

धर्मायतनं धर्मधातुः, अथ जीवितं नामरूपम्।
षडायतनं जातिजरामृतम्, द्वौ च त्रिके न लभ्यते।।
प्रथमान्तरे सप्त च, गुच्छके दश अपरान्ते।
चतुर्दश षष्ट च मस्तके, इत्येते सप्तचत्वारिंश धर्माः।
समुच्छेदे न लभ्यन्ते, मोघपृच्छकेन चेति।। विप्रयुक्तेनसम्प्रयुक्तपदनिर्देशः अष्टमः।

(हिन्दी)- ३१७. जो धर्म रूपस्कन्ध से विप्रयुक्त हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं।

३१८. जो धर्म वेदना स्कन्ध से....संज्ञा स्कन्ध से....संस्कार स्कन्ध से .... विज्ञान स्कन्ध से .... सरण धर्मों से .... अरण धर्मों से विप्रयुक्त हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं? नहीं।

धर्मायतन, धर्मधातु, जीवित इन्द्रिय नामरूप।
षड़ायतन, जाति, जरा और मरण, दो त्रिक मातृकाएँ उपलब्ध नहीं हैं।।
प्रथम क्षुद्र अन्तराल में सात धर्म, पुनः १० गुच्छक।
फिर १४ अन्तर्वर्ती मातृकाएँ, ६ अन्तिम द्विक मातृकाएँ, ये ४७ धर्म।
मोघपुच्छक नामक अध्याय के साथ इस अध्याय में उपलब्ध नहीं हैं।।

****

९. नवमनयो

९. सम्पयुत्तेनसम्पयुत्तपदनिद्देसो

३१९. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ता? ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२०. विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा... मनायतनेन ये धम्मा... चक्खुविञ्ञाणधातुया ये धम्मा...पे०... मनोधातुया ये धम्मा... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता...पे०... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२१. समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ९. सम्प्रयुक्तेनसम्प्रयुक्तपदनिर्देशः

३१९. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः.... संज्ञास्कन्धेन ये धर्माः....संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः? ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२०. विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः..... मन आयतनेन ये धर्माः... चक्षुविज्ञानधातुना ये धर्माः... पू०.... मनोधातुना ये धर्माः... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः ...पू०.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२१. समुदयसत्येन ये धर्माः.... मार्गसत्येन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। ।

(हिन्दी)- ३१९. कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे धर्म सम्प्रयुक्त हैं, जो वेदना स्कन्ध.... संज्ञा स्कन्ध धर्म....संस्कार स्कन्ध उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त हैं? वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं।

३२०. जो धर्म विज्ञानस्कन्ध से.... , मनायतन से.... , चक्षुविज्ञानधातु से.... , मनोधातु से.... , मनोविज्ञानधातु से जो धर्म सम्प्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ... पू०.... वे धर्म तीन स्कन्धों; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं।

३२१. जो धर्म समुदयसत्य से....मार्गसत्य से सम्प्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं।

३२२. मनिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२३. सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा ... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२४. उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन छहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२५. सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया सङ्खारेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय

(सं.)- ३२२. मन इन्द्रियेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः .... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२३. सुखेन्द्रियेण ये धर्माः...दुःखेन्द्रियेण ये धर्माः.... सौमनस्येन्द्रियेण ये धर्माः... दौर्मनस्येन्द्रियेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः ... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२४. उपेक्षेन्द्रियेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन षड्भिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२५. श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः... वीर्येन्द्रियेन ये धर्माः..... स्मृतीन्द्रियेन ये धर्माः... समाधीन्द्रियेण ये धर्माः..... प्रज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः.... अनज्ञातामाज्ञास्यामीतीन्द्रियेण ये धर्माः... आज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः... आज्ञातावीन्द्रियेन ये धर्माः... अविद्यया ये धर्माः... अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः .... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन

(हिन्दी)- ३२२. जो धर्म मन इन्द्रिय से सम्प्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं।

३२३. जो धर्म सुख इन्द्रिय से.... दुःख इन्द्रिय से.... सौमनस्य इन्द्रिय से.... दौर्मनस्य इन्द्रिय से सम्प्रयुक्त है; उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३२४. जो धर्म उपेक्षा इन्द्रिय से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है.....वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और छह धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३२५. जो धर्म श्रद्धा इन्द्रिय से....वीर्य इन्द्रिय से....स्मृति इन्द्रिय से.... समाधि इन्द्रिय से.... प्रज्ञा इन्द्रिय से.... अनज्ञातामाज्ञास्यामीतीन्द्रिय से.... आज्ञा इन्द्रिय से.... आज्ञात इन्द्रिय से.... अविद्या से.... अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कारों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन

धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२६. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२७. सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२८. फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३२९. वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२६. संस्कारप्रत्ययाद् विज्ञानेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२७. षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२८. स्पर्शप्रत्ययाद् वेदनया ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.....ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३२९. वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णया ये धर्माः...तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः.... कर्मभवेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ये धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- और एक धातु से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३२६. जो धर्म संस्कार के कारण से उत्पन्न विज्ञान से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३२७. जो धर्म षड़ायतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३२८. जो धर्म स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है.....वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३२९. जो धर्म वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा से.....तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान से जो धर्म.... कर्मभव से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३०. सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३१. उपायासेन ये धम्मा... सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३२. इद्धिपादेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३३. झानेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा द्वीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ३३०. शोकेन ये धर्माः... दुःखेन ये धर्माः... दौर्मनस्येन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः..... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३१. उपायासेन ये धर्माः... स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः.... सम्यक्प्रधानेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३२. ऋद्धिपादेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् सम्प्रयुक्ताः, एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३३. ध्यानेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३३०. जो धर्म शोक से.... दुःख.... दौर्मनस्य से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३१. जो धर्म उपायास से.... स्मृतिप्रस्थान से.... सम्यक् प्रधान सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध और एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३२. जो धर्म ऋद्धिपाद से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म दो स्कन्धों से, सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३३. जो धर्म ध्यान से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म दो स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३४. अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा ... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३५. फस्सेन ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३६. वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३७. चित्तेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ३३४. अप्रमान्येन ये धर्माः.... पञ्चभिः इन्द्रियैःये धर्माः... पञ्चभि बलैः ये धर्माः.... सप्तभिः, बोध्यङ्गैः ये धर्माः... आर्येण अष्टाङ्गिकेन मार्गेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना, कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३५. स्पर्शेण ये धर्माः... चेतनया ये धर्माः.... मनसिकारेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३६. वेदनया ये धर्माः...संज्ञया ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३७. चित्तेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

(हिंदी.)- ३३४. जो धर्म अप्रमाण (ब्रह्मविहार) से.....पांच इन्द्रियों..... पांच बलों .....सात बोध्यंगों ..... आर्य अष्टांगिक मार्ग से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३५. जो धर्म स्पर्श से....चेतना.....मनसिकार से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३६. जो धर्म वेदना और संज्ञा से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है.... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३७. जो धर्म चित्त से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३८. अधिमोक्खेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन द्वीहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३३९. सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४०. सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... अवितक्कविचारमत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४१. सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ३३८. अधिमोक्षेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन द्वाभ्याम् धातुभ्यां सम्प्रयुक्ताः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३३९. सुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... दुःखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः..... अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४०. सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः.... अवितर्कविचारमात्रकैः धर्मैः ये धर्माः... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, यैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४१. सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः...उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३३८. जो धर्म अधिमोक्ष से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और दो धातुओं से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३३९. जो धर्म सुख वेदना से सम्प्रयुक्त.....दुःख वेदना से सम्प्रयुक्त..... अदुःखअसुख वेदना से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४०. जो धर्म सवितर्कसविचार धर्मों से.... अवितर्कविचारमात्र धर्मों से.... प्रीतिसहगत धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है .... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४१. जो धर्म सुखसहगत धर्मों से....उपेक्षासहगत धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध से सम्प्रयुक्त है, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४२. हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४३. सहेतुकेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुसहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि [न हेतूहि सहेतुकेहि (बहूसु)] ये धम्मा सम्पयुत्ता...ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४४. आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४५. आसवसम्पयुत्तेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ३४२. हेतुधर्मैः ये धर्माः.... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः..... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४३. सहेतुभिश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः.... हेतुसम्प्रयुक्तैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः... न हेतुसहेतुधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४४. आस्रवधर्मैः ये धर्माः... आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च धर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव आस्रवसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः .... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः।

३४५. आस्रवसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः ... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३४२. जो धर्म हेतु धर्मों से.... हेतु और सहेतुक धर्मों से .... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त धर्म से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन से और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४३. जो धर्म सहेतुक और अहेतुभूत धर्मों से.... हेतुसम्प्रयुक्त और अहेतुभूत धर्म..... न हेतुसहेतुक धर्म से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४४. जो धर्म आस्रव धर्मों से.... आस्रव और सास्रव धर्मों.... आस्रव और आस्रवसम्प्रयुक्त धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४५. जो धर्म आस्रवसम्प्रयुक्त और अनास्रवभूत धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४६. संयोजनेहि... गन्थेहि... ओघेहि... योगेहि... नीवरणेहि... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि चेव परामट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४७. परामाससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४८. चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३४९. चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ३४६. संयोजनैः .... ग्रन्थैः... ओघैः... योगैः....नीवरणैः... परामर्शैः धर्मैः ये धर्माः.... परामर्शैः चैव परामृष्टैः च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ते धर्माः तैः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४७. परामर्शसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४८. चित्तधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३४९. चेतसिकधर्मैः ये धर्माः...चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३४६. जो धर्म संयोजनों से.... ग्रंथों से.... ओघों से.... योगों से.... नीवरणों से.... परामर्शधर्मों से.... परामर्श और परामृष्ट धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४७. जो धर्म परामर्श सम्प्रयुक्त धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४८. जो धर्म चित्त धर्म से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन, एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३४९. जो धर्म चैतसिक धर्मों से.... चित्त सम्प्रयुक्त धर्मों.... चित्तसंसृष्ट धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थान धर्मों....चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभू धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्ती धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और सात धातुओं में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३५०. उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३५१. संकिलिट्ठेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पीतिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

३५२. सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ता? ते धम्मा एकेन खन्धेन सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता।

(सं.)- ३५०. उपादानधर्मैः ये धर्माः.... क्लेशधर्मैः ये धर्माः ... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः.... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३५१. संक्लिष्टिकैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः.... क्लेशसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः... सवितर्कैः धर्मैः ये धर्माः..... सविचारैः धर्मैः ये धर्माः.... सप्रीतिकैः धर्मैः ये धर्माः.... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

३५२. सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः... उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः? ते धर्माः एकेन स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३५०. जो धर्म उपादान धर्मों से.... क्लेश धर्मों.... क्लेश एवं सांक्लेशिक धर्मों.... क्लेश एवं संक्लिष्ट धर्मों .... क्लेश एवं क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से सम्प्रयुक्त है; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३५१. जो धर्म संक्लिष्ट और अक्लेशभूत धर्मों से.... क्लेशसम्प्रयुक्त और अक्लेशभूत धर्मों.... सवितर्क और सविचार धर्मों.... सप्रीतिक धर्मों.... और प्रीतिसहगत धर्मों से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

३५२. जो धर्म सुखसहगत धर्मों (जो धर्म सुख की भावना से युक्त हैं) से.... उपेक्षासहगत धर्मों (जो धम्म उपेक्षा की भावना से युक्त हैं) से सम्प्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, वे धर्म कितने स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातु से सम्प्रयुक्त है? वे धर्म कितने स्कन्धों से सम्प्रयुक्त है; एक आयतन, एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है।

अरूपक्खन्धा चत्तारो, मनायतनमेव च।
विञ्ञाणधातुयो सत्त, द्वे सच्चा चुद्दसिन्द्रिया॥
पच्चये द्वादस पदा, ततो उपरि सोळस।
तिकेसु अट्ठ गोच्छके, तेचत्तालीसमेव च॥
महन्तरदुके सत्त, पदा पिट्ठि दुकेसु छ।
नवमस्स पदस्सेते, निद्देसे सङ्गहं गताति॥

सम्पयुत्तेनसम्पयुत्तपदनिद्देसो नवमो।

(सं.)- अरूपस्कन्धा: चत्वारः, मन आयतनमेव च।
विज्ञानधातवः सप्त, द्वे सत्ये चतुर्दशेन्द्रियाणि।।
प्रत्यये द्वादश पदानि, ततः उपरि षोडश।
त्रिकेषु अष्ट गोच्छके, त्रिचत्वारिंशमेव च।।
महन्तरद्विके सप्त, पदानि पृष्टि द्विकेषु षट्।
नवमस्य पदस्येते, निर्देशे सङ्ग्रहं गता: इति।

सम्प्रयुक्तेन सम्प्रयुक्तपद निर्देशः नवमः

(हिन्दी)- अरूपस्कन्ध चार और एक मन आयतन,
विज्ञानधातु सात, दो सत्य चौदह इन्द्रियाँ।।
प्रतीत्य समुत्पन्न बारह पद, उससे उपरान्त त्रिक सोलह।
आठ त्रिक मातृकाएँ, ४३ गुच्छक ।।
महान्तर द्विक ७, पीछे वाले और बाद ६ द्विक मातृकाएँ।
नवे अध्याय में ये धर्म संग्रहीत है।।

****

१०. दसमनयो

१०. विप्पयुत्तेनविप्पयुत्तपदनिद्देसो

३५३. रूपक्खन्धेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि विप्पयुत्ता? ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३५४. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा... विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा... मनायतनेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता...पे०... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३५५. चक्खायतनेन ये धम्मा...पे०... फोट्ठब्बायतनेन ये धम्मा... चक्खुधातुया ये धम्मा...पे०... फोट्ठब्बधातुया ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- १०. विप्रयुक्तेन विप्रयुक्तपद निर्देशः

३५३. रूपस्कन्धेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः? ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३५४. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः....संज्ञास्कन्धेन ये धर्माः...संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः.... विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः....मनायतनेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः....पू०.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३५५. चक्ष्वायतनेन ये धर्माः...पू०..... स्प्रष्टव्यायतनेन ये धर्माः.... चक्षुधातुना ये धर्माः...पू०.... स्प्रष्टव्यधातुना ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः। एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३५३. जो धर्म रूपस्कन्ध से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, वे धर्म कितने स्कन्धों , कितने आयतनों और कितने धातुओं से विप्रयुक्त हैं? वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं विप्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३५४. जो धर्म वेदना स्कन्ध धर्मों से.... संज्ञा स्कन्ध....संस्कार स्कन्ध .... , विज्ञानस्कन्ध .... , मनायतन विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ...पू०... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३५५. जो धर्म चक्षु आयतन धर्मों से.... स्प्रष्टव्य आयतन.... चक्षु धातु ...पू०.... स्प्रष्टव्य धातु से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है? वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुएं विप्रयुक्त है; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त है।

३५६. चक्खुविञ्ञाणधातुया ये धम्मा...पे°... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३५७. निरोधसच्चेन ये धम्मा... चक्खुन्द्रियेन ये धम्मा...पे°... कायिन्द्रियेन ये धम्मा.. इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३५८. मनिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३५९. सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- ३५६. चक्षुर्विज्ञानधातुना ये धर्माः...पू०..... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः.... समुदयसत्येन ये धर्माः.... मार्गसत्येन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः, एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३५७. निरोधसत्येन ये धर्माः... चक्षुरिन्द्रियेण ये धर्माः.... पू०... कायेन्द्रियेण ये धर्माः... स्त्रीन्द्रियेण ये धर्माः.... पुरुषेन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३५८. मन इन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३५९. सुखेन्द्रियेण ये धर्माः.... दुःखेन्द्रियेण ये धर्माः.... सौमनस्येन्द्रियेण ये धर्माः... दौर्मनस्येन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३५६. जो धर्म चक्षुविज्ञानधातु धर्मों से.... मनोविज्ञानधातु.... समुदयसत्य.... मार्गसत्य विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ....पू०.... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३५७. जो धर्म निरोधसत्य धर्मों से....चक्षुइन्द्रिय.... पू०..... काय इन्द्रिय.... स्त्री इन्द्रिय.... पुरुष इन्द्रिय से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ...पू०..... वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३५८. जो धर्म मन इन्द्रिय धर्मों से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ...पू०.... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३५९. जो धर्म सुख इन्द्रिय धर्मों से.... दुःख इन्द्रिय.... सौमनस्य इन्द्रिय.... दौर्मनस्य इन्द्रिय से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ...पू०..... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६०. उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६१. सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया सङ्खारेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६२. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणेन ये धम्मा... सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६३. वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा...कम्मभवेन ये

(सं.)- ३६०. उपेक्षेन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६१. श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः... वीर्येन्द्रियेण ये धर्माः...स्मृतीन्द्रियेण ये धर्म.... समाधीन्द्रियेण ये धर्माः...प्रज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः.... अनज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेण ये धर्माः.... आज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः.... आज्ञातावीन्द्रियेण ये धर्माः.... अविद्यया ये धर्माः... अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६२. संस्कारप्रत्ययाद् विज्ञानेन ये धर्माः.... षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शेण ये धर्माः...स्पर्शप्रत्ययाद् वेदनया ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६३. वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णया ये धर्माः.... तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः... कर्मभवेन से

(हिन्दी)- ३६०. जो धर्म उपेक्षा इन्द्रिय से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ...पू०... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६१. जो धर्म श्रद्धा इन्द्रिय से.... वीर्य इन्द्रिय....स्मृति इन्द्रिय....समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय.... अनाज्ञात इन्द्रिय.... आज्ञा इन्द्रिय.... आज्ञातावी इन्द्रिय.... अविद्या.... अविद्या के कारण उत्पन्न संस्कारों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६२. जो धर्म संस्कार के कारण उत्पन्न विज्ञान से.... षड़ायतन के कारण उत्पन्न स्पर्श.... स्पर्श के कारण उत्पन्न वेदना से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६३. जो धर्म वेदना के कारण उत्पन्न तृष्णा से.... तृष्णा के कारण उत्पन्न उपादान से....कर्मभव से

धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६४. रूपभवेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि तीहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३६५. असञ्ञाभवेन ये धम्मा... एकवोकारभवेन ये धम्मा... परिदेवेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६६. अरूपभवेन ये धम्मा... नेवसञ्ञानासञ्ञाभवेन ये धम्मा... चतुवोकारभवेन ये धम्मा... सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा... उपायासेन ये धम्मा... सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा... इद्धिपादेन ये धम्मा... झानेन ये धम्मा... अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा

(सं.)- धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कनधेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६४. रूपभवेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः तैः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३६५. असंज्ञाभवेन ये धर्माः..... एकविकारभवेन ये धर्माः.... परिदेवेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ये धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६६. अरूपभवेन ये धर्माः... नैवसंज्ञानासंज्ञाभवेन ये धर्माः... चतुर्विकारभवेन से धर्माः... शोकेन ये धर्माः..... दुःखेन ये धर्माः... दौर्मनस्येन ये धर्माः... उपायासेन ये धर्माः.... स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः.... सम्यक् प्रधानेन ये धर्माः... ऋद्धिपादेन ये धर्माः... ध्यानेन ये धर्माः.... अप्रामान्येण ये धर्माः..... पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः.... पञ्चभिः बलैः ये धर्माः.... सप्तबोध्यंगैः ये धर्माः... आर्येण अष्टांगिकेन मार्गेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः

(हिन्दी)- विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६४. जो धर्म कर्मभव से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और तीन धातुओं से विप्रयुक्त है।

३६५. जो धर्म असंज्ञाभव से... एकविकारभव से.... परिदेव से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है....वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६६. जो धर्म अरूपभव से.... नैवसंज्ञानासंज्ञाभव.....चारविकारभव.... शोक.... दुःख.... दौर्मनस्य.... उपायास.... स्मृतिप्रस्थान.... सम्यक् प्रधान.....ऋद्धिपाद.....ध्यान..... अप्रमाण....पांच इन्द्रियों ....पांच बलों....सात बोध्यंगों..... और आर्य अष्टांग मार्ग से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से,

विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६७. फस्सेन ये धम्मा... वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... चित्तेन ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३६८. अधिमोक्खेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

१. तिकं

३६९. कुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... अकुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७०. सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा...दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि

(सं.)- विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६७. स्पर्शेण ये धर्माः.... वेदनया ये धर्माः.... संज्ञया ये धर्माः..... चेतनया ये धर्माः... चित्तेन ये धर्माः..... मनसिकारेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभि आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३६८. अधिमोक्षेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभि आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

१. त्रिकं

३६९. कुशलधर्मैः ये धर्माः.... अकुशलैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७०. सुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... दुखवेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः

(हिं)- दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६७. जो धर्म स्पर्श से... वेदना.... संज्ञा.... चेतना से जो धर्म.... चित्त..... मनसिकार से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६८. जो धर्म अधिमोक्ष से विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३६९. जो धर्म कुशल धर्म से.... जो धर्म अकुशल धर्म से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७०. जो धर्म सुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म से .... दुःख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म से विप्रयुक्त है,

ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७१. अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७२. विपाकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७३. विपाकधम्मधम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७४. नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मेहि ये धम्मा... अनुपादिन्नुपादानियेहि धम्मेहि

(सं.)- ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७१. अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७२. विपाकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७३. विपाकधर्मधर्मैः ये धर्माः... संक्लिष्टसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः ..... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७४. नैवविपाकनविपाकधर्मधर्मैः ये धर्माः.....अनुपादिन्नुपादानीयैः धर्मैः

(हिन्दी)- उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७१. जो धर्म अदु:खअसुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७२. जो धर्म विपाक धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७३. जो धर्म विपाक धर्मों से....संक्लिष्ट तथा सांक्लेशिक धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७४. जो धर्म न विपाक धर्मों न विपाक धर्म धर्मों से.... अनुपादिन्न एवं उपादानिय

ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३७५. अनुपादिन्नअनुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलिट्ठअसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३७६. सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७७. अवितक्कविचारमत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३७८. अवितक्कअविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा

(सं.)- ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३७५. अनुपादिन्नानुपादानीयैः धर्मैः ये धर्माः... असंक्लिष्टासंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.....ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३७६. सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७७. अवितर्कविचारमात्रकैः धर्मैः ये धर्माः... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.. ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३७८. अवितर्काविचारैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः

(हिन्दी)- धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं वाले धर्मों से विप्रयुक्त हैं।

३७५. जो धर्म अनुपादिन्न एवं अनुपादानिय धर्म से....असंक्लिष्ट असांक्लेशिक धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं वाले धर्मों से विप्रयुक्त हैं।

३७६. जो धर्म सवितर्कसविचार धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध , दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७७. जो धर्म अवितर्कविचारमात्र धर्मों से.... प्रीतिसहगत धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३७८. जो धर्म अवितर्कअविचार धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही

विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

३७९. सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३८०. उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३८१. दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... आचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... अपचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... सेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... असेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... महग्गतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- विप्रयुक्ताः.. ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

३७९. सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.. ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८०. उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८१. दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः.... भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः... आचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः... अपचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः... शैक्षधर्मैः ये धर्माः... अशैक्षधर्मैः ये धर्माः.... महद्भूतैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और एक धातुओं वाले धर्मों से विप्रयुक्त हैं।

३७९. जो धर्म सुखसहगत धर्म से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८०. जो धर्म उपेक्षासहगत धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८१. जो धर्म दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्म से.... भावना के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्म से ....दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतु धर्म से....भावना के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतु धर्म से .... आचयगामी (वे धम्म जो कर्म-संचय के कारण बनते हैं) धर्मों .... अपचयगामी धर्मों से.... शैक्ष्य धर्मों से.... अशैक्ष्य धर्मों.... महद्भूत धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८२. अप्पमाणेहि धम्मेहि ये धम्मा... पणीतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३८३. परित्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३८४. महग्गतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अप्पमाणारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... हीनेहि धम्मेहि ये धम्मा... मिच्छत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सम्मत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गाधिपतीहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३८५. अनुप्पन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

(सं.)- ३८२. अप्रमाणधर्मैः ये धर्माः.... प्रणीतैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.. ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३८३. प्ररित्तालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८४. महद्गतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... अप्रमाणालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः.... हीनैः धर्मैः ये धर्माः मिथ्यात्वनियतैः धर्मैः ये धर्माः सम्यक्त्वनियतैः धर्मैः ये धर्माः...मार्गालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः...मार्गहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः... मार्गाधिपतिभिः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, त्रिभिः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८५. अनुत्पन्नैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ३८२. जो धर्म अप्रमाण धर्मों से.... प्रणीत धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं वाले धर्मों से विप्रयुक्त हैं।

३८३. जो धर्म प्ररित्तालम्बन धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से विप्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८४. जो धर्म महद्गतालम्बन धर्मों से....अप्रमाणालम्बन धर्मों.... हीन धर्मों.... मिथ्यात्वनियत धर्मों.... सम्यक्त्वनियत धर्मों.... मार्गालम्बन धर्मों.... मार्गहेतुक धर्मों....मार्गाधिपति धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८५. जो धर्म अनुत्पन्न धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं वाले धर्मों से विप्रयुक्त हैं।

३८६. अतीतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनागतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३८७. पच्चुप्पन्नारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... बहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तबहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३८८. सनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

२. दुकं

३८९. हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये

(सं.)- ३८६. अतीतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः .... अनागतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८७. प्रत्युत्पन्नालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... अध्यात्मालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः.... बहिर्ध्दालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... अध्यात्मबहिर्ध्दालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८८. सनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः..... अनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः....ये धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३८९. हेतुधर्मैः ये धर्माः... सहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः.... हेतुसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः.... सहेतुकैश्चैव न च हेतुधर्मैः, ये धर्माः....

(हिन्दी)- ३८६. जो धर्म अतीतालम्बन धर्मों से.... अनागतालम्बन धर्म से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८७. जो धर्म प्रत्युत्पन्नालम्बन धर्मों से....आध्यात्मालम्बन धर्मों से.... बाह्यालम्बन धर्मों से.... आध्यात्म एवं बाह्यालम्बन वाले धर्मों से विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८८. जो धर्म सनिदर्शनसप्रतिघ धर्मों से....अनिदर्शनसप्रतिघ धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३८९. जो धर्म हेतु धर्मों से.... सहेतुक धर्मों.... हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों.... हेतु और सहेतुक धर्मों.... सहेतुक और

धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुसहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३९०. अप्पच्चयेहि धम्मेहि ये धम्मा... असङ्खतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सनिदस्सनेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा... रूपीहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३९१. लोकुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३९२. आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा

(सं.)- हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः... हेतुसम्प्रयुक्तैश्चैव न च हेतुभिः धर्मैः ये धर्माः... न हेतुसहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३९०. अप्रत्ययधर्मैः ये धर्माः... असंस्कृतधर्मैः ये धर्माः... सनिदर्शनधर्मैः ये धर्माः ... सप्रतिघधर्मैः ये धर्माः.... रूपीधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३९१. लोकोत्तरैधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३९२. आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः.... आस्रवसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च धर्मैः ये धर्माः.... आस्रवैश्चैव आस्रव सम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः... आस्रवसम्प्रयुक्तैश्चैव न च आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः

(हिन्दी)- अहेतुभूत धर्मों.... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों.... हेतुसम्प्रयुक्त और अहेतुभूत धर्मों.... न हेतुसहेतुक धर्मों विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३९०. जो धर्म अप्रत्यय धर्मों से.... असंस्कृत धर्मों.... सनिदर्शन धर्मों.... सप्रतिघ धर्मों.... रूपी धर्मों विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३९१. जो धर्म लोकोत्तर धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

३९२. जो धर्म आस्रव धर्म से..... आस्रव सम्प्रयुक्त धर्मों.... आस्रव और सास्रव धर्मों ... आस्रव और आस्रव सम्प्रयुक्त धर्मों.... आस्रव सम्प्रयुक्त और

विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३९३. अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३९४. संयोजनेहि धम्मेहि ये धम्मा... गन्थेहि धम्मेहि ये धम्मा... ओघेहि धम्मेहि ये धम्मा... योगेहि धम्मेहि ये धम्मा... नीवरणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामाससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि चेव परामट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३९५. अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासविप्पयुत्तेहि अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

(सं.)- विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३९३. अनास्रवैः धर्मैः ये धर्माः... आस्रवविप्रयुक्तैः अनास्रवैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३९४. संयोजनधर्मैः ये धर्माः... ग्रन्थधर्मैः ये धर्माः... ओघधर्मैः ये धर्माः... योगधर्मैः ये धर्माः.... नीवरणधर्मैः ये धर्माः.... परामर्शधर्मैः ये धर्माः... परामर्शसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... परामर्शैश्चैव परामृष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः ... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३९५. अपरामृष्टैः धर्मैः ये धर्माः... परामर्शविप्रयुक्तैः अपरामृष्टैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- अनास्रवभूत धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३९३. जो धर्म अनास्रव धर्मों से..... आस्रव विप्रयुक्त अनास्रव धर्म से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है.... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

३९४. जो धर्म संयोजन धर्मों से.... ग्रंथ धर्मों .... ओघ धर्मों.... योग धर्मों.... नीवरण धर्मों.... परामर्श धर्मों.... परामर्शसम्प्रयुक्त धर्मों.... परामर्श और परामृष्ट धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३९५. जो धर्म अपरामृष्ट धर्म.... परामर्शविप्रयुक्त अपरामृष्ट धर्म से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

३९६. सारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३९७. अनारम्मणेहि [अनुपादिण्णेहि (सी॰ क॰)] धम्मेहि ये धम्मा... चित्तविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तविसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादाधम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

३९८. अनुपादिन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि विप्पयुत्ता।

३९९. उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा...संकिलिट्ठेहि धम्मेहि ये

(सं.)- ३९६. सालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... चित्तधर्मैः ये धर्माः.... चेतसिकधर्मैः ये धर्माः... चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः..... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः..... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३९७. अनालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... चित्तविप्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः..... चित्तविसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः ....उपादानधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

३९८. अनुपादिन्नैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धेन न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

३९९. उपादानधर्मैः ये धर्माः.... क्लेशधर्मैः ये धर्माः.... संक्लिष्टधर्मैः ये

(हिन्दी)- ३९६. जो धर्म सालम्बन धर्मों .... चित्त धर्मों.... चैतसिक धर्मों.... चित्तसम्प्रयुक्त धर्मों.... चित्तसंसृष्ट धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थान धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभू धर्मों .... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्ती से धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३९७. जो धर्म अनालम्बन धर्मों से.... चित्तविप्रयुक्त धर्मों.... चित्तविसंसृष्ट धर्मों.... उपादा (जो पूर्व-कर्मों के परिणाम-स्वरूप अर्जित हैं) धर्मों विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

३९८. जो धर्म अनुपादि धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

३९९. जो धर्म उपादान धर्मों से.... क्लेश धर्मों से जो धर्म.... संक्लिष्ट धर्मों से जो धर्म ....

धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४००. असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसविप्पयुत्तेहि असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

४०१. दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- धर्माः... क्लेशसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः.... संक्लिष्टैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः... क्लेशसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

४००. असंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः.... क्लेशविप्रयुक्तैः असंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भि धातुभिः विप्रयुक्ताः।

४०१. दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः.... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः... भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों....क्लेश और सांक्लेशिक धर्मों.... क्लेश और संक्लिष्ट धर्मों.... संक्लिष्ट और अक्लेशभूत धर्मों .... क्लेश और क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों.... क्लेशसम्प्रयुक्त और अक्लेशभूत से धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है...वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४००. जो धर्म असांक्लेशिक धर्मों..... क्लेश विप्रयुक्त असांक्लेशिक धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

४०१. जो धर्म दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्मों से.... भावना के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्मों....दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतु वाले धर्मों....भावना के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतु वाले धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४०२. सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि येधम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४०३. अवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... अविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया विप्पयुत्ता।

४०४. सप्पीतिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४०५. सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- ४०२. सवितर्कधर्मैः ये धर्माः.... सविचारधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

४०३. अवितर्कधर्मैः ये धर्माः... अविचारधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना विप्रयुक्ताः।

४०४. सप्रीतिकधर्मैः ये धर्माः...प्रीतिसहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

४०५. सुखसहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी)- ४०२. जो धर्म सवितर्क धर्मों से..... सविचार धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४०३. जो धर्म अवितर्क और अविचार धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और एक धातु से विप्रयुक्त हैं।

४०४. जो धर्म सप्रीतिक और प्रीतिसहगत धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है ..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४०५. जो धर्म सुखसहगत धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४०६. उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४०७. न कामावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अपरियापन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि विप्पयुत्ता।

४०८. रूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अरूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... निय्यानिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... नियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सरणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि विप्पयुत्ता? ते धम्मा एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

धम्मायतनं धम्मधातु, दुक्खसच्चं च जीवितं।
सळायतनं नामरूपं, चत्तारो च महाभवा॥

(सं.)- ४०६. उपेक्षासहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

४०७. अकामावचरधर्मैः ये धर्माः... अपर्यापन्नधर्मैः ये धर्माः... अनुत्तरधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्तै, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः विप्रयुक्ताः।

४०८. रूपावचरधर्मैः ये धर्माः.... अरूपावचरधर्मैः ये धर्माः.... निर्याणिकधर्मैः ये धर्माः... नियतधर्मैः ये धर्माः...शरणधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, तैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः? ते धर्माः एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

धर्मायतनं धर्मधातु, दुःखसत्यञ्च जीवितम्।
षडायतनं नामरूपम्, चत्वारश्च महाभवाः।।

(हिन्दी)- ४०६. जो धर्म उपेक्षासहगत धर्मों से विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४०७. जो धर्म न कामावचर धर्मों से.... अपर्यापन्न (जो धम्म आवागमन के चक्र में निहित नहीं है) धर्मों .... अनुत्तर (जिनसे आगे बढ़कर और कोई धम्म नहीं हैं) धर्मों से जो धर्म.... विप्रयुक्त है, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म न किन्ही स्कन्धों , न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से विप्रयुक्त हैं।

४०८. जो धर्म रूपावचर धर्मों से.... अरूपावचर धर्म से.... निर्यानिक धर्म से.... नियत धर्म से और सरण धर्म से जो धर्म विप्रयुक्त हैं, उन धर्मों से जो धर्म विप्रयुक्त हैं, वे कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं से वे धर्म विप्रयुक्त हैं? वे धर्म एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से वे विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

जाति जरा च मरणं, तिकेस्वेकूनवीसति।
गोच्छकेसु च पञ्ञास, अट्ठ चूळन्तरे पदा॥
महन्तरे पन्नरस, अट्ठारस ततो परे।
तेवीस पदसतं एतं, सम्पयोगे न लब्भतीति॥

विप्पयुत्तेनविप्पयुत्तपदनिद्देसो दसमो।

(सं.)- जाति जरा च मरणम् , त्रिकेस्वेकोनविंशति।
गुच्छकेषु च पञ्चाशत, अष्ट चूलान्तरे पदाणि।।
महदन्तरे पञ्चदश, अष्टादश ततः परे।
त्रिविंशति पदशतमेतत् , सम्प्रयोगे न लभ्यते इति।।

विप्रयुक्तेनविप्रयुक्तपदनिर्देशः दशमः।

(हिन्दी)- धर्मायतन, धर्मधातु, दुःखसत्य और इन्द्रिय।
षड़ायतन, नामरूप और चार महाभव,
जाति, जरा और मरण, १९ त्रिक मातृकाओं।।
गुच्छकों में पचास, छोटे अन्तराल वाली द्विक मातृकाओं में आठ।
बडे अन्तराल वाली द्विक मातृकाओं में पंद्रह।
उसके उपरान्त अठारह त्रिक मातृकाएँ,
इस प्रकार यह २३ पद, सम्प्रयोग में प्राप्त होते हैं।।

****

११. एकादसमनयो

११. सङ्गहितेनसम्पयुत्तविप्पयुत्तपदनिद्देसो

४०९. समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ता? ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४१०. इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४११. सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा...

(सं.)-

११. एकादशमनयः

११. सङ्ग्रहीतेन सम्प्रयुक्तविप्रयुक्तपदनिर्देशः

४०९. समुदयसत्येन ये धर्माः..... मार्गसत्येन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः? ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः, एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

४१०. स्त्रीन्द्रियेण ये धर्माः..... पुरुषेन्द्रियेण ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् विप्रयुक्ताः।

४११. सुखेन्द्रियेण ये धर्माः..... दुःखेन्द्रियेण ये धर्माः..... सौमनस्येन्द्रियेण ये धर्माः .....

(हिन्दी)- ४०९. जो धर्म समुदयसत्य .... मार्गसत्य के साथ स्कन्ध आयतन और धातुसंग्रह में सम्मिलित हैं, वे धर्म कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से वे सम्प्रयुक्त हैं, वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन से और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४१०. जो धर्म स्त्री इन्द्रिय से....पुरुष इन्द्रिय के साथ जो धर्म स्कन्ध, आयतन, धातुसंग्रह से संग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४११. जो धर्म सुख इन्द्रिय से.... दुख इन्द्रिय.... सौमनस्य इन्द्रिय....

दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता...पे०... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४१२. उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन द्वीहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४१३. सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया

(सं.)- दौर्मनस्येन्द्रियेण ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः....पू०..... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४१२. उपेक्षेन्द्रियेण ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन द्वाभ्याम् धातुभ्यां सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४१३. श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः ... वीर्येन्द्रियेण, ये धर्माः .... स्मृतीन्द्रियेन ये धर्माः .... समाधीन्द्रियेन ये धर्माः .... प्रज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः ..... अनज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेन ये धर्माः ..... आज्ञेन्द्रियेन ये धर्माः .... आज्ञातावीन्द्रियेन ये धर्माः ..... अविद्ययाः ये धर्माः ..... अविद्याप्रत्ययाद्

(हिन्दी)- दौर्मनस्य इन्द्रिय के साथ जो धर्म स्कन्ध, आयतन और धातुसंग्रह के संग्रह में संग्रहीत है।....पू०..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन से, सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितने से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४१२. जो धर्म उपेक्षा इन्द्रिय के साथ स्कन्ध, आयतन और धातुसंग्रह से संग्रहीत है।....पू०..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन से और दो धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४१३. जो धर्म श्रद्धा इन्द्रिय से.... वीर्य इन्द्रिय.... स्मृति इन्द्रिय.... समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय.... अनज्ञातं आज्ञाष्यामि इन्द्रिय से जो धर्म.... आज्ञा से जो धर्म.... आज्ञातावी इन्द्रिय से जो धर्म....। अविद्या.... अविद्या के कारण से उत्पन्न

सङ्खारेहि ये धम्मा... सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४१४. परिदेवेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्तातिं? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४१५. सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन

(सं.)- संस्कारैः ये धर्माः .....षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शेण ये धर्माः ... वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णया ये धर्माः ... तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः .... कर्मभवेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४१४. परिदेवेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४१५. शोकेन ये धर्माः .....दुःखेन ये धर्माः .....दौर्मनस्येन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतन सङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन

(हिन्दी)- संस्कार से जो धर्म.... षडायतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श से जो धर्म.... से जो धर्म.... वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा से जो धर्म.... तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान से जो धर्म.... कर्मभव से जो धर्म स्कन्ध, आयतन , धातुसंग्रह से संग्रहीत है, वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन से और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४१४. जो धर्म परिदेव के साथ स्कन्ध, आयतन और धातुसंग्रह में संग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों, कितने आयतनों, कितनी धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं? नहीं हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों , एक आयतन और सात धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४१५. जो धर्म शोक से.... दुःख.... दौर्मनस्य के साथ स्कन्ध, आयतन और धातुसंग्रह से संग्रहीत है।....पू०..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन से

सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४१६. उपायासेन ये धम्मा... सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा... अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा... फस्सेन ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... अधिमोक्खेन ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा... हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... संयोजनेहि धम्मेहि ये धम्मा... गन्थेहि धम्मेहि ये धम्मा... ओघेहि धम्मेहि ये धम्मा... योगेहि धम्मेहि ये धम्मा... नीवरणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च

(सं.)- सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४१६. उपायासेन ये धर्माः ..... स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः .... सम्यक्प्रधानेन ये धर्माः ..... अप्रमाणेन ये धर्माः ...पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः .... पञ्चभिः बलैः ये धर्माः ..... सप्तभिः बोध्यङ्गैः ये धर्माः .... आर्येण अष्टांगिकेन मार्गेण ये धर्माः ..... स्पर्शेण ये धर्माः ..... चेतनया ये धर्माः ..... अधिमोक्षेन ये धर्माः ..... मनसिकारेण ये धर्माः .... हेतुधर्मैः ये धर्माः ... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः .... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः .... आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च धर्मैः ये धर्माः .... आस्रवैश्चैव आस्रवसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः .... संयोजनधर्मैः ये धर्माः .... ग्रन्थभिः ये धर्माः .... ओघधर्मैः ये धर्माः .... योगधर्मैः ये धर्माः... नीवरणधर्मैः ये धर्माः ..... परामर्शधर्मैः ये धर्माः .... उपादानधर्मैः ये धर्माः .... क्लेशधर्मैः ये धर्माः .... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये

(हिन्दी)- सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४१६. जो धर्म उपायास (संग्रह में संग्रहीत है) .... स्मृति प्रस्थान.... सम्यक् प्रधान.... अप्रमाण.... पाँच इन्द्रियाँ.... पाँच बलों.... सात बोध्यंगों.... आर्य अष्टांगिकमार्ग.... स्पर्श.... चेतना.... अधिमोक्ष.... मनसिकार.... हेतु धर्मों.... हेतु और सहेतुक धर्मों.... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों..... आस्रव धर्मों.... आस्रव और सास्रव धर्मों... आस्रव और आस्रव सम्प्रयुक्त धर्मों.... संयोजन धर्मों ..... ग्रंथ धर्मों ..... ओघ धर्मों ..... योग धर्मों ..... नीवरण धर्मों ..... परामर्श धर्मों .... उपादान धर्मों.... क्लेश धर्मों.... क्लेश एवं सांक्लेशिक

धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन सङ्गहिता धातुसङ्गहेन सङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ता? ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सम्पयुत्ता; एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

द्वे सच्चा पन्नरसिन्द्रिया, एकादस पटिच्चपदा।
उद्धं पुन एकादस, गोच्छकपदमेत्थ तिंसविधाति॥

सङ्गहितेनसम्पयुत्तविप्पयुत्तपदनिद्देसो एकादसमो।

(सं.)- धर्माः ... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः ... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन सङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः? ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः; एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

द्वे सत्ये पञ्चदशेन्द्रियाणि, एकादश प्रतीत्यपत्।
उर्ध्वं पुनः एकादश, गुच्छकपदमत्र त्रिंशति विधमिति।।

सङ्ग्रहीतेन सम्प्रयुक्तविप्रयुक्त पदनिर्देशः एकादशमः।

(हिन्दी)- धर्मों.... क्लेश एवं संक्लिष्ट धर्मों.... क्लेश एवं क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों के साथ स्कन्ध, आयतन और धातुसंग्रह में संग्रहीत है। वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं? वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से सम्प्रयुक्त हैं; एक स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त है। कितनों से विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

दो सत्य पंद्रह इन्द्रियाँ, ग्यारह प्रतीत्य पद।
इसके ऊपर ग्यारह गुच्छक पद। इस प्रकार यहाँ ३० पद हैं।।

****

१२. द्वादसमनयो

१२. सम्पयुत्तेनसङ्गहितासङ्गहितपदनिद्देसो

४१७. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४१८. विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा... मनायतनेन ये धम्मा... चक्खुविञ्ञाणधातुया ये धम्मा...पे०... मनोधातुया ये धम्मा... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा सम्पयुत्ता...पे०... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४१९. समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- १२. सम्प्रयुक्तेन सङ्ग्रहीताः सङ्ग्रहीतपदनिर्देशः

४१७. वेदनास्कन्धेन ये धर्माः ... संज्ञास्कन्धेन ये धर्माः ... संस्कारस्कन्धेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४१८. विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः .... मनः आयतनेन ये धर्माः .... चक्षुर्विज्ञानधातुना ये धर्माः ....पू०.....मनोधातुना ये धर्माः .... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः....पू०..... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४१९. समुदयसत्येन ये धर्माः .... मार्गसत्येन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी) ४१७. जो धर्म वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध और संस्कारस्कन्ध के साथ सम्प्रयुक्त है, वे कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में वे धर्म संग्रहीत हैं? वे धर्म तीन स्कन्धों में, दो आयतनों में और आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों में, दस आयतनों में और दस धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४१८. जो धर्म विज्ञानस्कन्ध.... मन आयतन.... चक्षुविज्ञानधातु....मनोधातु.... मनोविज्ञानधातु के साथ सम्प्रयुक्त हैं .... पू०... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु से संग्रहीत हैं; कितनों से असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं के द्वारा असंग्रहीत हैं।

४१९. जो धर्म समुदय से.... मार्गसत्य के साथ सम्प्रयुक्त है ... पू०.. वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं के द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२०. मनिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२१. सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता..., ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२२. उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि सत्तहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२३. सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा...

(सं.)- ४२०. मनः इन्द्रियेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२१. सुखेन्द्रियेन ये धर्माः .... दुःखेन्द्रियेण ये धर्माः .... सौमनस्येन्द्रियेन ये धर्माः .... दौर्मनस्येन्द्रियेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः...., ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२२. उपेक्षेन्द्रियेन ये धर्माः: सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां सप्तभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। त्रिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्यां दशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२३. श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः .... वीर्येन्द्रियेण ये धर्माः .... स्मृतीन्द्रियेण ये धर्माः... समाधीन्द्रियेण ये धर्माः .... प्रज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः... अनज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेण ये धर्माः .... आज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः... आज्ञातावीन्द्रियेण ये धर्माः... अविद्ययाः ये धर्माः...

(हिन्दी)- ४२०. जो धर्म मन इन्द्रिय के साथ सम्प्रयुक्त है....वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु के द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं के द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२१. जो धर्म सुख इन्द्रिय से.... दुःख इन्द्रिय .... सौमनस्य इन्द्रिय .... दौर्मनस्य इन्द्रिय सम्प्रयुक्त है .... वे धर्म तीन स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातु के द्वारा संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं के द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२२. जो धर्म उपेक्षा इन्द्रिय के साथ सम्प्रयुक्त है.... वे धर्म तीन स्कन्धों, दो आयतनों और सात धातुओं के द्वारा संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और ग्यारह धातुओं के द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२३. जो धर्म श्रद्धा इन्द्रिय ....वीर्य इन्द्रिय....स्मृति इन्द्रिय....समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय.... अनज्ञातं आज्ञास्यामि इन्द्रिय.... आज्ञा इन्द्रिय.... आज्ञातावी इन्द्रिय.... अविद्या....

अविज्जापच्चया सङ्खारेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२४. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२५. सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२६. फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२४. संस्कारप्रत्ययाद् विज्ञानेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः सङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२५. षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनै दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२६. स्पर्शप्रत्ययाद् वेदनया ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्गहीता।

(हिन्दी)- अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कारों से जो धर्म सम्प्रयुक्त है, ... वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२४. जो धर्म संस्कार के कारण से उत्पन्न विज्ञान के साथ सम्प्रयुक्त है.... वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२५. जो धर्म षडायतन के कारण उत्पन्न स्पर्श के साथ सम्प्रयुक्त है.... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२६. जो धर्म स्पर्श के द्वारा वेदना के साथ.... वे धर्म तीन स्कन्धों से, दो आयतनों और आठ धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों से, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२७. वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२८. सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४२९. उपायासेन ये धम्मा... सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३०. इद्धिपादेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४२७. वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णया ये धर्माः .... तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः ... कर्मभवेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२८. शोकेन ये धर्माः ..... दुःखेन ये धर्माः .... दौर्मनस्येन ये धर्म सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४२९. उपासायेन ये धर्माः ..... स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः .... सम्यक्प्रधानेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३०. ऋद्धिपादेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्गहीता। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- ४२७. जो धर्म वेदना से उत्पन्न तृष्णा से.... तृष्णा से उत्पन्न उपादान .... कर्मभव के द्वारा जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२८. जो धर्म शोक से... दुःख... दौर्मनस्य के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है.....वे धर्म तीन स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों से असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४२९. जो धर्म उपायास के साथ.....स्मृतिप्रस्थान..... सम्यक् प्रधान के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३०. जो धर्म ऋद्धिपाद से सम्प्रयुक्त है.....वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों से, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३१. ज्ञानेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३२. अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३३. फस्सेन ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३४. वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४३१. ध्यानेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् दशभिः आयतनैः षोडशभि धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३२. अप्रमाणेन ये धर्माः .... पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः ... पञ्चभिः बलैः ये धर्माः .... सप्तभिः बोध्यंगैः ये धर्माः ... आर्येण अष्टाङ्किेन मार्गेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३३. स्पर्शेण ये धर्माः ... चेतनया ये धर्माः ... मनसिकारेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भि स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३४. वेदनया ये धर्माः ... संज्ञया ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- ४३१. जो धर्म ध्यान के साथ सम्प्रयुक्त है.....वे धर्म तीन स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३२. जो धर्म अप्रमाण से .....पांच इन्द्रियों ..... पांच बलों .....सात बोध्यंगों .....आर्य अष्टांग मार्ग के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३३. जो धर्म स्पर्श के साथ..... चेतना.....मनसिकार के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है .....वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और आठ धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३४. जो धर्म वेदना के साथ..... संज्ञा के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, दो आयतनों और आठ धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं। कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों से, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३५. चित्तेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३६. अधिमोक्खेन ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३७. सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... अवितक्कविचारमत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४३५. चित्तेन ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? त्रिभिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३६. अधिमोक्षेण ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३७. सुखवेदनया सम्प्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ... दुःखवेदनया सम्प्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ... अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्तैः ये धर्माः... सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः ... अवितर्काविचारमात्रकैः धर्मैः ये धर्माः .... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः ... सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः .... उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायनतेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- ४३५. जो धर्म चित्त से सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म तीन स्कन्धों से, एक आयतन और एक धातु के द्वारा संग्रहीत हैं। कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों , ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३६. जो धर्म अधिमोक्ष से सम्प्रयुक्त है.....वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और तीन धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३७. जो धर्म सुख वेदना के साथ सम्प्रयुक्त धर्म से.... दुःख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्म से.... अदुःखअसुख वेदना के साथ सम्प्रयुक्त धर्मों.... सवितर्कसविचार धर्मों.... अवितर्कविचारमात्र धर्मों.... प्रीतिसहगतधर्मों.... सुखसहगत धर्मों ....उपेक्षासहगत धर्मों के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है ..... वे धर्म एक - स्कन्ध से, एक आयतन और एक धातु द्वारा संग्रहीत हैं। कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों से, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३८. हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४३९. सहेतुकेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुसहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४४०. आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४३८. हेतुधर्मैः ये धर्माः .... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः ... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४३९. सहेतुकैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः .... हेतुसम्प्रयुक्तैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः .... न हेतुसहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४४०. आस्रवधर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च धर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव आस्रवसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्म सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी) ४३८. जो धर्म हेतु धर्मों.... हेतु और सहेतुक.... हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त है .....वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४३९. जो धर्म सहेतुक और अहेतुभूत धर्मों..... हेतुसम्प्रयुक्त और अहेतुभूत धर्मों .... न हेतुसहेतुक धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु द्वारा संग्रहीत हैं। कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों से, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४०. जो धर्म आस्रव धर्म ... आस्रव और सास्रव धर्म ... आस्रव और आस्रव सम्प्रयुक्त धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातु से संग्रहीत हैं। कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४१. आसवसम्पयुत्तेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४४२. संयोजनेहि धम्मेहि ये धम्मा... गन्थेहि धम्मेहि ये धम्मा... ओघेहि धम्मेहि ये धम्मा... योगेहि धम्मेहि ये धम्मा... नीवरणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि चेव परामट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४४३. परामाससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४४४. चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? द्वीहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि

(सं.)- ४४१. आस्रवसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च आस्रवधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभि असङ्ग्रहीताः।

४४२. संयोजनधर्मैः ये धर्माः .... ग्रन्थधर्मैः ये धर्माः... ओघधर्मैः ये धर्माः .... योगधर्मैः ये धर्माः ... नीवरणधर्मैः ये धर्माः... परामर्शधर्मैः ये धर्माः... परामर्शैः चैव परामृष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४४३. परामर्शसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४४४. चित्तधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? द्वाभ्याम् स्कन्धाभ्याम् एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः

(हिन्दी)- ४४१. जो धर्म आस्रव सम्प्रयुक्त धर्मों और अनास्रवभूत धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त है.... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु से संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों से, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४२. जो धर्म संयोजन धर्मों .... ग्रंथी धर्म से.... ओघ धर्म से जो धर्म.... योग धर्म से जो धर्म.... नीवरण धर्म से जो धर्म.... परामर्श धर्म से जो धर्म..... परामर्श और परामृष्ट धर्म के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों और दो धातु से संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४३. जो धर्म परामर्श धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त..... वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४४. जो धर्म चित्त धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त.....वे धर्म तीन स्कन्धों, एक आयतन और एक धातु द्वारा

असङ्गहिता।

४४५. चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि असङ्गहिता।

४४६. उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४४७. संकिलिट्ठेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि चेव नो च

(सं.)- असङ्ग्रहीताः।

४४५. चैतसिकधर्मैः ये धर्माः ... चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः .... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः ... चित्तसंसृष्ठसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः ....चित्तसंसृष्ठसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः ..... चित्तसंसृष्ठसमुत्थानानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः... ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४४६. उपादानधर्मैः ये धर्माः ....क्लेशधर्मैः ये धर्माः... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः .... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः .... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः

४४७. संक्लिष्टैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः .....क्लेशसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च

(हिन्दी)- संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? दो स्कन्धों से, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४५. जो धर्म चैतसिक धर्मों के साथ.... चित्त सम्प्रयुक्त धर्मों.... चित्तसंसृष्ट धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थान धर्मों....चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभू धर्मों.... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्ति धर्मों के साथ सम्प्रयुक्त है..... वे धर्म एक स्कन्ध से, एक आयतन और सात धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४६. जो धर्म उपादान धर्मों.... क्लेश धर्मों.... क्लेश एवं सांक्लेशिक धर्मों.... क्लेश एवं संक्लिष्ट धर्मों.... क्लेश एवं क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों के साथ..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

४४७. जो धर्म संक्लिष्ट और अक्लेशभूत धर्मों.....क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों और

किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पीतिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा एकेन खन्धेन एकेनायतनेन एकाय धातुया सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि असङ्गहिता।

रूपक्खन्धा चत्तारो, मनायतनमेव च।
विञ्ञाणधातुयो सत्त, द्वे सच्चा चुद्दसिन्द्रिया॥
पच्चये द्वादस पदा, ततो उपरि सोळस।
तिकेसु अट्ठ गोच्छके, तेचत्तालीसमेव च॥
महन्तरदुके सत्त, पदा पिट्ठिदुकेसु छ।
नवमस्स पदस्सेते, निद्देसे सङ्गहं गताति॥

सम्पयुत्तेनसङ्गहितासङ्गहितपदनिद्देसो द्वादसमो।

(सं.)- क्लेशधर्मैः ये धर्माः ....सवितर्कधर्मैः ये धर्माः ....सविचारधर्मैः ये धर्माः... सप्रीतिकधर्मैः ये धर्माः... प्रीतिसहगतधर्मैः ये धर्माः ..... सुखसहगतधर्मैः ये धर्माः .... उपेक्षासहगतधर्मैः ये धर्माः सम्प्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः एकेन स्कन्धेन एकेनायतनेन एकेन धातुना सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकादशभिः आयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

रूपस्कन्धा चत्वारः, मन आयतनमेव च।
विज्ञानधातवः सप्तः, द्वे सत्ये चतुर्दशेन्द्रियानि।
प्रत्यये द्वादश पदानि, ततः उपरि षोडश।
त्रिकेषु अष्ट गुच्छकाणि, त्रिचत्वारिंशमेव च।।
महदन्तर द्विके सप्त, पदाणि पृष्टद्विकेषु षट्।
नवमस्य पदस्यैते, निर्देशे सङ्ग्रहं गता इति।।

सम्प्रयुक्तेनसङ्ग्रहीताः सङ्ग्रहीतपदनिर्देशः द्वादशमः।

(हिन्दी)- अक्लेशभूत धर्मों..... सवितर्क धर्मों.....सविचार धर्मों.....सप्रीतिक धर्मों..... प्रीतिसहगत धर्मों..... सुखसहगत धर्मों..... उपेक्षासहगत धर्मों के साथ जो धर्म सम्प्रयुक्त है, वे धर्म कितनों स्कन्धों, कितने आयतनों और कितने धातुओं द्वारा संग्रहीत है? वे धर्म एक स्कन्ध, एक आयतन और एक धातु द्वारा संग्रहीत हैं; कितनों के द्वारा असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, ग्यारह आयतनों और सत्रह धातुओं द्वारा असंग्रहीत हैं।

चार रूपस्कन्ध और मन आयतन।
सात विज्ञानधातु, दो सत्य चौदह इन्द्रियाँ।।
प्रतीत्यसमुत्पन्न के बारह पद, उपरान्त त्रिक।
८ त्रिक मातृकाएँ, ४३ गुच्छक।।
महान्तर द्विक सात, पिछली और विकार बाद की छः मातृकाएँ। नौ अध्याय में धर्म संग्रहीत हैं।

****

१३. तेरसमनयो

१३. असङ्गहितेनसम्पयुत्तविप्पयुत्तपदनिद्देसो

४४८. रूपक्खन्धेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ता? ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४४९. धम्मायतनेन ये धम्मा... धम्मधातुया ये धम्मा... इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा... जीवितिन्द्रियेन ये धम्मा... विञ्ञाणपच्चया नामरूपेन ये धम्मा... असञ्ञाभवेन ये धम्मा... एकवोकारभवेन ये धम्मा... जातिया ये धम्मा... जराय ये धम्मा... मरणेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता...पे०... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता;

(सं.)- १३. असङ्ग्रहीतेन सम्प्रयुक्त विप्रयुक्तपदनिर्देशः

४४८. रूपस्कन्धेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः? ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४४९. धर्मायतनेन ये धर्माः ..... धर्मधातुना... स्त्रीन्द्रियेण ये धर्माः...पुरुषेन्द्रियेण ये धर्माः ..... विज्ञानप्रत्ययाद् नामरूपेण ये धर्माः ...असंज्ञाभवेन ये धर्माः .... एकविकारभवेन ये धर्माः ....जात्या ये धर्माः .... जरया ये धर्माः ..... मरणेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असंग्रहीता आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः... पू.. .. ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धेन सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतेन एकेन धातुना कैश्चित्, सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः;

(हिन्दी)- ४४८. जो धर्म रूपस्कन्ध, आयतन और धातुओं के अंतर्गत संग्रहीत नहीं है वे धर्म कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में सम्प्रयुक्त हैं? वे धर्म तीन स्कन्धों के साथ सम्प्रयुक्त हैं, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों से विप्रयुक्त हैं। एक स्कन्ध से, दस आयतनों से और दस धातुओं में विप्रयुक्त हैं, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४४९. जो धर्म धर्मायतन से.... धर्मधातु .... स्त्री इन्द्रिय....पुरुष इन्द्रिय.... जीवितेन्द्रिय.... विज्ञान के कारण से उत्पन्न नामरूप .... असंज्ञाभव ..... एकविकारभव..... जाति .... जरा .... मरण से उत्पन्न जो धर्म स्कन्ध, आयतन और धातु संग्रह से असंग्रहीत है...पू०..... वे धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं; कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं।

एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४५०. अरूपभवेन ये धम्मा... नेवसञ्ञानासञ्ञाभवेन ये धम्मा... चतुवोकारभवेन ये धम्मा... इद्धिपादेन ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि? कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४५१. कुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... अकुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... विपाकेहि धम्मेहि ये धम्मा... विपाकधम्मधम्मेहि ये धम्मा... अनुपादिन्नअनुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलिट्ठअसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... अवितक्कविचारमत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा...

(सं.)- एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४५०. अरूपभवेन ये धर्माः .... नैवसंज्ञानासंज्ञाभवेन ये धर्माः .... चतुर्विकारभवेन ये धर्माः .... ऋद्धिपादेन ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति? कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४५१. कुशलधर्मैः ये धर्माः ..... अकुशलधर्मैः ये धर्माः ..... सुखवेदनया सम्प्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ..... दुःखवेदनया सम्प्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ..... अदुःखासुखावेदनया सम्प्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ..... विपाकधर्मैः ये धर्माः .....विपाकधर्मधर्मैः ये धर्माः ..... अनुपादिन्नानुपादानीयैः धर्मैः ये धर्माः ..... संक्लिष्टसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः ..... असंक्लिष्टसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः ..... सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः ..... अवितर्कविचारमात्रकैः धर्मैः ये धर्माः ..... प्रीतिसहगतधर्मैः ये धर्माः ..... सुखसहगतधर्मैः ये धर्माः ..... उपेक्षासहगतधर्मैः ये धर्माः .....

हिन्दी- एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४५०. जो धर्म अरूपभाव से.... नैसंज्ञानासंज्ञाभव..... चतुर्विकारभव ..... ऋद्धिपाद के साथ स्कन्धसंग्रह, आयतनसंग्रह से और धातुसंग्रह से असंग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं द्वारा सम्प्रयुक्त हैं? किसी से नहीं। कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४५१. जो धर्म कुशल धर्मों से (असंग्रहीत है) .... अकुशल.... सुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों ....दुःख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों.... अदुःखअसुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों .... विपाक धर्मों .... विपाक धर्म वाले धर्मों .... अनुपाद अनुपादानीय धर्मों .... संक्लिष्ट सांक्लेशिक धर्मों ..... असंक्लिष्ट असांक्लेशिक धर्मों ..... सवितर्कसविचार धर्मों.... अवितर्कविचारमात्र धर्मों.... प्रीतिसहगत धर्मों .... सुखसहगत धर्मों....उपेक्षासहगत धर्मों .....

दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... आचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... अपचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... सेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... असेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... महग्गतेहि धम्मेहि ये धम्मा... अप्पमाणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परित्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... महग्गतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अप्पमाणारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... हीनेहि धम्मेहि ये धम्मा... पणीतेहि धम्मेहि ये धम्मा ... मिच्छत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सम्मत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गाधिपतीहि धम्मेहि ये धम्मा... अतीतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनागतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... पच्चुप्पन्नारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... बहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तबहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुसहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन

(सं.)- दर्शनेन प्रहातव्यधर्मैः ये धर्माः ..... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः ..... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः ..... भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः ..... आचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः ..... अपचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः ..... शैक्षधर्मैः ये धर्माः ..... अशैक्षधर्मैः ये धर्माः ..... महद्गतधर्मैः ये धर्माः ..... अप्रमाणधर्मैः ये धर्माः ..... परित्तालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... महद्गतालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... अप्रमाणालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... हीनधर्मैः ये धर्माः ..... प्रणीतधर्मैः ये धर्माः ..... मिथ्यात्वनियतधर्मैः ये धर्माः ..... सम्यकत्वनियतधर्मैः ये धर्माः ..... मार्गालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... मार्गहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः ..... मार्गाधिपतिधर्मैः ये धर्माः ..... अतीतालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... अनागतालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... प्रत्युत्पन्नालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... अध्यात्मालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... बहिर्द्धालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... अध्यात्मबहिर्द्धालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... सहेतुकधर्मैः ये धर्माः ..... हेतुसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ..... सहेतुकैः चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्मा..... हेतुधर्मैः ये धर्माः ..... हेतुसम्प्रयुक्तैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः ..... न हेतुसहेतुकधर्मैः ये धर्माः ..... स्कन्धसङ्ग्रहेण

(हिन्दी) - जो धर्म दर्शन के द्वारा प्रहाण करने योग्य धर्मों ..... भावना के द्वारा प्रहाण करने योग्य धर्मों ..... दर्शन के द्वारा प्रहाण करने योग्य हेतु धर्मों ..... भावना के द्वारा प्रहाण करने योग्य हेतु वाले धर्मों ..... आचयगामी धर्मों ..... अपचयगामी धर्मों....शैक्ष्य धर्मों .....अशैक्ष्य धर्मों ....महद्गत धर्मों .....अप्रमाण धर्मों ....प्ररित्तालम्बन धर्मों ..... महद्गतालम्बन धर्मों ..... अप्रमाणालम्बन धर्मों ..... हीन धर्मों ..... प्रणीत धर्मों ..... मिथ्यात्वनियत धर्मों .... सम्यकत्वनियत धर्मों .... मार्गालम्बन वाले धर्मों .... मार्गहेतु धर्मों ....मार्गाधिपति धर्मों .... अतीतालम्बन वाले धर्मों.... अनागतालम्बन वाले धर्मों.... प्रत्युत्पन्नालम्बन वाले धर्मों....अध्यात्मालम्बन धर्मों .... बाह्यालम्बन वाले धर्मों .... अध्यात्म एवं बाह्यालम्बन वाले धर्मों .... सहेतुक धर्मों.... हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों.... सहेतुक और अहेतुभूत धर्मों .... अहेतुभूत और हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों .... अहेतुभूत और सहेतुक धर्मों के साथ स्कन्धों,

असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४५२. रूपीहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता... ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४५३. अरूपीहि धम्मेहि ये धम्मा... लोकुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंयोजनियेहि धम्मेहि ये धम्मा... अगन्थनियेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनोघनियेहि धम्मेहि ये धम्मा... अयोगनियेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनीवरणियेहि धम्मेहि ये धम्मा... अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा...

(सं.)- असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४५२. रूपिधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः... ये धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनने एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४५३. अरूपिधर्मैः ये धर्माः ... लोकोत्तरधर्मैः ये धर्माः ... अनास्रवधर्मैः ये धर्माः ... आस्रवसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... आस्रवविप्रयुक्तैश्चैव नश्च आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः .... आस्रविप्रयुक्तैः अनास्रवधर्मैः ये धर्माः ... असंयोजनीयधर्मैः ये धर्माः ... अग्रन्थनीयधर्मैः ये धर्माः ... अनोघनीयधर्मैः ये धर्माः..... अयोगनीयधर्मैः ये धर्माः...अनीवरणीयधर्मैः ये धर्माः ...अपरामृष्ठधर्मैः ये धर्माः...

(हिं)- आयतनों एवं धातुओं संग्रह के साथ असंग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों, कितने आयतनों, कितने धातुओं द्वारा सम्प्रयुक्त हैं? किसी से नहीं है। कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४५२. जो धर्म रूपी धर्मों के साथ स्कन्धों, आयतनों और धातुओं से असंग्रहीत है...पू०..... वे धर्म तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त, एक आयतन से और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं, एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४५३. जो धर्म अरूपीधर्मों (असंग्रहीत है) .... लोकोत्तर धर्मों ..... अनास्रव धर्मों ..... आस्रवसम्प्रयुक्त धर्मों .... आस्रवविप्रयुक्त और अनास्रवभूत धर्मों ... .. आस्रव विप्रयुक्त अनास्रव धर्मों..... असंयोजनीय धर्मों .... अग्रंथनीय धर्मों .... अनोघनीय धर्मों .... अयोगनीय धर्मों **...** अनीवरण धर्मों .... अपरामृष्ट धर्मों ....

परामाससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासविप्पयुत्तेहि अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... सारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

४५४. अनारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... नो चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा ... चित्तविसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा... बाहिरेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादाधम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता धातुसङ्गेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ता? ते धम्मा तीहि खन्धेहि सम्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि सम्पयुत्ता। कतिहि विप्पयुत्ता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

(सं.)- परामर्शसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ...परामर्शविप्रयुक्तैः अपरामृष्टधर्मैः ये धर्माः ...सालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः ...स्कन्धसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

४५४. अनालम्बनधर्मैः ये धर्माः .... न चित्तधर्मैः ये धर्माः ... चित्तविप्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... चित्तविसंसृष्टधर्मैः ये धर्माः ... चित्तसमुत्थानधर्मैः ये धर्माः ... चित्तसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः ... चित्तानुपरिवर्तिभिः धर्मैः ये धर्माः ... बाह्यधर्मैः ये धर्माः ... उपादाय धर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेण असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेन असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ताः? ते धर्माः त्रिभिः स्कन्धैः सम्प्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चित् सम्प्रयुक्ताः। कतिभिः विप्रयुक्ताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

(हिन्दी) - परामर्शसम्प्रयुक्त धर्मों .... परामर्शविप्रयुक्त अपरामृष्ट धर्मों .... सालम्बन धर्मों के साथ स्कन्धों, आयतनों एवं धातुओं में असंग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं द्वारा सम्प्रयुक्त हैं? नहीं। कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४५४. जो धर्म अनालम्बन वाले धर्मों.... अचित्त धर्मों .... चित्तविप्रयुक्त धर्मों .... चित्तविसंसृष्ट धर्मों .... चित्तसमुत्थान धर्मों .... चित्तसहभू धर्मों .... चित्तानुपरिवर्ती धर्मों .... बाह्य धर्मों .... उपादान धर्मों स्कन्धों, आयतनों एवं धातुओं में असंग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं सम्प्रयुक्त हैं? वह तीन स्कन्धों से सम्प्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से सम्प्रयुक्त हैं। कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

४५५. अनुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादानसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादानसम्पयुत्तेहि चेव नो च उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादानविप्पयुत्तेहि अनुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलिट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसविप्पयुत्तेहि असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पीतिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... न कामावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... रूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अरूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अपरियापन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... निय्यानिकेहि धम्मेहि ये धम्मा ... नियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा... सरणेहि धम्मेहि ये धम्मा खन्धसङ्गहेन असङ्गहिता आयतनसङ्गहेन

(सं.)- ४५५. अनुपादानीयधर्मैः ये धर्माः ... उपादानसम्प्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ... उपादानसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च उपादानधर्मैः ये धर्माः... उपादानविप्रयुक्तै अनुपादानीयैः धर्मैः ये धर्माः ... असङ्क्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः ... असंक्लिष्टैः धर्मैः ये धर्माः ... क्लेशसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... संक्लिष्टैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः ... क्लेशसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च क्लेशधर्मैः ये धर्माः ... क्लेशविप्रयुक्तै असंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः ... दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः ... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः .... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः ... भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः ... सवितर्कैः धर्मैः ये धर्माः ... सविचारैः धर्मैः ये धर्माः ... सप्रीतिकैः धर्मैः ये धर्माः ... प्रीतिसहगतैः धर्मैः ये धर्माः ... सुखसहगतैः धर्मैः ये धर्माः ... उपेक्षासहगतैः धर्मैः ये धर्माः ... न कामावचरैः धर्मैः ये धर्माः ... रूपावचरैः धर्मैः ये धर्माः ... अरूपावचरैः धर्मैः ये धर्माः ... अपर्यापन्नधर्मैः ये धर्माः ... निर्याणिकधर्मैः ये धर्माः ... नियतधर्मैः ये धर्माः ... अनुत्तरधर्मैः ये धर्माः ... शरणधर्मैः ये धर्माः स्कन्धसङ्ग्रहेण असङ्ग्रहीताः आयतनसङ्ग्रहेण

(हिन्दी)- ४५५. जो धर्म अनुपादानीय धर्मों से.... उपादानसम्प्रयुक्त धर्मों .... उपादानसम्प्रयुक्त एवं अनुपादानभूत धर्मों .... उपादानविप्रयुक्त धर्मों ....अनुपादानीय धर्मों ....असांक्लेशिक धर्मों ....असंक्लिष्ट धर्मों .... क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों .... संक्लिष्ट और अक्लेशभूत धर्मों .... क्लेशसम्प्रयुक्त और अक्लेशभूत धर्मों .... क्लेश विप्रयुक्त एवं असांक्लेशिक धर्मों .... दर्शन से प्रहाण करने योग्य धर्मों.... भावना से प्रहाण करने योग्य धर्म जो धर्म....दर्शन से प्रहाण करने योग्य हेतुओं वाले धर्मों ....भावना से प्रहाण करने योग्य हेतुओं वाले.... सवितर्क धर्मों .... सविचार धर्मों .... सप्रीतिक धर्मों .... प्रीतिसहगत धर्मों .... सुखसहगत धर्मों .... उपेक्षासहगत धर्मों .... कामावचर भूमि में न रहने वाले धर्मों .. ... रूपावचरधर्मों .... अरूपावचर धर्मों .... अपर्यापन्न धर्मों .... निर्यानिक धर्मों .... नियता धर्मों .... अनुत्तर धर्मों .... सरणा धर्मों के साथ जो धर्म स्कन्धों, आयतनों

असङ्गहिता धातुसङ्गहेन असङ्गहिता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सम्पयुत्ताति? नत्थि। कतिहि विप्पयुत्ता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि विप्पयुत्ता; एकेनायतनेन एकाय धातुया केहिचि विप्पयुत्ता।

रूपञ्च धम्मायतनं धम्मधातु, इत्थिपुमं जीवितं नामरूपं।
द्वे भवा जातिजरा मच्चुरूपं, अनारम्मणं नो चित्तं चित्तेन विप्पयुत्तं॥
विसंसट्ठं समुट्ठानसहभु, अनुपरिवत्ति बाहिरं उपादा।
द्वे विसयो एसनयो सुबुद्धोति॥

असङ्गहितेनसम्पयुत्तविप्पयुत्तपदनिद्देसो तेरसमो।

(सं.)- असङ्ग्रहीताः धातुसङ्ग्रहेण असङ्ग्रहीताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सम्प्रयुक्ता इति? नास्ति। कतिभिः विप्रयुक्ताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः विप्रयुक्ताः; एकेनायतनेन एकेन धातुना कैश्चिद् विप्रयुक्ताः।

रूपञ्च धर्मायतनं धर्मधातु, स्त्रीपुमं जीवितं नामरूपम्।
द्वे भवे जातिजरा मृत्युरूपम्, अनालम्बनं न चित्तं चित्तेन विप्रयुक्तम्।।
विसंसृष्ठं समुत्थानसहभू, अनुपरिवर्ति बाह्य उपादानम्।
द्वौ विषयौ एषनयः सुबुद्धः इति।

असङ्ग्रहीतेण सम्प्रयुक्तविप्रयुक्त पदनिर्देशः त्रिदशः।

(हिन्दी) -एवं धातुओं में असंग्रहीत है, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं सम्प्रयुक्त हैं? नहीं। कितनों के द्वारा विप्रयुक्त हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं द्वारा विप्रयुक्त हैं; एक आयतन और एक धातु में आंशिक रूप से विप्रयुक्त हैं।

रूप और धर्मायतन धर्मधातु, स्त्रीपुरुष जीवित नामरूप ।
दो भव जाति जरा और मरण, अनालम्बन न चित्त चित्त विप्रयुक्त।।
विसंसृष्ट समुत्थान सहभू, अनुपरिवर्ति बाह्य उपादान।
दो विषय, यह पद्धति भाली भाँति जानी गई है।।

******

१४. चुद्दसमनयो

१४. विप्पयुत्तेनसङ्गहितासङ्गहितपदनिद्देसो

१. खन्धादि

४५६. रूपक्खन्धेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४५७. वेदनाक्खन्धेन ये धम्मा... सञ्ञाक्खन्धेन ये धम्मा... सङ्खारक्खन्धेन ये धम्मा... विञ्ञाणक्खन्धेन ये धम्मा... मनायतनेन ये धम्मा... मनिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

४५८. चक्खायतनेन ये धम्मा...पे०... फोट्ठब्बायतनेन ये धम्मा... चक्खुधातुया ये धम्मा...पे०... फोट्ठब्बधातुया ये धम्मा विप्पयुत्ता...पे०... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि

(सं.)- १४. विप्रयुक्तेण सङ्ग्रहीताः सङ्ग्रहीत पदनिर्देशः

१. स्कन्धादि ४५६. रूपस्कन्धेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४५७. वेदनास्कन्धेण ये धर्माः .... संज्ञास्कन्धेण ये धर्माः .... संस्कारस्कन्धेण ये धर्माः .... विज्ञानस्कन्धेन ये धर्माः .... मन आयतनेन ये धर्माः ..... मन इन्द्रियेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धः हित्वा एकेन स्कन्धेण एकादशभिः आयतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४५८. चक्ष्वायतनेन ये धर्माः... पू..... स्प्रष्टव्यायतनेन ये धर्माः... चक्षु धातुना ये धर्माः ....पू०..... स्प्रष्टव्य धातुना ये धर्माः विप्रयुक्ताः...पू०..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम्

(हिन्दी)- ४५६. जो धर्म रूपस्कन्ध से विप्रयुक्त है, वे धर्म कितने स्कन्धों, आयतनों और धातुओं में संग्रहीत हैं? वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतन और आठ धातुओं में वे संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४५७. जो धर्म वेदनास्कन्ध .... संज्ञास्कन्ध.... संस्कारस्कन्ध.... विज्ञानस्कन्ध.... मन आयतन.... मन इन्द्रिय से विप्रयुक्त है, वे धर्म कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों, कितने धातुओं संग्रहीत है? वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर, एक स्कन्ध से, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं से संग्रहीत हैं; कितनों से असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४५८. जो धर्म चक्षु आयतन.... पू.... स्प्रष्टव्यायतन .... पू.... चक्षुधातु .... पू.... स्प्रष्टव्यधातु से विप्रयुक्त है.... पू.... वे धर्म चार स्कन्धों से, दो आयतनों

अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४५९. चक्खुविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... सोतविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... घानविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... जिव्हाविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... कायविञ्ञाणधातुया ये धम्मा... मनोधातुया ये धम्मा... मनोविञ्ञाणधातुया ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि, एकाय धातुया असङ्गहिता।

२. सच्चादि

४६०. दुक्खसच्चेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४६१. समुदयसच्चेन ये धम्मा... मग्गसच्चेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं

(सं.)- अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४५९. चक्षुर्विज्ञानधातुना ये धर्माः .... श्रोत्रविज्ञानधातुना ये धर्माः .... घ्राणविज्ञानधातुना ये धर्माः .... जिह्वाविज्ञानधातुना ये धर्माः .... कायविज्ञानधातुना ये धर्माः .... मनोधातुना ये धर्माः... मनोविज्ञानधातुना ये धर्माः विप्रयुक्ताः ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः, एकेन धातुना असङग्रहीता।

२. सत्यादिः

४६०. दुःखसत्येन ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४६१. समुदयसत्येन ये धर्माः .... मार्गसत्येन ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः असंस्कृतं

(हिन्दी)- और आठ धातुओं से संग्रहीत हैं; कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४५९. जो धर्म चक्षुविज्ञानधातु .... श्रोत्रविज्ञानधातु .... घ्राणविज्ञानधातु.... जिह्वाविज्ञानधातु कायविज्ञानधातु.... मनोधातु.... मनोविज्ञानधातु से जो धर्म स्कन्ध...पू०..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों से, बारह आयतनों और सत्रह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और एक धातु से असंग्रहीत हैं।

४६०. जो धर्म दुःख सत्य से विप्रयुक्त है...पू०..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६१. जो धर्म समुदयसत्य से..... और मार्गसत्य से विप्रयुक्त है... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण स्कन्ध के रूप में

खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४६२. निरोधसच्चेन ये धम्मा... चक्खुन्द्रियेन ये धम्मा ... कायिन्द्रियेन ये धम्मा... इत्थिन्द्रियेन ये धम्मा... पुरिसिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४६३. सुखिन्द्रियेन ये धम्मा... दुक्खिन्द्रियेन ये धम्मा... सोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा... दोमनस्सिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४६४. उपेक्खिन्द्रियेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न काभिः च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४६२. निरोधसत्येन ये धर्माः..... चक्षुरिन्द्रियेण ये धर्माः ..... कायेन्द्रियेण ये धर्माः.... स्त्रीन्द्रियेन ये धर्माः....पुरुषेन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४६३. सुखेन्द्रियेण ये धर्माः... दुःखेन्द्रियेण ये धर्माः ..... दौर्मनस्येन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रीता? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४६४. उपेक्षेन्द्रियेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धतः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- छोड़कर पाँच स्कन्धों से, बारह आयतनों में, अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६२. जो धर्म निरोधसत्य .... चक्षु इन्द्रिय ..... काया इन्द्रिय ..... स्त्री इन्द्रिय ....पुरुष इन्द्रिय से विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६३. जो धर्म सुख इन्द्रिय से....दुःख इन्द्रिय....सौमनस्य इन्द्रिय....दौर्मनस्य इन्द्रिय से विप्रयुक्त है....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्ध, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६४. जो धर्म उपेक्षा इन्द्रिय से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्ध से, बारह आयतनों और तेरह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६५. सद्धिन्द्रियेन ये धम्मा... वीरियिन्द्रियेन ये धम्मा... सतिन्द्रियेन ये धम्मा... समाधिन्द्रियेन ये धम्मा... पञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञिन्द्रियेन ये धम्मा... अञ्ञाताविन्द्रियेन ये धम्मा... अविज्जाय ये धम्मा... अविज्जापच्चया सङ्खारेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४६६. सङ्खारपच्चया विञ्ञाणेन ये धम्मा... सळायतनपच्चया फस्सेन ये धम्मा... फस्सपच्चया वेदनाय ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

४६७. वेदनापच्चया तण्हाय ये धम्मा... तण्हापच्चया उपादानेन ये धम्मा... कम्मभवेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४६५. श्रद्धेन्द्रियेण ये धर्माः .. वीर्येन्द्रियेण ये धर्माः ..... स्मृतीन्द्रियेण ये धर्माः ... समाधीन्द्रियेण ये धर्माः ... प्रज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः ... अनज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियेण ये धर्माः ... आज्ञेन्द्रियेण ये धर्माः .... आज्ञातावीन्द्रियेन ये धर्माः .... अविद्यया ये धर्माः ..... अविद्याप्रत्ययाद् संस्कारैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ये धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशयतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न काभिः च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४६६. संस्कारप्रत्ययाद् विज्ञानेन ये धर्माः .. षडायतनप्रत्ययाद् स्पर्शेण ये धर्माः ... स्पर्शप्रत्ययाद् वेदनया ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा एकेन स्कन्धेन एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असंग्रहीताः।

४६७. वेदनाप्रत्ययाद् तृष्णया ये धर्माः....तृष्णाप्रत्ययाद् उपादानेन ये धर्माः ... कर्मभवेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धतः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः आयतनैः न काभिः च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- ४६५. जो धर्म श्रद्धाइन्द्रिय से....वीर्य इन्द्रिय....स्मृति इन्द्रिय....समाधि इन्द्रिय.... प्रज्ञा इन्द्रिय.... अनज्ञातं आज्ञास्यामि इन्द्रिय.... आज्ञा इन्द्रिय.... आज्ञाताावि इन्द्रिय.... अविद्या.... अविद्या के कारण से उत्पन्न संस्कार से जो धर्म विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्ध, बारह आयतनों में अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६६. जो धर्म संस्कारों के कारण से उत्पन्न विज्ञान से.... षडायतन के कारण से उत्पन्न स्पर्श .... स्पर्श के कारण से उत्पन्न वेदना से विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर एक स्कन्ध में, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों से, एक आयतन और सात धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६७. जो धर्म वेदना के कारण से उत्पन्न तृष्णा से.... तृष्णा के कारण से उत्पन्न उपादान से ..... कर्मभव से विप्रयुक्त है...वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्ध से, बारह आयतनों में अठारह

४६८. उपपत्तिभवेन ये धम्मा... सञ्ञाभवेन ये धम्मा... पञ्चवोकारभवेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४६९. कामभवेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि पञ्चहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि तेरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४७०. रूपभवेन ये धम्मा... असञ्ञाभवेन ये धम्मा... एकवोकारभवेन ये धम्मा... परिदेवेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४७१. अरूपभवेन ये धम्मा... नेवसञ्ञानासञ्ञाभवेन ये धम्मा... चतुवोकारभवेन ये धम्मा... सोकेन ये धम्मा... दुक्खेन ये धम्मा... दोमनस्सेन ये धम्मा... उपायासेन ये धम्मा...

(सं.)- ४६८. उपपत्तिभवेन ये धर्माः ... संज्ञाभवेन ये धर्माः ..... पञ्चविकारभवेन ये धर्माः विप्रमुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४६९. कामभवेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां पञ्चभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७०. रूपभवेन ये धर्माः .. असङ्ज्ञाभवेन ये धर्माः .... एकविकारभवेन ये धर्माः ... परिदेवेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७१. अरूपभवेन ये धर्माः .... नैवसंज्ञानासंज्ञाभवेन ये धर्माः ... चतुर्विकारभवेन ये धर्माः .... शोकेन ये धर्माः .... दुःखेन ये धर्माः ..... दौर्मनस्येन ये धर्माः .... उपासायेन ये धर्माः ...

(हिन्दी)- धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों में, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६८. जो धर्म उपपत्तिभव से.... संज्ञाभव .... पञ्च विकारभव से विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों, बारह आयतनों और तीन धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४६९. जो धर्म कामभव से विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और पाँच धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और तेरह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४७०. जो धर्म रूपभव से.... असंज्ञाभव .... एक विकारभव ..... परिदेव से विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धो, दो आयतनों और आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४७१. जो धर्म अरूपभव से.... नैवसंज्ञानासंज्ञाभव.... चार विकारभव.... शोक ... दुःख...दौर्मनस्य .....

सतिपट्ठानेन ये धम्मा... सम्मप्पधानेन ये धम्मा... इद्धिपादेन ये धम्मा... झानेन ये धम्मा... अप्पमञ्ञाय ये धम्मा... पञ्चहि इन्द्रियेहि ये धम्मा... पञ्चहि बलेहि ये धम्मा ... सत्तहि बोज्झङ्गेहि ये धम्मा... अरियेन अट्ठङ्गिकेन मग्गेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

३. फस्सादिसत्तकं

४७२. फस्सेन ये धम्मा... वेदनाय ये धम्मा... सञ्ञाय ये धम्मा... चेतनाय ये धम्मा... चित्तेन ये धम्मा... मनसिकारेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

४७३. अधिमोक्खेन ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया असङ्गहिता।

(सं.)- स्मृतिप्रस्थानेन ये धर्माः ..... सम्यक् प्रधानेन ये धर्माः .... ऋद्धिपादेन ये धर्माः .... ध्यानेन ये धर्माः ..... अप्रमाणेन ये धर्माः ..... पञ्चभिः इन्द्रियैः ये धर्माः... पञ्चभिः बलैः ये धर्माः ..... सप्तभिः बोध्यङ्गैः ये धर्माः .... आर्येण अष्टाङ्गिकेन मार्गेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न काभिः च धातुभिः असंस्कृताः।

४७२. स्पर्शेण ये धर्माः ... वेदनया ये धर्माः .... संज्ञया ये धर्माः .... चेतनया ये धर्माः ..... चित्तेन ये धर्माः... मनसिकारेन ये धर्माः विप्रयुक्ताः ... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा एकेन स्कन्धेन एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७३. अधिमोक्षेण ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- उपायास ..... स्मृतिप्रस्थान .... सम्यक् प्रधान ऋद्धिपाद ..... ध्यान .... अप्रमाण .... पाँच इन्द्रियों ..... पाँच बलों.....सात बोध्यंगों..... आर्य अष्टांग मार्गों से विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्ध, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४७२. जो धर्म स्पर्श .... वेदना ... संज्ञा ..... चेतना .... चित्त .... मनसिकार से विप्रयुक्त है ..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर एक स्कन्धों में, ग्यारह आयतनों में, ग्यारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४७३. जो धर्म अधिमोक्ष से विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और सत्रह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही

४. तिकं

४७४. कुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... अकुसलेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४७५. अब्याकतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४७६. अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... विपाकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४७४. कुशलधर्मैः ये धर्माः ... अकुशलधर्मैः ये धर्माः ... सुखवेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः... दुःखवेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न काभिः च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७५. अव्याकृतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्यां धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७६. अदुःखासुखया वेदनया सम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः .... विपाकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः....ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- आयतनों और एक धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४७४. जो धर्म कुशल धर्मों.... अकुशल धर्मों .... सुख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों .... दुःख वेदना से सम्प्रयुक्त धर्मों से विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों , न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४७५. जो धर्म अव्याकृत से विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों, बारह आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४७६. जो धर्म अदुःखअसुख वेदना के साथ सम्प्रयुक्त धर्मों से.... विपाक धर्मों विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और तेरह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और पाँच धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४७७. विपाकधम्मधम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४७८. नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मेहि ये धम्मा... अनुपादिन्नुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनुपादिन्नअनुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलिट्ठअसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४७९. उपादिन्नुपादानियेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

४८०. असंकिलिट्ठसंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि

(सं.)- ४७७. विपाकधर्मधर्मैः ये धर्माः .... संक्लिष्टसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धतः न कैश्चित् आयतनैः न काभिः च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७८. नैवविपाकनविपाकधर्मधर्मैः ये धर्माः .... अनुपादिन्नुपादानियैः धर्मैः ये धर्माः ..... अनुपादिन्नोपादनीयैः धर्मैः ये धर्माः ..... असंक्लिष्टअसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४७९. उपादिन्नोपादानीयैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः धर्मैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८०. असंक्लिष्टसंक्लेशिकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः

(हिन्दी)- ४७७. जो धर्म विपाकधर्म और विपाक न देने वाले धर्मों..... संक्लिष्ट सांक्लेशिक धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४७८. जो धर्म न विपाक धर्मों और न विपाक धर्म से युक्त धर्मों..... अनुपादिन्न उपादानीय धर्मों ..... अनुपादिन्न अनुपादानीय धर्मों ..... असंक्लिष्ट असांक्लेशिक धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४७९. जो धर्म उपादिन्न उपादानीय धर्म से विप्रयुक्त है....वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में तीन धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और पन्द्रह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८०. जो धर्म असंक्लिष्ट और सांक्लेशिक धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म चार स्कन्धों में,

द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४८१. सवितक्कसविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया असङ्गहिता।

४८२. अवितक्कविचारमत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४८३. अवितक्कअविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रीता।

४८१. सवितर्कसविचारैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

४८२. अवितर्कविचारमात्रकैः धर्मैः ये धर्माः .... प्रीतिसहगतधर्मैः ये धर्माः... सुखसहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८३. अवितर्काविचारैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशयतनैः त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- दो आयतनों और दो धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८१. जो धर्म सवितर्कसविचार धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और सत्रह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किसी स्कन्ध से, न किन्ही आयतनों और एक धातु से असंग्रहीत हैं।

४८२. जो धर्म अवितर्कविचारमात्र धर्मों .... प्रीतिसहगत धर्मों .... सुखसहगत धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातु से असंग्रहीत हैं।

४८३. जो धर्म अवितर्कअविचारमात्र धर्मों से विप्रयुक्त है.... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और तीन धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और पन्द्रह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८४. उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहिता।

४८५. दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... आचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... अपचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा... सेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... असेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... महग्गतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४८६. नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... नेवाचयगामिनापचयगामीहि धम्मेहि ये धम्मा...

(सं.)- ४८४. उपेक्षासहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशभिः आयतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८५. दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः...दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकधर्मैः ये धर्माः .... भावनया प्रहातव्यहेतुकधर्मैः ये धर्माः... आचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः ..... अपचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः ..... शैक्ष्यधर्मैः ये धर्माः ... अशैक्ष्यधर्मैः ये धर्माः .... महद्भूतैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न काभिः च धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८६. नैव दर्शनेन न भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः ... नैव दर्शनेन न भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः .... नैवाचयगामिनापचयगामिभिः धर्मैः ये धर्माः ...

(हिन्दी)- ४८४. जो धर्म उपेक्षासहगत धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में तेरह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और पाँच धातु से असंग्रहीत हैं।

४८५. जो धर्म दर्शन के द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य धर्मों से.... भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य धर्मों ....दर्शन के द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य हेतुओं वाले धर्मों ....भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य हेतुओं वाले धर्मों.... आचयगामी (वे धम्म जो कर्म-संचय के कारण बनते हैं) धर्मों .... अपचयगामी (जो कर्म-संचय के विनाश के कारण बनते हैं) धर्मों .... शैक्ष्य धर्मों .... अशैक्ष्य धर्मों .... महद्भूत धर्मों विप्रयुक्त है..... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८६. जो धर्म न दर्शन के द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य, न भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य धर्मों .... और जिन धर्मों के हेतु न दर्शन न भावना के द्वारा प्रहाण किए जाने योग्य हैं .... न आचयगामी न अपचयगामी धर्मों ....

नेवसेक्खनासेक्खेहि धम्मेहि ये धम्मा... परित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४८७. अप्पमाणेहि धम्मेहि ये धम्मा... पणीतेहि धम्मेहि ये विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४८८. परित्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि द्वादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि असङ्गहिता।

४८९. महग्गतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अप्पमाणारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... हीनेहि धम्मेहि ये धम्मा... मिच्छत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सम्मत्तनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... मग्गाधिपतीहि

(सं.)- नैवशैक्ष्यनाशैक्ष्यधर्मैः ये धर्माः .... प्ररिक्तधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८७. अप्रमाणधर्मैः ये धर्माः ..... प्रणीतधर्मैः ये विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८८. प्ररिक्तालम्बनधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः द्वादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षड्भिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४८९. महद्गतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः ... अप्रमाणालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः ... हीनधर्मैः ये धर्माः .... मिथ्यात्वनियतैः धर्मैः ये धर्माः .... सम्यकत्वनियतैः धर्मैः ये धर्माः ..... मार्गालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः ... मार्गहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः .... मार्गाधिपतिभिः

(हिन्दी)- न शैक्ष्य न अशैक्ष्य धर्मों .... प्ररिक्त धर्मों विप्रयुक्त है.....वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८७. जो धर्म अप्रमाण धर्मों.... प्रणीत धर्मों से विप्रयुक्त है वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में , दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८८. जो धर्म प्ररिक्तालम्बन (वे धम्म (मन की अवस्थाएँ) जिनका आलम्बन अल्प आकार वाला हैं) धर्मों से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में बारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४८९. जो धर्म महद्गतालम्बन वाले धर्मों से....अप्रमाणालम्बन धर्मों .... हीन धर्मों .... मिथ्यात्वनियत धर्मों .... सम्यकत्वनियत धर्मों .... मार्गालम्बन धर्मों .... मार्गहेतुक धर्मों ....मार्गाधिपति

धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४९०. मज्झिमेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४९१. उप्पन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनुप्पन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... उप्पादीहि धम्मेहि ये धम्मा... अतीतेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनागतेहि धम्मेहि ये धम्मा... पच्चुप्पन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... बहिद्धाहि धम्मेहि ये धम्मा... सनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनिदस्सनसप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९०. मध्यमधर्मैः ये धर्माः ... अनियतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९१. उत्पन्नधर्मैः ये धर्माः ... अनुत्पन्नधर्मैः ये धर्माः उत्पादिधर्मैः ये धर्माः ... अतीतधर्मैः ये धर्माः .... अनागतधर्मैः ये धर्माः .... प्रत्युत्पन्नधर्मैः ये धर्माः .... आध्यात्मिकधर्मैः ये धर्माः ... बाह्यधर्मैः ये धर्माः ..... सनिदर्शनसप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः ..... अनिदर्शन सप्रतिघैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- धर्मों विप्रयुक्त है.... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४९०. जो धर्म मध्यम धर्मों से....अनियत धर्मों से विप्रयुक्त है ....वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४९१. जो धर्म उत्पन्न धर्मों से.... अनुत्पन्न धर्मों .... उत्पादि धर्मों .... अतीत धर्मों .... अनागत धर्मों .... प्रत्युत्पन्न धर्मों ....अध्यात्म धर्मों .... बाह्य धर्मों .... सनिदर्शनसप्रतिघ धर्मों .... अनिदर्शनसप्रतिघ धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में, दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४९२. अतीतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनागतारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... बहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४९३. पच्चुप्पन्नारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... अज्झत्तबहिद्धारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि द्वादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि छहि धातूहि असङ्गहिता।

५. दुकं

४९४. हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव सहेतुकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... सहेतुकेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतूहि चेव हेतुसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... हेतुसम्पयुत्तेहि चेव न च हेतूहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुसहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा

(सं.)- ४९२. अतीतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः... अनागतालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः .... आध्यात्मालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः ..... बाह्यालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९३. प्रत्युत्पन्नालम्बनधर्मैः ये धर्माः ... आध्यात्मबाह्यालम्बनैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृत स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः द्वादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः षडभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९४. हेतुधर्मैः ये धर्माः ... सहेतुकधर्मैः ये धर्माः ... हेतुसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... हेतुभिश्चैव सहेतुकैश्च धर्मैः ये धर्माः .... सहेतुकैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः .... हेतुभिश्चैव हेतुसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः .... हेतुसम्प्रयुक्तैश्चैव न च हेतुधर्मैः ये धर्माः ... न हेतुसहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा

(हिन्दी)- ४९२. जो धर्म अतीतालम्बन धर्मों से.... अनागतालम्बन धर्मों .... अध्यात्मालम्बन धर्मों .... बाह्यालम्बन धर्मों विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४९३. जो धर्म प्रत्युत्पन्नालम्बन धर्मों से.... अध्यात्मबाह्यालम्बन () धर्मों विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में बारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और छह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४९४. जो धर्म हेतु धर्मों से.... सहेतुक धर्मों .... हेतुसम्प्रयुक्त धर्मों.... हेतु और सहेतुक धर्मों .... सहेतुक और हेतु धर्मों ....हेतु और हेतुसम्प्रयुक्त .... हेतुसम्प्रयुक्त और अहेतुभूत.... अहेतुभूत सहेतुक धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर

पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४९५. अहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... हेतुविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... न हेतुअहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

४९६. अप्पच्चयेहि धम्मेहि ये धम्मा... असङ्खतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सनिदस्सनेहि धम्मेहि ये धम्मा... सप्पटिघेहि धम्मेहि ये धम्मा... रूपीहि धम्मेहि ये धम्मा... लोकुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

४९७. लोकियेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९५. अहेतुकधर्मैः ये धर्माः .... हेतुविप्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... न हेत्वाहेतुकधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९६. अप्रत्ययधर्मैः ये धर्माः... असंस्कृतधर्मैः ये धर्माः ... सनिदर्शनैः धर्मैः ये धर्माः ..... सप्रतिघधर्मैः ये धर्माः .... रूपिधर्मैः ये धर्माः .... लोकोत्तरधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९७. लौकिकधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४९५. जो धर्म अहेतुक धर्मों से.... हेतुविप्रयुक्त धर्मों .... अहेतुभूतअहेतुक धर्मों विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और दो धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४९६. जो धर्म अप्रत्यय धर्मों से....असंस्कृत धर्मों .... सनिदर्शन धर्मों ....सप्रतिघ धर्मों .... रूपी धर्मों से विप्रयुक्त है .... लोकोत्तर धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४९७. जो धर्म लौकिक धर्म से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और दो धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

४९८. आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव सासवेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवेहि चेव आसवसम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... आसवसम्पयुत्तेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

४९९. सासवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... सासवेहि चेव नो च आसवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि सासवेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५००. अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा... आसवविप्पयुत्तेहि अनासवेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ४९८. आस्रवधर्मैः ये धर्माः ... आस्रवसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव सास्रवैश्च धर्मैः ये धर्माः ... आस्रवैश्चैव आस्रवसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः .... आस्रवसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशभिः आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

४९९. सास्रवधर्मैः ये धर्माः .... आस्रवविप्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... सास्रवैश्चैव नश्च आस्रवैः धर्मैः ये धर्माः .... आस्रवविप्रयुक्तैः सास्रवैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.. ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५००. अनास्रवधर्मैः ये धर्माः ..... आस्रवविप्रयुक्तैः अनास्रवधर्मैः ये धर्माः ..... विप्रयुक्ताः ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- ४९८. जो धर्म आस्रव धर्म से... आस्रवसम्प्रयुक्त धर्मों .... आस्रव धर्मों और सास्रव धर्मों ... आस्रव एवं आस्रवसम्प्रयुक्त से जो धर्म... आस्रवसम्प्रयुक्त और अनास्रवभूत धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किसी स्कन्ध से, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

४९९. जो धर्म सास्रव धर्मों से... आस्रवविप्रयुक्त धर्मों ... सास्रव और अनास्रवभूत धर्मों ... आस्रवविप्रयुक्त सास्रव धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५००. जो धर्म अनास्रव धर्मों ... आस्रवविप्रयुक्त अनास्रव धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों में और आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों में और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५०१. संयोजनेहि धम्मेहि ये धम्मा... गन्थेहि धम्मेहि ये धम्मा... ओघेहि धम्मेहि ये धम्मा... योगेहि धम्मेहि ये धम्मा... नीवरणेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामाससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासेहि चेव परामट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

५०२. परामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामट्ठेहि चेव नो च परामासेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासविप्पयुत्तेहि परामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५०३. अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... परामासविप्पयुत्तेहि अपरामट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि

(सं.)- ५०१. संयोजनधर्मैः ये धर्माः ..... ग्रन्थधर्मैः ये धर्माः ..... ओघधर्मैः ये धर्माः ... योगधर्मैः ये धर्माः ..... नीवरणधर्मैः ये धर्माः ..... परामर्शधर्मैः ये धर्माः ..... परामर्शसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ..... परामर्शभिश्चैव परमृष्टेभिश्च धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः ... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः अङ्ग्रहीता।

५०२. परामृष्टधर्मैः ये धर्माः ... परामर्शविप्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः .... परामृष्टेभिश्चैव न च परामर्शधर्मैः ये धर्माः ..... परामर्शविप्रयुयुक्तैः परामृष्टधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः .... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५०३. अपरामृष्टधर्मैः ये धर्माः ..... परामर्शविप्रयुक्तैः अपरामृष्टैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः चतुर्भिः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः

(हिन्दी)- ५०१. जो धर्म संयोजन धर्मों से.... ग्रंथी धर्मों .... ओघ धर्मों .... योग धर्मों .... नीवरण धर्मों.... परामर्शसम्प्रयुक्त धर्मों .... परामर्श एवं परामृष्ट धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों में अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५०२. जो धर्म परामृष्ट धर्मों .... परामर्शविप्रयुक्त धर्मों .... परामृष्ट और अपरामर्शभूत धर्मों .... परामर्शविप्रयुक्त परामृष्ट धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों में, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५०३. जो धर्म अपरामृष्ट धर्मों से.... परामर्शविप्रयुक्त अपरामृष्ट धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों दो आयतनों में और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से

असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

५०४. सारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चेतसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभूहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तीहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा एकेन खन्धेन एकादसहायतनेहि एकादसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? चतूहि खन्धेहि एकेनायतनेन सत्तहि धातूहि असङ्गहिता।

५०५. अनारम्मणेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... चित्तसंसट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... उपादाधम्मेहि ये धम्मा... अनुपादिन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशायतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५०४. सालम्बनधर्मैः ये धर्माः ..... चित्तधर्मैः ये धर्माः .... चैतसिकधर्मैः ये धर्माः ..... चित्तसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः ... चित्तसंसृष्टधर्मैः ये धर्माः .... चित्तसंसृष्टसमुत्थानैः धर्मैः ये धर्माः ... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभूभिः धर्मैः ये धर्माः ... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरितवर्त्तिभिः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा एकेन स्कन्धेन एकादशायतनैः एकादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभि असङ्ग्रहीताः? चतुर्भिः स्कन्धैः एकेनायतनेन सप्तभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५०५. अनालम्बनधर्मैः ये धर्माः .... चित्तविप्रयुक्तैः धर्मैः ये धर्माः ... चित्तसंसृष्टैः धर्मैः ये धर्माः..... उपादानधर्मैः ये धर्माः .... अनुपादानधर्मैः ये धर्माः ..... उपादानधर्मैः ये धर्माः... अनुपादानधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां अष्टैभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५०४. जो धर्म सालम्बन धर्मों से.... चित्त धर्मों .... चैतसिक धर्मों .... चित्तसम्प्रयुक्त धर्मों .... चित्तसंसृष्ट धर्मों .... चित्तसंसृष्टसमुत्थान धर्मों .... चित्तसंसृष्टसमुत्थानसहभू धर्मों .... चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्ती धर्मों से विप्रयुक्त है.... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर एक स्कन्ध, ग्यारह आयतनों और ग्यारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? चार स्कन्धों, एक आयतन और सात धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५०५. जो धर्म अनालम्बन वाले धर्मों से....चित्तविप्रयुक्त धर्मों ....चित्तसंसृष्ट धर्मों .... उपादान धर्मों .... अनुपादिन्न धर्मों से विप्रयुक्त है.... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों आठ धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५०६. उपादिन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि तीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि पन्नरसहि धातूहि असङ्गहिता।

५०७. उपादानेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलेसिकेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव संकिलिट्ठेहि च धम्मेहि ये धम्मा... संकिलिट्ठेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसेहि चेव किलेससम्पयुत्तेहि च धम्मेहि ये धम्मा... किलेससम्पयुत्तेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

५०८. संकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... असंकिलिट्ठेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसविप्पयुत्तेहि धम्मेहि ये धम्मा... संकिलेसिकेहि चेव नो च किलेसेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसविप्पयुत्तेहि संकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता...

(सं.)- ५०६. उपादिन्नधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः..... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशयतनैः त्रिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः पञ्चदशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५०७. उपादानधर्मैः ये धर्माः ... क्लेशधर्मैः ये धर्माः ... संक्लिष्टधर्मैः ये धर्माः ... क्लेशसम्प्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः .... क्लेशैश्चैव संक्लेशिकैश्च धर्मैः ये धर्माः ... क्लेशैश्चैव संक्लिष्टैश्च धर्मैः ये धर्माः ... संक्लिष्टैश्चैव नश्च क्लेशैः धर्मैः ये धर्माः .... क्लेशैश्चैव क्लेशसम्प्रयुक्तैश्च धर्मैः ये धर्माः ..... क्लेशसम्प्रयुक्तैश्चैव नश्च क्लेशैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५०८. सांक्लेशिकधर्मैः ये धर्माः.... असंक्लिष्टधर्मैः ये धर्माः .... क्लेशविप्रयुक्तधर्मैः ये धर्माः .... संक्लेशिकैश्चैव नश्च क्लेशैः धर्मैः ये धर्माः .... क्लेशविप्रयुक्तैः सांक्लेशिकधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः....

(हिन्दी)- ५०६. जो धर्म उपादिन्न धर्मों से विप्रयुक्त है.... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और तीन धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और पंद्रह धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५०७. जो धर्म उपादान धर्मों से.... क्लेश धर्मों .... संक्लिष्ट धर्मों .... क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों .... क्लेश एवं सांक्लेशिक धर्मों से .... क्लेश एवं संक्लिष्ट धर्मों .... संक्लिष्ट एवं अक्लेभूत धर्मों.... क्लेश और क्लेशसम्प्रयुक्त धर्मों .... क्लेशसम्प्रयुक्त एवं अक्लेभूत धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५०८. जो धर्म सांक्लेशिक धर्मों से.... असंक्लिष्ट धर्मों .... क्लेशविप्रयुक्त धर्मों .... सांक्लेशिक एवं अक्लेशभूत धर्मों.... क्लेशविप्रयुक्त सांक्लेशिक धर्मों से विप्रयुक्त है ....

ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५०९. असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... किलेसविप्पयुत्तेहि असंकिलेसिकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

५१०. दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

५११. न दस्सनेन पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... न भावनाय पहातब्बेहि धम्मेहि ये धम्मा... न दस्सनेन पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि ये धम्मा... न भावनाय पहातब्बहेतुकेहि धम्मेहि

(सं.)- ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५०९. असांक्लेशिकधर्मैः ये धर्माः ..... क्लेशविप्रयुक्तैः असांक्लेशिकधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५१०. दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः ... भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः .... दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकधर्मैः ये धर्माः ..... भावनया प्रहातव्यहेतुकधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५११. न दर्शनेन प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः ... न भावनया प्रहातव्यैः धर्मैः ये धर्माः... न दर्शनेन प्रहातव्यहेतुकधर्मैः ये धर्माः ... न भावनया प्रहातव्यहेतुकैः धर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः...

(हिन्दी)- वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५०९. जो धर्म असांक्लेशिक धर्मों से.... क्लेशविप्रयुक्त असांक्लेशिक धर्मों विप्रयुक्त है .... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५१०. जो धर्म दर्शन से प्रहाण किये जाने योग्य धर्मों से.... भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य .... दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतुओं वाले धर्मों .... भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतु धर्म से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५११. जो धर्म न दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य धर्मों से.... न भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य .... न दर्शन के द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य हेतुओं वाले धर्मों .... न भावना के अभ्यास द्वारा प्रहाण किये

ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५१२. सवितक्केहि धम्मेहि ये धम्मा... सविचारेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि एकाय धातुया असङ्गहिता।

५१३. सप्पीतिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... पीतिसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा... सुखसहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

५१४. उपेक्खासहगतेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि तेरसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि पञ्चहि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५१२. सवितर्कधर्मैः ये धर्माः .... सविचारधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशयतनैः सप्तदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः एकेन धातुना असङ्ग्रहीताः।

५१३. सप्रीतिकधर्मैः ये धर्माः ... प्रीतिसहगतधर्मैः ये धर्माः .... सुखसहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः .... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशयतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५१४. उपेक्षासहगतधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः.... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशायतनैः त्रयोदशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः पञ्चभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- जाने योग्य हेतुओं वाले धर्मों विप्रयुक्त है.....वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातु से असंग्रहीत हैं।

५१२. जो धर्म सवितर्क धर्मों से.... सविचार धर्म से विप्रयुक्त है.....वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों में और सत्रह धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और एक धातु में असंग्रहीत हैं।

५१३. जो धर्म सप्रीति धर्मों से.... प्रीतिसहगत धर्मों .... सुखसहगत धर्मों विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों से, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं से असंग्रहीत हैं।

५१४. जो धर्म उपेक्षासहगत धर्मों से विप्रयुक्त है.... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों में, बारह आयतनों और तेरह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? न किन्ही

५१५. कामावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... परियापन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... सउत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

५१६. न कामावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अपरियापन्नेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनुत्तरेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि अट्ठहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि दसहि धातूहि असङ्गहिता।

५१७. रूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अरूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... निय्यानिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... नियतेहि धम्मेहि ये धम्मा ... सरणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता... ते धम्मा असङ्खतं खन्धतो ठपेत्वा पञ्चहि खन्धेहि द्वादसहायतनेहि अट्ठारसहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? न केहिचि खन्धेहि न केहिचि आयतनेहि न काहिचि धातूहि असङ्गहिता।

(सं.)- ५१५. कामावचरधर्मैः ये धर्माः ..... पर्यापन्नधर्मैः ये धर्माः ..... सोत्तरधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः ... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्यां द्वाभ्याम् धातुभ्यां सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५१६. न कामाचवरधर्मैः ये धर्माः .... अपर्यापन्नधर्मैः ये धर्माः ... अनुत्तरधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः चतुर्भिः स्कन्धैः द्वाभ्याम् आयतनाभ्याम् अष्टभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः दशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

५१७. रूपावचरधर्मैः ये धर्माः ..... अरूपावरधर्मैः ये धर्माः ... निर्याणिकधर्मैः ये धर्माः ..... नियतधर्मैः ये धर्माः ..... शरणधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः... ते धर्माः असंस्कृतं स्कन्धतः हित्वा पञ्चभिः स्कन्धैः द्वादशभिः आयतनैः अष्टादशभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः। कतिभिः असङ्ग्रहीताः? न कैश्चित् स्कन्धैः न कैश्चित् आयतनैः न कैश्चित् धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

(हिन्दी)- स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और पाँच धातु से असंग्रहीत हैं।

५१५. जो धर्म कामावचर धर्मों से.... पर्यापन्न धर्मों .... सउत्तर धर्मों विप्रयुक्त है.....वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों से असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध से, दस आयतनों और सोलह धातु से असंग्रहीत हैं।

५१६. जो धर्म न कामावचर धर्मों से.... अपर्यापन्न धर्मों .... अनुत्तर धर्मों से विप्रयुक्त है..... वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और आठ धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और दस धातु में असंग्रहीत हैं।

५१७. जो धर्म रूपावचर धर्मों से.... अरूपावचर धर्मों .... निर्यानीक धर्मों .... नियता धर्मों .... सरणा धर्मों विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर पाँच स्कन्धों, बारह आयतनों और अठारह धातुओं से संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? न किन्ही स्कन्धों, न किन्ही आयतनों और न किन्ही धातुओं में असंग्रहीत हैं।

५१८. न रूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... न अरूपावचरेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनिय्यानिकेहि धम्मेहि ये धम्मा... अनियतेहि धम्मेहि ये धम्मा... अरणेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता, ते धम्मा कतिहि खन्धेहि कतिहायतनेहि कतिहि धातूहि सङ्गहिता? ते धम्मा चतूहि खन्धेहि द्वीहायतनेहि द्वीहि धातूहि सङ्गहिता। कतिहि असङ्गहिता? एकेन खन्धेन दसहायतनेहि सोळसहि धातूहि असङ्गहिता।

धम्मायतनं धम्मधातु, अथ जीवितं नामरूपं।
सळायतनं जातिजरामतं, द्वे च तिके न लब्भरे॥
पठमन्तरे सत्त च, गोच्छके दस अपरन्ते।
चुद्दस छ च मत्थके, इच्चेते सत्तचत्तालीस धम्मा।
समुच्छेदे न लब्भन्ति, मोघपुच्छकेन चाति॥

विप्पयुत्तेनसङ्गहितासङ्गहितपदनिद्देसो चुद्दसमो।

धातुकथापकरणं निट्ठितं।

(सं.)- ५१८. न रूपावचरधर्मैः ये धर्माः ..... न अरूपावचरधर्मैः ये धर्माः ..... अनिर्यानिकधर्मैः ये धर्माः ... अनियतधर्मैः ये धर्माः .....अरणधर्मैः ये धर्माः विप्रयुक्ताः, ते धर्माः कतिभिः स्कन्धैः कतिभिः आयतनैः कतिभिः धातुभिः सङ्ग्रहीताः? एकेन स्कन्धेन दशभिः आयतनैः षोडशभिः धातुभिः असङ्ग्रहीताः।

धर्मायतनं धर्मधातु, अथ जीवितं नामरूपम्।
षडायतनं जातिजरामृतम्, द्वौ च त्रीके न लभ्यते।।
प्रथमान्तरे सप्त च, गुच्छके दश अपरान्ते।
चतुर्दश षड् च मस्तके, इत्येते सप्तचत्वारिंशति धर्माः।
समुच्छेदे न लभ्यन्ते, मोघपृच्छकेन चेति।।

विप्रयुक्तेन सङ्ग्रहीताः सङ्ग्रहीत पदनिर्देशः चतुर्दशः।

धातुकथाप्रकरणं निष्टितम्।

(हिन्दी)- ५१८. जो धर्म न रूपावचर धर्मों से.... न अरूपावचर धर्मों .... अनिर्यानीक धर्मों .... अनियता धर्मों.... अरणा धर्मों से विप्रयुक्त है .... वे धर्म असंस्कृत निर्वाण को स्कन्ध के रूप में छोड़कर कितने स्कन्धों में, कितने आयतनों और कितने धातुओं में संग्रहीत हैं? वे धर्म चार स्कन्धों, दो आयतनों और दो धातुओं में संग्रहीत हैं। कितनों में असंग्रहीत हैं? एक स्कन्ध, दस आयतनों और सोलह धातु में असंग्रहीत हैं।

धर्मायतन, धर्मधातु, जीवित इन्द्रिय नामरूप।
षड़ायतन, जाति, जरा और मरण, दो त्रिक मातृकाएँ उपलब्ध नहीं हैं।।
प्रथम क्षुद्र अन्तराल में सात धर्म, पुनः १० गुच्छक।
फिर १४ अन्तर्वर्ती मातृकाएँ, ६ अन्तिम द्विक मातृकाएँ, ये ४७ धर्म।
मोघपुच्छक नामक अध्याय के साथ इस अध्याय में उपलब्ध नहीं हैं।।

****

Filename:	Dhatuk-13- 9 2019 -Carrection
Directory:	C:\Users\user\Documents
Template:	C:\Users\user\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	Hk %
Subject:	
Author:	User
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	9/7/2019 12:59:00 PM
Change Number:	127
Last Saved On:	9/18/2019 11:48:00 AM
Last Saved By:	user
Total Editing Time:	856 Minutes
Last Printed On:	9/18/2019 11:54:00 AM

As of Last Complete Printing

Number of Pages:	170
Number of Words:	66,404 (approx.)
Number of Characters:	378,505 (approx.)